रामेश्वर दयाल दुबे कृत

# चित्रकूट एक अध्ययन

# GUIDE To CHITRAKOOT

लेखिका
कु० मधु दीक्षित
एम. ए.

हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ–२

रामेश्वर दयाल दुबे कृत

# चित्रकूट एक अध्ययन

(व्याख्यात्मक एवं प्रश्नोत्तर रूप में)

लेखिका
कु० मधु दीक्षित
एम०ए०

प्रकाशक
हिन्दी साहित्य भंडार
55, चौपटियाँ रोड
लखनऊ-3

मूल्य Rs. 5.00

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य भण्डार
55, चौपटियाँ रोड,
लखनऊ—3

संस्करण : 1983

मुद्रक : बन्धु प्रिंटिंग प्रेस
चौपटियाँ
लखनऊ-3

CHITRAKOOT : EK ADHYAYAN

# विषय - सूची


प्रणाम 5

प्रथम सर्ग 6

द्वितीय सर्ग 17

तृतीय सर्ग 34

चतुर्थ सर्ग 44

पंचम सर्ग 65

प्रश्नोत्तर भाग 75

# प्रश्न

1–श्री रामेश्वर दयाल दुबे जी का संक्षिप्त परिचय देते हुये उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिये । 75

2–चित्रकूट के कथानक पर संक्षेप में प्रकाश डालिये । 78

3–सिद्ध कीजिये कि चित्रकूट एक सफल खण्ड काव्य है । 82

अथवा

काव्य कला की दृष्टि से चित्रकूट की युक्तियुक्त समीक्षा कीजिये ।

अथवा

चित्रकूट की रचना शैली को स्पष्ट करते हुए बताइये कि यह खड काव्य के लिये कहां तक उपयुक्त है ।

4–'चित्रकूट' के नामकरण की सार्थकता को सिद्ध कीजिये । 84

5–चित्रकूट की कथावस्तु की आलोचना पर संक्षेप में प्रकाश डालिए । 87

6–चित्रकूट के आधार पर राम का चरित्र चित्रण कीजिए । 90

7–चित्रकूट के आधार पर लक्ष्मण का चरित्र चित्रण कीजिए । 93

8–सीता का चरित्र चित्रण कीजिए । 95

9–चित्रकूट के प्रकृति चित्रण पर प्रकाश डालिए । 97

10–सिद्ध कीजिए कि चित्रकूट में आधुनिकता का पर्याप्त निदर्शन हुआ है । 100

11–चित्रकूट की भाषा शैली पर एक निबंध लिखिए । 102

★

# चित्रकूट की सरल व्याख्या

## प्रणाम

(1) रामचरण रज ··· ··· ··· ··· सहित प्रणाम।

शब्दार्थ—धरा–Earth। प्रकृति–Nature। जहाँ–Where। सुता–Dughter। कवि–Poet।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक "चित्रकूट" के 'प्रणाम' नामक शीर्षक से लिया गया है। इसके कवि श्री रामेश्वर दयाल दुबे जी हैं।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि जिस जगह की धरती भगवान राम की चरण धूल को स्पर्श करके धन्य हो गयी है और जहाँ पर जनक की पुत्री सीता को प्रकृति की सुन्दर गोदी मिली है। जहाँ पर लक्ष्मण का क्रोध भड़क उठा था जो बाद में संकुचित हो गया था जिससे वह बहुत दयालु भी हो गये थे। जहाँ पर शुद्ध-चरित्र का स्नेह-भाव पर्वत शिखर का चुम्बन करने के लिये बच्चे की भाँति मचल उठा था और जहाँ पर आज भी सुस्मृतियों के मुख से भगवान राम ही नाम मुखरित होता है ऐसी सुन्दर चित्रकूट की भूमि को कवि श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता है।

(2) जहाँ लगा ··· ··· ··· ··· सहित प्रणाम।

शब्दार्थ—तट–Bank। राज्य–Kingdom। गेंद–Ball। करों–Hands। रोई–Wept। सीमा–Limit। स्वयं–Sef। कवि–Poet।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि जहाँ मंदाकिनी के तट पर मृदु ममत्व का मेला लगा था, जहाँ पर राज्य को गेंद बनाकर हाथों से खेला गया था, जहाँ पर कैकेयी ग्लानि से भर कर मन ही मन रोई थी जहाँ पर भरत के भ्रात-प्रेम की कोई सीमा नहीं रह गयी थी। जहाँ पर भक्ति के कारण तुलसीदास द्वारा घिसे चन्दन को श्रीराम स्वयं तिलक लगाते हैं। चित्रकूट की ऐसी पवित्र भूमि को कवि श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता है।

## प्रथम-सर्ग

(1) मिला कौन ··· ··· ··· ··· लपक रहे हैं।

शब्दार्थ—धरा–Earth। सुमन–Flower। कलियाँ–Buds। वायु–Air। देख रहे हैं–Looking। क्यों–Why।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि पृथ्वी को आज ऐसा कौन सा सन्देशा मिल गया है जिसके कारण उसका कण-कण पुलकित हो उठा है। अर्थात चारों ओर खुशियाली छा गयी है। सारे वन में हरियाली छायी हुई है जिसको देखने से ऐसा लगता है जैसे वन हँस रहा हो। फूल खिलने लगे हैं और कलियाँ भी खिलने लगी हैं। पक्षी गण उत्साहित होकर चहचहाने लगे हैं। पशुओं की गति चंचल हो गयी है। वायु इस प्रकार से चल रही है जैसे वह बावरी हो गयी हो और अपनी चाल को भूल गयी हो। वृक्षों के शिखर बड़े उतावलेपन से किसको उचक-उचक कर देख रहे हैं। बन्दर भी उत्सुक होकर वृक्षों की शाखाओं पर क्यों लपक रहे हैं ?

(2) मन्दाकिनी की ··· ··· ··· ··· क्यों चलदल ?

शब्दार्थ—क्यों–Why। सफरियाँ–Fishes। शिखर–Top। बाट जोहते–To wait। वारिदों–Clouds।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि मन्दाकिनी की चंचल लहरें क्यों अपना शृंगार कर रही हैं। जल जन्तु भी विशेष वाचाल हो उठे हैं। मछलियाँ क्यों उछल रही हैं। कामदगिरि के शिखर अपनी दृष्टि को केन्द्रित करके और अपनी सुध-बुध को खोकर किसकी राह देख रहे हैं ? पर्वतों के शिखरों पर बैठे हुए बादलों में यह कैसी हलचल हो रही है ? तने से रहित पौधे क्यों सिहर रहे हैं ? और सारे वृक्ष क्यों गतिमान हो रहे हैं ?

(3) यह उमंग ··· ··· ··· ··· निज मुख खोला।

शब्दार्थ—क्यों–Why। प्रकृति–Nature। स्वागत–Welcome। कीर–Parrot। उत्सव–Function। ऊँचे–High। तरू–Tree। मयूर–Peacock।

व्याख्या– प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि प्रकृति के कण-कण पर यह उमंग और उल्लास क्यों छाया हुआ है ? प्रकृति रूपी नायिका ने किसके स्वागत में यह सजावट की है ? वायु किसी चंचल बालक की तरह अपनी सुगन्ध को इधर-उधर बाँटता घूम रहा है। चातक, तोता और मोर इतनी सुन्दर ध्वनि कर रहे हैं जिसको सुनकर ऐसा लगता है जैसे कोई उत्सव हो। ऊँचे वृक्ष पर बैठा हुआ मोर आकाश में दूर से आते हुए काले बादलों को देख कर के अपने मुँह से कुहा-कुहा करने लगा है।

(4) दूर बहुत ही ··· ··· ··· ··· जल की मात्रा।

शब्दार्थ—ती–Three। दायें–Right। बायें–Left। पीछे–Back। जन–People। समूह–Group।

प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि बहुत दूर पर तीन आकृतियाँ दिखायी पड़ रही हैं जहाँ की पगडंडियाँ मानों उनके चरणों के निशानों की भीख माँग रही हैं। उन तीनों के दायें-बायें ओर पीछे की ओर बहुत सारे आदमी चले आ रहे हैं जिनको देखने से ऐसा लगता है मानों वह किसी आकर्षण शक्ति से खिंचे चले आ रहे हों। वह सब रस्सी के बन्धन से रहित हैं। फिर भी अपने को आकर्षक बन्धन में बँधा हुआ पाते हैं। यह सारा जन समूह एक शोभा यात्रा की भाँति आगे बढ़ा चला आ रहा है। और उसकी प्यासी नजरें अश्रु जल को पाती चलती हैं।

(5) दिन है ··· ··· ··· ···. शोभा बाँकी।

शब्दार्थ—दिन–Day। भी–Also। सृष्टि–World। धरा–Earth। छू–Touch। जीवन–Life। तरू–Tree।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि दिन का समय है फिर भी बहुत तेज प्रकाशमय आभा आगे बढ़ती चली आ रही है। जिससे यह सृष्टि किसी दिव्य आलोक किरण की भाँति अपूर्व दिखायी पड़ती है इन अतिथियों के पवित्र चरणों को छू कर चित्रकूट की धरती धन्य हो गयी है। और उसके कण-कण में खुशी समा गयी है। यहाँ की घास ने

श्री श्री रामचन्द्र जी के चरणों को पाकर अपने जीवन को धन्य माना है। पास में खड़े हुए पेड़ों के झुरमुट इस दिव्य झाँकी को देख कर आश्चर्य चकित हो गये हैं। ऐसी सुन्दर अनोखी शोभा किसी ने कभी नहीं देखी थी।

(6) आज दिशाओं ··· ··· ··· ··· जग में वितरित।

शब्दार्थ—जैसे–As। आज -Today। सुमन–Flower। दीप–Lamp। प्रकाश–Light। जग–World।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि आज दिशाओं को भी जैसे कोई चिर वरदान मिल गया है। जिससे उसकी मनोकामना को पूरा करने वाला कोई सुगन्धित फूल खिल गया है। उस फूल की सुगन्ध को सुरभि दूती बन कर दूर-दूर तक पहुँचा रही है। दिव्य दीपक की किरण मालायें उसके पवित्र प्रकाश को फैला रही है। इस कीर्ति की कहानी भला कहाँ पर मुखरित नहीं होती है। आज विश्व में वितरित इस सन्देश को चित्रकूट ने भी पाया है।

(7) रघुकुल तिलक ··· ··· ··· ··· भेंटेगी आकार।

शब्दार्थ—तट—Bank। भाग्य—Luck। धरा—Earth। आज–Today। जब–When। पुण्य–Virtue।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि रघुकुल के तिलक राजा दशरथ के पुत्र रामचन्द्र जी अपनी पत्नी सीता के साथ आ रहे हैं। उनका प्रिय निवास स्थान मंदाकिनी के तट पर ही है। उनके आने से चित्रकूट के भाग्य उदय हो गये हैं और पृथ्वी का पुण्य जाग गया है। राम के आगमन से आज कामदगिरि को मुँह माँगा वरदान मिल जायेगा। राम की चरण रज को पाकर यहाँ की प्रत्येक शिला तीर्थ बन जायेगी। और जब सीता यहाँ पर आकर भेटेंगी तब समस्त प्रकृति खुशी से भर उठेगी।

(8) जब सौमित्र ··· ··· ··· ··· दृगों में अंकित!

शब्दार्थ—जब–When। यहाँ–Here। भय—Afraid। स्वयं–Self। चरण–Leg। दृगों–Eyes।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि जब यहाँ पर लक्ष्मण के धनुष की डोरी टंकरित होगी। तब भय, विषाद और व्याकुलता ये सब स्वयं दुख के भोगी बन जायेंगे। लोगों का उल्लास उमड़-उमड़ कर यहाँ के कण-कण पर छा जायेगा। और चित्रकूट के चरणों का स्पर्श करने के लिए स्वयं स्वर्ग भी इस पृथ्वी पर उतर आयेगा। यह सन्देश पाते ही वहाँ की जनता खुशी से भर उठी और उनसे मिलने के लिये अधीर हो उठी। देखते ही देखते थोड़ी देर में वहाँ की सारी जनता एकत्र हो गयी। सबकी आँखों में खुशी भरी हुई थी। अर्थात सभी बड़े आनन्दित थे।

(9) बाल-मंडली ··· ··· ··· ··· साथ पधारे।

शब्दार्थ—कौन–Who। शीश–Head। कितने–How। साधु–Saint। नदी–River। साथ–With।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि बालकों के समूह की खुशी उनकी उछल कूद के द्वारा प्रकट होने लगी। कौन कहाँ से आया है यह जानने की इच्छा सबकी आँखों में दिखायी पड़ रही है। वृद्ध लोगों ने अपने सिर को ऊपर उठा कर कहा कि यह किसका स्वागत-सत्कार हो रहा है? जो स्त्रियाँ बहुत भोली और अनजानी थी वह अपने अंचल को पकड़ कर खड़ी थीं। न जाने कितने साधु और ऋषि मुनि नदी के किनारे आ गये थे अत्रि मुनि भी अपनी पत्नी अनुसूया को साथ लेकर वहाँ पर आये थे।

(10) कहा किसी ने ··· ··· ··· ··· शैल-उपल ही ?

शब्दार्थ—स्वागत—Welcome। कैसे—How। घर—Home। पाहुन–Guest। पुत्र–Son। निर्धन–Poor।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि किसी ने कहा—हम दरिद्र हैं इसलिये अतिथि का स्वागत कैसे हो सकेगा? भला कभी किसी निर्धन व्यक्ति के घर में भी ऐसे मेहमान आये होंगे? कहाँ चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के पुत्र राम और कहाँ निर्धन और दरिद्र? कहाँ वह श्रेष्ठ नागरिक और कहाँ हम अर्ध नग्न पर्वत वासी मनुष्य? यहाँ पर तो केवल कन्द-मूल व फल-फूल हैं तथा नदी का पानी है। यहाँ राजा के योग्य बैठने

का आसन क्या होगा ? यह बात पर्वतों के पत्थर तुम्हीं बताओ ! क्या उनके बैठने का आसन ये पर्वत के पत्थर ही होंगे ?

(11) भावुक बोले ... ... ... ... तोष का दानी।

शब्दार्थ—वृद्ध–Oldman। पुत्र–Son। वहाँ–There। किन्तु–But। केवल–Only। कहानी–Story।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि भावुक और भोले कोल किरातों की अटपटी वाणी को सुन कर एक वृद्ध ज्ञानी मुनि उनको सान्तवना देते हुए बोले कि जब श्री रामचन्द्र जी अयोध्या निवासी थे तब वो चक्रवर्ती राजा के पुत्र थे लेकिन अब वह श्री पुरुषोत्तम राम केवल वनवासी ही रह गये हैं। राम का शील और उनकी सज्जनता उनकी कीर्ति-कहानी बन कर प्रत्येक मनुष्य को मुग्ध कर चुकी है। अब वह सब को प्रसन्नता व सन्तोष प्रदान कर रही है।

(12) स्वागतार्थ चाहिए ... ... ... ... निखिल निपन्ता।

शब्दार्थ—स्वागतार्थ—Forwelcome। सुमन—Flower। उर—Heart। क्या–What। यदि–If। प्रधान–Chief। चिन्ता–Worry।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि यह कौन कहता है कि उनके स्वागत के लिए बहुत कुछ होना चाहिए। स्नेह से पूर्ण एक साधारण फूल भी हृदय के प्रेमभाव को व्यक्त कर सकता है। कौन क्या देता है ? यह बात बिल्कुल बेकार है क्योंकि सच्चा दाता तो भगवान है वही सब को सब कुछ देता है। यदि मन रूपी केन्द्र में प्रेम है तो वह स्नेह की अनन्त परिधि को भी स्पर्श कर लेता है। संसार में भाव ही प्रधान है। अभाव की चिन्ता करना व्यर्थ है क्योंकि विश्व का संचालक ईश्वर सबके मन को जान लेता है।

(13) जो कुछ भी ... ... ... ... अवधि सा।

शब्दार्थ–कुछ–Some। भी–Also। अब–Now। अतिथि–Guest। समूह–Group। उदधि–Sea।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि हम जो कुछ भी अर्पण कर सकें, हमें उसी में सन्तोष करना चाहिए। और अतिथि के चरणों की पवित्र धूल को पाकर अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए। अब हम देर क्यों कर रहे हैं। अब उनको लेने के लिए हमें आगे बढ़ना चाहिए। हम अतिथि गणों के पवित्र चरणों में झुक कर प्रणाम करेंगे। इसके बाद सारा जन-समुदाय समुद्र की भाँति खुशी से हिलोरें लेता हुआ आगे बढ़ने लगा। राम के लिए हर क्षण लोगों को विरह की जैसा लग रहा था। अर्थात सारा जनसमुदाय राम से मिलने के लिए बहुत व्याकुल हो रहा था।

(14) अनति दूर ··· ··· ··· ··· भाव दिखाया।

शब्दार्थ–पीछे–Back। दोनों–Both। सभी–All। कहाँ–Where। सविनय–With Respect।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि राम अब बहुत पास आ गये थे उनके पीछे जनक की पुत्री सीता जी थीं और उन दोनों के पीछे धीर-वीर रक्षक के रूप में लक्ष्मण जी थे। इन तीनों की सुन्दर मूर्ति रूपी झाँकी को देख कर सब लोग आश्चर्यचकिर रह गये और सोचने लगे कि इस त्रिलोक में ऐसी सुन्दर शोभा भला कहाँ देखने को मिलेगी? राम ने मुनियों के सामने सिर झुकाकर सविनय प्रणाम किया और साधु ऋषियों के प्रति भी अपना श्रद्धा भाव प्रकट किया। अर्थात् साधु ऋषियों को भी सम्मान दिया।

(15) अत्रि महामुनि··············मुँह माँगा।

शब्दार्थ–जब–when। बाहों में–in arms। काया–body। वृद्ध–old। सभी–all।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि जब राम ने महामुनि अत्रि की पद रज को अपने सिर पर लगाया तब अत्रि मुनि ने उनको स्नेह के आलिंगन में बाँध लिया। सीता ने झुक कर माँ अनुसूया को प्रणाम किया तो अनुसुया ने सीता को अपनी गोद में खींच लिया। जिससे उनके

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.



भाव विभोर नेत्रों ने उन्हें स्नेह रूपी जल से सींच दिया। तब लक्ष्मण ने प्रणाम किया तब सबका स्नेह जाग्रत हो उठा और सब लोग बहुत आनन्दित हो उठे। आज सबको ऐसा मालूम पड़ता था जैसे उनको आसानी से मुँह माँगा फल मिल गया हो।

(16) कोल किरातों..............सुधा की प्याली।

शब्दार्थ—दोनों–both। क्या–what। कितने–how। सब–all।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि राम ने आगे बढ़ कर कोल किरातों से भी प्रसन्नतापूर्वक आलिंगन किया। इस समय ऐसा लगता था जैसे ममता ने करुणा को अपने दोनों हाथों में समेट लिया हो। यह देख कर वहाँ की जनता न मालूम कितनी देर तक अपने अहंकार और अपनी सुध-बुध को भूल कर खड़ी रही। उस समय पता नहीं किन-किन भावों में उसकी गति-मति झूलने लगी थी। इस अनुपम शोभा को देख कर वहाँ के लोग ठगे से खड़े रह गये और अपनी सुध-बुध को भूल कर इस रूप सुधा रूपी प्याली को पीते रह गये अर्थात् वह इस दृश्य को देखने में इतना तल्लीन हो गए कि उन्हें अपने होश हवास का भी ज्ञान नहीं रह गया।

(17) मृदुल चरण............दर्शन पाले।

शब्दार्थ—मृदुल–saft। ज्योती–light। कमल–lotus। वक्ष–chest। भुजा–arm। धनुष–bow। ग्रीवा–neck। उदधि–sea। अधरों–lips। नयन–eye।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि सीता जी के पैर बड़े कोमल हैं। उनके नखों की ज्योति अनुपम कान्तिमान एवं भय को दूर करने वाली है। उसे देखने से ऐसा लगता है जैसे कमल के झुके हुए अग्र भाग पर जल-कण के मोती हों। उनके अधोवस्त्र से उनका घुटना शोभायमान हो रहा है। उनका कटि-पट बहुत कोमल एवं सुन्दर है उनके पेट पर नाभि के आस-पास तीन वल पड़ जाते हैं जिससे उनके वक्षस्थल की मांसपेशियाँ दिखाई पड़ने लगती हैं। जो देखने में बहुत अच्छी लगती हैं।

लाल कमल को साधने वाली हाथी के बच्चे की सूंड़ जैसी राम की भुजाएँ देखने में बड़ी मनोहर लगती हैं। उनके बायें कन्धे पर धनुष है और वह पीठ पर तीरों का तरकस बाँधे हुए हैं। उनकी गर्दन को देखने से ऐसा लगता है जैसे कोई शंख समुद्र में डूबा हुआ हो। उनके मुख पर वह सौन्दर्य है जिसको देख करके कभी कोई ऊबा नहीं है और न ऊबने का अनुभव ही कर सका है। उनके होठों पर मृदुल मुस्कान है और उनके नेत्रों में स्नेह रूपी अंजन लगा हुआ है क्योंकि उनके नेत्रों से हर क्षण स्नेह टपकता रहता है। उनके गाल कोमल हैं नासिका बड़ी सुन्दर है। उनका मस्तक बहुत विशाल एवं दोषरहित है। उनके सिर पर जटाओं का जूड़ा बँधा हुआ है जिसमें से काले घुंघराले बाल बहुत ही सुन्दर दिखाई पड़ते हैं। उस मनुष्य को बहुत भाग्यशाली समझना चाहिए जो उनके इस रूप का दर्शन कर ले।

(18) लखन राम की..........प्रेम में पगे।

शब्दार्थ—किन्तु–but । वीर–brave । जीवन–life । हाथों–hands । कोमल–soft । धरती–earth । घटना–event । अब–now । सभी–all ।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि लक्ष्मण की आकृति तो राम की जैसी ही है। लेकिन उनका वेष किसी वीर पुरुष के समान है। उनके जीवन का ताना-बाना दर्प तेज बना हुआ है। जनक की पुत्री श्री सीता जी की शील-समन्वित झाँकी बड़ी मनोरम दिखाई पड़ती है जिसको विधि ने स्वयं अपने ही हाथों से बनाया है। विधि के द्वारा बनाई हुई यह मूर्ति बड़ी मधुमय दिखाई पड़ती है। हरी-भरी लताएँ देखने में बहुत सुन्दर प्रतीत हो रही हैं। उन्हें देखने से ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह अपने अंचल में शोभा को बाँधे हुए हैं। उनके कन्धे पर गेरुए रंग के कपड़ों वाली लज्जा की गठरी रखी हुई है। जिसके भार से वह कुछ झुकी हुई सी है।

नववधू सीता जी के कोमल चरणों के स्पर्श से पृथ्वी सकुच सी रही थी और जनता यह सोच कर व्याकुल हो रही थी कि इस राजभोग के योग्य नारी को वनवास कैसे हो गया है ? राम के वनवास की घटना तो अयोध्या में हुई थी लेकिन इससे जंगल के भाग्य उदय हो गये। क्योंकि त्रिमूर्ति के दर्शनों को पाकर वनवासियों के सारे पाप मिट गये हैं। मुनियों का शुभ आशीष पाकर राम अब आगे चल दिये और उनके पीछे प्रेम से पूर्ण समस्त वनवासी चलने लगे।

(19) कुछ क्षण..............भ्रमरों का गुंजन।

शब्दार्थ—कुछ–some। फिर–again। तुम्हारे–your। पावन–virtue। कहानी–story। सुमन–flower। धरती–earth। अवधि–period। प्रकृति–nature। अधिकारी officer। यहाँ–hear।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि थोड़ी देर मौन रहने के बाद ज्ञानी अत्रि मुनि बोले, उनकी वाणी हर्ष-स्नेह एवं ममता रूपी मधु से भरी हुई थी। मुनि ने कहा हे राम ! तुम्हारे सुन्दर चरित्र की पवित्र कीर्ति कहानी फूल की सुगन्ध की भाँति पहले यहाँ आयी और हमने उसका स्वागत सत्कार किया। आज तुम्हारे दर्शन पाकर यह धरती धन्य हो गयी है। वह तुम्हारे शील शक्ति और सौन्दर्य की त्रिवेणी में स्नान कर रही है आप चित्रकूट की इस सुन्दर भूमि में ही अपना निवास बनाइये ! आपको जो वनवास मिला है उसका समय यहीं पर बिताइये। यहाँ पर मुनियों का सत्संग होता है और प्रकृति की छटा भी निराली है। यहाँ के भोले कोल-किरात आपकी सेवा के अधिकारी बनेंगे। चित्रकूट के कुंज सीता जी का मनोरंजन करेंगे। यहाँ के फूल सुगन्ध देंगे। और भौरों का गुंजार उनके मन को हर लेगा।

(20) मन्दाकिनी की..............सुमन खिलेगा।

शब्दार्थ—तट–bank। तुम्हें–to you। अतिथि–guest। ठौर–place। सुमन–flower।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि मंदाकिनी की चंचल लहरें ताली बजायेंगी और सन्ध्या की लाली रक्तिम होकर नाचेगी ! अर्थात लहरों की थपेड़ों के स्वर से ऐसा लगता है जैसे वह ताली बजा रही हो। और शाम की लालिमा को देखने से ऐसा लगता है जैसे वह नाच रही हो। इस प्रकार से शाम के समय नदी के किनारे का दृश्य बड़ा ही मनोरम दिखायी पड़ता है। हे राम ! हम तुम्हें कभी भी चित्रकूट से जाने नहीं देंगे। तुम्हारा जैसा अतिथि पाकर हम हमेशा अपने जीवन फल को प्राप्त करेंगे। यह सुन कर राम हँस पड़े और बोले—गुरूजनों की यह महत्ता होती है वे स्वजनों को मान देकर सुन्दर ममता की सत्ता दिखाते हैं। मैं तो यहाँ पर नहीं आया हूँ बल्कि चित्रकूट ही मुझे यहाँ पर खींच लाया है। ऋषि बाल्मीकि ने मुझको यही उचित स्थान बताया है। हम यहाँ पर जितने दिन भी रहेंगे। उतने दिन मुझे आप जैसे गुरूजनों का आशीर्वाद मिलता रहेगा जिससे मुझे बहुत लाभ होगा स्नेह रूपी वायु में हिलने-डुलने से मेरा जीवन रूपी पुष्प खिल जायेगा।

(21) मन्दाकिनी तट...............जैसी जहाँ अवस्था।

शब्दार्थ—पहुँच–reach। पावन–virtue। पथ–way। समस्या–problem। कहाँ–where। विश्राम–rest। रजनी–night। चिन्ता–worry। नदी–river।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि मन्दाकिनी के तट पर पहुँच कर जब राम ने अपनी दृष्टि चारों ओर दौड़ाई तब प्रकृति रूपी नायिका की विस्तृत शोभा बिजली की चमक की तरह सब ओर छा गयी। पत्थर की क्रीड़ा को देख कर सीता जी सिहर उठीं और मार्ग की कठिनाइयों तथा थकान को भूल गयीं। वैरागी लक्ष्मण के मन में अब केवल इतनी ही समस्या थी कि जब रात होगी तब राम कहाँ पर विश्राम करेंगे ? लक्ष्लण की चिन्ता को राम जान गये इसलिए राम ने धीरे से कहा—आज नदी के किनारे इसी शिला पर रात बितानी है। गुह निषाद सब हमारे साथ होंगे जिससे हमको सारे मनोवांछित साधन उपलब्ध हो

जायेगे। बड़े भाग्य से हमको यह प्रकृति का पालना मिला है। कल किसी सुन्दर स्थान की खोज करके कुटी की व्यवस्था की जायेगी और समय के अनुसार ही हमें अपने जीवन को ढालना होगा।

(22) विदा किया…………हृदय में छाये।

शब्दार्थ—प्रभु–god। कुछ–some। रंग—colour। अभिलाषा—wish। भाषा–language। दृग–eye।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि बड़े ही विनीत भाव से प्रणाम करके प्रभु राम ने मुनियों को विदा किया। इतने में ही कोल-किरात कन्द मूल फल लेकर आये थे जिनके स्वाद और रंग दोनों ही भिन्न थे। ये सब फल प्रकृति के दिये हुए शुद्ध सात्विक रस से पूर्ण और रूप रंग में भी बड़े अच्छे थे। सब की इच्छा थी कि प्रभु उनका दिया हुआ कुछ चखें। राम सब की इस प्रेम पूर्ण भाषा को आसानी से समझ गये थे। जंगली लोगों के प्रेम भाव ने उनको कन्द मूल से भी अधिक भावुक बना दिया। कोल-किरातों की ममता को देख कर उनके नेत्रों में जल भर आया अनेकों बार आग्रह करके वह उनको विदा कर पाये।

(23) जहाँ स्नेह…………काल की धारा।

शब्दार्थ—माता–mother। पहले–before। दृगों–eyes। निशा–night। हृदय–heart।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि जहाँ पर स्नेह की ही ओढ़न बिछावन होता है वहाँ पर पत्थर की शिला भी सेज बन जाती है। माता की ममता भरी गोद भला किसको अच्छी नहीं लगती है। रात में सोने से पहले तीनों को अयोध्या की याद आयी। पूज्य पिता और माताओं की दशा को सोच करके उनके नेत्रों में जल भर आया और उनकी परेशानिया उनकी आँखों में घूमने लगीं। लेकिन दयालु रात्रि ने नींद के द्वारा इन सब के मन का बोझ हल्का कर दिया अर्थात नींद ने इनके दुख को दूर कर दिया। किसी ने ठीक ही कहा है कि व्यथित हृदय को कोई न कोई शीतल सुखद सहारा कहीं न कहीं से अवश्य ही मिल जाता है।

# द्वितीय सर्ग

(1) मन्दाकिनि के............कभी चुगातीं।

शब्दार्थ—उटज–hut। सामने–front। बीच–between। पौधे–plants। फुलवारी–garden।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि मंदाकिनी की हरी भरी भूमि में बांस और फूस की एक झोपड़ी बनी हुई थी जो छोटी होते हुए भी सुन्दर दिखायी पड़ रही थी। उसके दायें बायें और सामने तीनों ओर विशाल आँगन फैला हुआ था। और उसके पीछे की ओर बड़े-बड़े पेड़ रक्षक की भाँति खड़े हुए थे। आँगन के बीच में विभिन्न प्रकारों की क्यारियाँ बनी हुई थीं। जिसमें सीता ने पौधे लगा कर उसे हरी भरी फुलवाली का रूप दे दिया था। यहाँ से थोड़ी दूर पर एक शिला पड़ी हुई है जो चबूतरे की भाँति प्रतीत होती है वहीं पर राम आने वाले मुनियों का स्वागत करते हैं। वहाँ पर अक्सर नीति धर्म और पाप पुण्य की चर्चा होती थी और ज्ञान भक्ति के अतिरिक्त उनका बुद्धि कौशल ही अधिक प्रदर्शित होता था। इसी शिला पर बैठ कर जनक की पुत्री सीता जी अपना मन बहलाती थीं और तोते व कबूतरों को स्नेह पूर्वक दाना चुगाती थीं।

(2) एक दिवस............स्वास्थ्य का दानी।

शब्दार्थ—एक दिवस–one day। सप्ताह–week। दोनों–both। जब–when। सभी–all। जीवन–life। महत्ता–importance। समीर–wind। स्वास्थ्य–health।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि एक दिन जब श्रीरामचन्द्र जी मुनियों के आश्रम में चले गये तब सीता और लक्ष्मण ने साप्ताहिक स्वच्छता का कार्यक्रम प्रारम्भ किया। वह दोनों सप्ताह में एक दिन आँगन की सफाई करते थे और वहाँ से कूड़ा करकट तथा सूखे पत्तों को हटा देते थे। उनका कहना था कि जहाँ पर सफाई होती है वही पर पवित्रता रहती है। मैल के हटते ही जीवन में निर्मलता आ जाती है। जब वह

दोनों थक कर चूर हो जाते थे तब वह पसीने से भीगे हुए आकर शिला बैठ जाते थे उसी समय सुगन्धित वायु चलने लगती थी जिससे उन दोनों को बहुत सुख मिलता था लक्ष्मण ने कहा हे भाभी ! मैंने तो यहां पर आकर शारीरिक श्रम के महत्व को पहचाना है। पसीना ही मनुष्य को स्वास्थ्य देने वाला है।

(3) क्रियाशील लोहे..............कठिन सम्हलना।

शब्दार्थ—क्रियाशील—active। लोहा–iron। चमक—shine। यदि–if। धरणी–earth। घटना–event।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि लोहे को देखो। वह जब तक क्रियाशील रहता है तब तक निरन्तर चमकता रहता है। यदि उसे खाली छोड़ दिया जाय तो उसको जंग खा जाती है। इसी प्रकार से मनुष्य का मुख्य धर्म उसका कर्म है। कर्म से ही मनुष्य को शान्ति मिलती है। और कर्म के द्वारा ही मनुष्य इस अचेतन पृथ्वी को अपने परिश्रम से स्वर्ग बना देता है। यह सुन कर सीता जी हँस पड़ती हैं कि मैं जानती हूँ तुम कितने बड़े कर्मवीर हो। जो घर गृहस्थी को छोड़ कर यहां वैरागी बनने आये हो। राजभवन में क्या काम की कमी थी जिसको खोजने के लिए तुम इस जंगल में आये हो। बातों ही बातों में उनको राजभवन की घटना याद हो आती है। लेकिन जब लक्ष्मण को उस घटना की याद आती है तब उनका सम्हलना कठिन हो जाता है।

(4) निकल न पाया.............सुख सपने।

शब्दार्थ—क्रोध–angry। अवसर–chance। मात्र–only। कमल–lotus। सुमन–flower। कोई–any।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि उनका क्रोध अयोध्या में नहीं प्रकट हो पाया था वह उनके अन्दर ही समाया हुआ था जब भी कभी उनको मौका मिलता था तब वह चूकते नहीं थे और उनका क्रोध उबल पड़ता था। अतः लक्ष्मण ने कहा भाभी ! राजमहल की बातों को छोड़ो उनमें स्वार्थ के अतिरिक्त और क्या रखा है ? इस पर सीता ने

कहा–क्या कीचड़ में कमल नहीं खिलता है ! काँटों भरी डाली पर क्या फूल नहीं खिलते हैं ? दुनिया में कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जिसमें केवल दोष हो । बुरे मनुष्य के अन्दर भी कोई न कोई गुण अवश्य छिपा रहता है । दूसरों के सदगुणों को ही केवल देखना चाहिए और अपने अवगुणों को देखना चाहिए । तभी संसार में जीवन के सुख भरे सपने साकार हो सकते हैं ।

(5) भाभी तुम हो……………निर्जन वन ।

शब्दार्थ—तुम–you । इसीलिये–so । दंड–punishment । वन–forest । घर–pitcher । दृग–eye ।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में लक्ष्मण जी कहते हैं कि भाभी । तुम बहुत भली हो अतः दुनिया में तुमको सब भले ही दिखायी पड़ते हैं । और हर दिन दुष्ट लोग भले लोगों को ठगते हैं । राजभवन की लीला को तो तुम स्वयं अपनी आँखों से देख चुकी हो । जहाँ पर शक्तिशाली व्यक्ति भी विकारों के कारण कमजोर पड़ जाता है । तुम्हीं बताओ कि श्रीराम के द्वारा कौन सा अपराध हुआ था ? जिसके कारण आज तुम उनके साथ वन में यह दंड भुगत रही हो ? जब तुम कुश के आसन पर सोती हो तब मेरे हृदय में काँटे से चुभने लगते हैं । और घड़ा लेकर पानी भरने जाती हो तब मेरी आँखों में आँसू भर आते हैं । तुम राज भोग के योग्य हो । लेकिन तुमको कन्दमूल फल खाने को मिलते हैं । तुम राजभवन में रहने वाली हो । लेकिन तुमको इस निर्जन वन में रहना पड़ रहा है ।

(6) स्वयं जली…………… बनी हो जिसमें ?

शब्दार्थ—स्वयं–self । घर–house । नहीं–not । जगत–world । उपवन–garden । फूल–flower । माई–mother । सत्य–truth ।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में लक्ष्मण कहते हैं कि जिसने मेरे घर में आग लगायी है और भाइयों के स्नेह रूपी आँगन में बैर की खायी खोदी है वह स्वयं क्यों नहीं जल गयी । जिसे स्वयं राजमाता बनने का लालच हो गया और जिसने घर का प्रेम, स्नेह, ममता आदि के महत्व पर जरा

भी विचार नहीं किया। संसार में दुष्ट लोगों का ही हठ पूरा हो। भाभी। क्या यह ठीक होगा ? बगीचे में केवल काँटे ही रहें फूल न रहें, तो क्या यह उचित होगा ? फूल यदि इसी तरह से कष्टों को सहन करते रहेंगे तो हर जगह पर काँटों का ही लाभ होगा और फिर हर घर में कैकेयी जैसी माताएँ उत्पन्न हो जायेंगी। भाभी ! अब तुम्हीं बताओ कि कहाँ तक सत्य है कि घर में केवल एक ही व्यक्ति की स्वार्थपूर्ति का उद्देश्य लेकर काम किया जाय।

(7) सत्य वही है·················कितना ओछा।

शब्दार्थ—सत्य—truth। सदा—always। जगती—world। दुखी—sad। कब—when। जीवन—life। राज्य—kingdom। पहाड़—mountain।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में लक्ष्मण जी कहते हैं कि सत्य तो वह है जिससे सदैव सारे संसार का कल्याण हो। जिसके पालन करने से मनुष्य का शुभ हो और संसार का कल्याण हो, जिस काम से आज सारी अयोध्या दुखी है पिता व सारी माताएँ दुखी हैं, जिसके कारण मेरे प्रियजन और सारे नगरवासी दिन रात दुखी हो रहे हैं, जिसके कारण घर की स्त्रियाँ चौदह वर्षों तक दुख भोगेंगी। और राम के बिना पता नहीं कब पिता जी की आँखें बन्द हो जायें। वह सत्य नहीं होता है जो जीवन में ही आग लगा दे और अच्छे भले राज्य पर मुसीबत का पहाड़ गिरा दे। माता कैकेयी कितनी बुद्धिहीन है और उसकी जिद कितनी तुच्छ है।

(8) ओछेपन के·················लगी ठिठोली।

शब्दार्थ—कौन—who। नहीं—not। कैसे—how। स्वार्थ—selfish। मुझे—to me। सुन्दर—beautiful।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में लक्ष्मण जी कहते हैं कि नीचता का पोषण करने वाले वे वरदान किसका भला करेंगे ? उनसे लोगों की क्या भलाई होगी ? और पिता या माता को इससे क्या यश मिलेगा ? यदि थे

वरदान किसी का कल्याण नहीं करते, किसी को कीर्ति नहीं दिलाते। और यदि ये नीति पर भी आधारित नहीं हैं तथा न्याय के अनुकूल नहीं हैं तो फिर इन वरदानों को सत्य-धर्म के अनुरूप कैसे माना जाय ? माता कैकेयी के ऐसे वरदानों को स्वीकार करके पिता ने कौन सा अच्छा कार्य किया है ? इसमें केवल स्वार्थ की बातें ही भरी हुई हैं जो मेरे मन में माता कैकेयी के प्रति घृणा उत्पन्न करती हैं। राजमहल की वह बातें, वह घटनाएँ मेरे चित्त को चंचल कर देती हैं। लक्ष्मण को इस प्रकार से व्यथित देख कर सीता जी हँसने लगीं और उनका मन बहलाने के लिए उनसे हँसी मजाक करने लगीं।

(9) मैं समझी थी················पाता पानी।

शब्दार्थ—किन्तु—but। तुम—you। वर्तमान—present। भविष्य—future। सदा—always। धरती—earth। हमारी—our। दृग—eye।

व्याख्या— प्रस्तुत पद्यांश में सीता जी लक्ष्मण से कहती हैं कि मैं तो यह समझी थी कि तुम हमारे साथ चित्रकूट आये हुए हो। लेकिन तुम तो शायद अभी अयोध्या में ही अपना आसन लगाये हुए हो। अर्थात अभी तुम्हारा मन अयोध्या में ही लगा हुआ है। जो वर्तमान में अतीत की बातों को सोच कर जीता है और मन में दुखी रहता है भविष्य में उसके मनोरथ कभी भी पूरे नहीं होते हैं। तुमको हमेशा मँझली माता की करनी परेशान किये रहती है। लेकिन वहीं पर और दूसरी माताएँ भी हैं जिनसे यह पृथ्वी अपने को धन्य मान रही है। जहाँ पर मँझली माता हैं वहीं पर अपनी छोटी माता भी हैं। बड़ी माता तो वास्तव में सहनशीलता की प्रतिमा ही हैं। वहीं पर तुम्हारे वियोग में जलने वाली रानी (बहन उर्मिला) भी है। जिसकी आँखों से कभी भी आँसू नहीं सूख पाते होंगे।

(10) भाभी रुको················प्यारी नगरी।

शब्दार्थ—शाखामृग—monkey। क्यों—why। निष्ठुर—cruel। स्वयं—self। विषय—subject। पौधे—plants। गगरी—pitcher। उपवन—garden।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में लक्ष्मण जी कहते हैं—हे भाभी ! जाओ। उधर उस बन्दर के खेल को देखो। तो सीता जी कहती हैं मैं समझ गयी कि तुम बात को क्यों बदल रहे हो ? क्योंकि तुम्हें उर्मिला की याद सताती है। देवर ! तुम कितने निर्दयी हो जो स्वयं तो कभी उसको याद नहीं करते हो। और मैंने यदि भूल से भी उसका नाम ले लिया तो तुम मुझे रोकते हो। लेकिन मैं तो लाचार हूँ। मेरा कोई भी दिन और रात ऐसा नहीं बीतता है जिस दिन मैं उस बाल वियोगिनी बहन की याद करके रोती न होऊँ। अच्छा अब इस विषय को छोड़ो। क्योंकि यहाँ के विषय भी कुछ कम नहीं है। हमें भूतकाल को भूल कर वर्तमान काल के कामों को करना चाहिए। पौधे प्यासे हो गये हैं जो हमको बुला रहे हैं। इसलिए चलो गगरी उठाओ क्योंकि अब तो ये कुटिया और बगीचा ही अपनी प्यारी नगरी है।

(11) राम कभी··· ·· ··· ·· उत्तरदायी।

शब्दार्थ--विषय–subject। नवनीत–butter। जगती–world। वहाँ–there। किन्तु–but। औरों–others। इसीलिये—so। स्वतंत्रता–freedom।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि कभी-कभी श्रीराम मुनियों के आश्रम जाते थे और उनको विनीत भाव से प्रणाम करके स्नेह पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त करते थे। वहाँ पर मुनियों के साथ अनेक विषयों पर चर्चा होती थी तथा विषयों का गहराई से मंथन होता था। उस मंथन से ज्ञान रूपी अमृत निकलता था। जिससे सबका तन-मन बड़ा प्रफुल्लित हो जाता था। विधि का विधान शाश्वत है—इस विषय पर विस्तृत विवेचना होती थी और वह इस बात को मानते थे कि भाग्य से ही संसार का तिनका-तिनका अनुशासित होता है। प्रकृति के प्रशासन में ही खग मृग और जलचर सभी पलते हैं। इसीलिये वहाँ पर पाप-पुण्य का कोई प्रश्न नहीं उठता है। लेकिन मनुष्य ने प्रकृति के सम्मुख भी कुछ स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है इसीलिये वह दूसरों से आगे है। और दूसरों से अधिक

पाप-पुण्य का उत्तरदायी है।

(12) दुरुपयोग जब-जब..............सुख पाते।

शब्दार्थ—संस्कृति–culture । शक्ति–power । नीचे–down । जीवन–life । तत्व–element ।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि जब-जब मनुष्य अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग करता है तब-तब वह मानव संस्कृति में खराबी पैदा करने वाला कहा जाता है। जब वह प्रकृति द्वारा मिली हुई शक्ति का नियमपूर्वक सदुपयोग करता है तब पवित्र शुद्ध संस्कृति का रूप सुन्दर ढंग से प्रकट होता है। जब मनुष्य दुष्कृति को अपनाता है तब वह पशु से भी नीचे गिर जाता है अर्थात यह पशु से भी हीन हो जाता है और जब वह सत्कृति को अपनाता है तब वह देवताओं से भी ऊँचा उठ जाता है। मनुष्य का जीवन तभी सफल होता जब वह नीचे न गिरे। और अपनी सत्कार्यों रूपी बेलों को सदैव स्नेह रूपी जल से सींचता रहे। इसी प्रकार के सुन्दर विचार चर्चा में स्पष्ट होते थे जिससे ऋषि मुनियों के साथ राम को भी बहुत सुख प्राप्त होता था।

(13) कभी अनुज...............सौमित्र ठठोली !

शब्दार्थ—धरा–earth । एक दिन–one day । नभ–sky । दोनों–both ।

व्याख्या-प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि जब कभी श्रीराम लक्ष्मण और सीता के साथ वन में घूमने जाते थे तब वह उनको पृथ्वी पर उगी हुई जड़ी बूटियों की विशेषतायें बताते थे। वह उनको विभिन्न प्रकार के पेड़ों के विषय में बताते थे और आँवला, नारियल, खिरनी, इमली, कैथा, गूलर, जामुन, महुड़ी तथा बड़हल आदि की पहचान बताते थे। राम ने ऊँचे वृक्षों की पंक्ति को दिखा कर कहा–देखो ये वृक्ष ऊँचे होकर आकाश को छूने का प्रयत्न कर रहे हैं। ये वृक्ष कितने भोले हैं। शाल के बड़े-बड़े वृक्ष देखने में बहुत सुन्दर लगते हैं उन्हें देखने से ऐसा लगता है जैसे वह अपने हाथ ऊपर की ओर उठाये हुए हो। इन पर

लिपटी हुई बेलों को देखने से ऐसा लगता है जैसे उन्होंने इनका सुन्दर शृंगार किया है। तब सीता ने कहा और बेल एक दूसरे से परस्पर सुशोभित हो रहे हैं। तभी लक्ष्मण ने मजाक करते हुए कहा—भाभी अपनी ही बात कह रही हैं। अर्थात राम और सीता दोनों एक दूसरे से सुशोभित हो रहे हैं।

(14) सहमी सीता..................बह जाता।

शब्दार्थ—क्या—what। द्वितीय—second। तीसरा—third। दृग—eye। कपि—monkey। नित—daily।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि अचानक सीता डर गयी और बोली अरे, यह मैंने क्या कह दिया? देवर लक्ष्मण तो अकेले ही हैं जब स्त्री पुरुष की जोड़ी बिछुड़ जाती है तब वह भारी वियोग के कारण बहुत दुखी हो जाती है। सीता को इस प्रकार से चिन्तातुर देख करके राम ने बात बदली। और कहने लगे वह देखो बन्दर का भार न सह सकने के कारण केले की डाल झुक गयी है। दूसरे बन्दर ने उसकी पूंछ पकड़ कर खींचा। जिससे वह नीचे गिरने लगा। तीसरा बन्दर जो अब तक आँखें बन्द किये हुए बैठा था वह भी दौड़ पड़ा। खेल को प्रिय मानने वाले इन बन्दरों की क्रीड़ा भला किसको प्रसन्न नहीं करते हैं। यह क्रीड़ा हमको सिखाती है कि जीवन को हमेशा खेल ही समझो। प्रसन्नता जीवन का अमृत है और हास्य सदैव सबको सुख देने वाला है हँसी में बड़े से बड़ा दुख भी आसानी से समाप्त हो जाता है।

(15) रामानुज कहा................घूमें कक हैं।

शब्दार्थ—गन्ध—smell। विश्राम—rest। अभी—yet। फूलों—flowers डलिया—basket। चिन्ता—worry। तीव्र—fast। अब—now।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्याश में राम के भाई लक्ष्मण जी कहते हैं—भाभी! क्या तुमने कभी हेमपुष्प को देखा है। इसी को चम्पा कहते हैं ग्रन्थों में ऐसा लिखा हुआ है। इसका रूप रंग और गन्ध सब सती नारी के समान पवित्र हैं। वह मन को मोहने वाला होता है कोई भी दुष्ट

भौंरा कभी भी इसके पास नहीं आ पाता है। इसके पास में फरौंदी का कुंज है वहीं पर आप विश्राम करिये मैं अभी आता हूँ। मैं अभी यह डलिया जूही और चम्पा के फूलों से भर लाता हूँ। तब सीता ने कहा, देवर फूलों के प्रेमी हैं अतः उनको फलों की चिन्ता नहीं है लेकिन क्या मुझे यह बतलाना पड़ेगा कि पेट ही सारे शरीर को नियंत्रण में रखता है। इस पर लक्ष्मण ने हँस कर कहा कि हम इसकी चिन्ता क्यों करें। क्योंकि उसका भार तो अन्नपूर्ण नारी उठाती हैं। भाभी मैं समझ गया हूँ कि तुमको भूख लगी है। लेकिन तुमसे ज्यादा भूख तो मुझे लगी हुई है। भैया चलिये अब हम लौट चलें। अब हमें देर करना ठीक नहीं है। इस पर राम ने कहा अच्छा अब लौट चलो। आज इतना ही काफी है वैसे प्रकृति के आँगन में जितना भी घूमा जाये उतना ही कम है।

(16) एक किरातिन..............नीर बहा है।

शब्दार्थ—समीप–near। जाया–wife। दोनों–both। अनुज–brother। तुम्हारे–your।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि एक भोली भाली किरातिन की वधू एक दिन सीता के पास आयी और बातें करने के लालच से बैठ गयी। पहले वह मुस्करायी फिर हँस कर बोली। उसकी बोली बड़ी मीठी थी उसकी बोली को सुनकर ऐसा लगता था जैसे किसी ने कानों में मिसरी घोल दी हो। वह कहने लगी बिना तुम्हारे बताये हुए ही मैं जान गयी हूँ कि तुम किसकी पत्नी हो। जो दोनों में बड़े हैं और साँवले रंग के हैं तुम उन्हीं की पत्नी हो। सीता ने कहा तुम यह कैसे जान गयी ? तुम तो बड़ी चतुर हो। चलो हम तुम्हारे मुँह से कुछ सुन्दर प्रेम प्रसंग की बातें सुन लें। तब वनवासिन स्त्री कहने लगी कि मैं भी अपने पति की रानी हूँ। मैं जिस दृष्टि से उनको देखती हूँ वह मेरी पहचानी हुई है। मैं तुमसे एक बात पूंछती हूँ कि जो छोटे हैं वह तुम्हारे देवर हैं क्या इनका विवाह नहीं हुआ है ? या इनकी पत्नी घर पर है ? तुम स्वयं तो आयी हो लेकिन अपने साथ दयोरानी को क्यों नहीं लायी हो ? इतना

सुनते ही सीता जी की आँखों में आँसू आ गये। यह देख कर वह किरातिन वधू डर गयी और बोली मैंने तो तुमसे ऐसा कुछ भी नहीं कहा है। अरे, तुम्हारी आँखों से फिर ये आँसू क्यों बहने लगे हैं।

(17) अंचल से..............भूली हुई कहानी !

शब्दार्थ—स्वयं–self। यदि–if। कितना–how। किन्तु–but। कथा–story। सदा–always। सम्बन्ध–relation। स्वार्थ–selfish। केवल–only।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि सीता जी ने अपने आँचल से आँसू पोछे और अपने दुख को मन में ही सहन कर लिया फिर स्वयं लजाती हुई बोली थोड़ा रुक कर उन्होंने चकित किरातिन वधू से कहा कि यदि उर्मिला बहन यहाँ पर आ पाती मैं कितना खुश होती ? और सुख भी पाती। लेकिन जिद्दी देवर के सामने भला किसकी चल पाती है। अर्थात मेरा देवर जिद्दी है। वह किसी बात को नहीं मानता है। राजभवन की कहानी बड़ी करूण है जिसको छोड़ कर मैं यहाँ आयी हूँ। वहाँ पर हमेशा अधिकारों के लिए लड़ाई होती रहती है। जिस घर में मनुष्य से अधिक धन का महत्व हो, स्नेह के सारे सम्बन्ध नीचे हों और केवल सत्ता ही ऊँची हो, जहाँ पर केवल स्वार्थ है और मृदु ममता अनजानी है अर्थात ममता को कोई नहीं जानता है, जहाँ पर सहनशीलता क्षमा ये सब भूली हुई कहानी की भाँति हैं।

(18) जिस आँगन में..............यहाँ थिरकते।

शब्दार्थ—सपना–dream। घर–house। लोग–people। वन–forest। तरु–tree। सुमन–flower।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में सीता जी कहती हैं कि जिस घर के आँगन में अपनापन सपना बन गया हो। ऐसे घर में रहने से तो किसी अग्नि कुंड में तपना ही अच्छा होता है। यह सुन कर किरातिन सखी ने कहा–हाय, क्या राजभवन ऐसे ही होते हैं ? जब वहाँ पर इतनी घुटन होती है तब लोग वहाँ पर कैसे रहते होंगे ? उस राजभवन से तो अच्छा

यह वन ही है और हम वनवासी अच्छे हैं। अच्छा हुआ जो तुम यहाँ पर चली आयीं। यहाँ पर तुम्हें किसी भी प्रकार का दुख नहीं होगा। देखो यहाँ की बेले पेड़ों से कैसे लिपट रही हैं और वे पेड़ों के आलिंगन में कैसे सिमटी जा रही हैं। यहाँ के फूल बोलते नहीं है फिर भी ये देखो कितना हँस रहे हैं। और बादलों की गर्जन सुन कर ये मोर यहाँ पर कैसे नाच रहे हैं।

(19) शीतल विपिन................सुख लेकर।

शब्दार्थ—शीतल–cold। बयार—air। तन—body। धरती—earth। हृदय–heart। अब -now।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में किरातिन वधू कहती है कि यहाँ पर वायु ऐसे चलती है जैसे वह पंखा झलकर मेरे शरीर के पसीने को सुखा रही हो! मैं सच कहती हूँ कि मुझे यहाँ की धरती बहुत अच्छी लगती है जहाँ पर सगे सम्बन्धी ही स्वार्थवश दुख देते हों, जहाँ पर लोगों के मन में छल-कपट की भावना हो वहाँ पर किसी को सुख कैसे मिल सकता है? जहाँ पर हमको सरल पवित्र और त्यागपूर्ण प्रेम मिलता है वहीं पर हमारा मन प्रसन्न रहता है और वहीं पर मेरे लिये स्वर्ग होता है। मुझे क्षमा करना। तुम्हारी बातों को सुन कर अब मुझे तनिक भी राजभवन का मोह नहीं रह गया है। मेरे लिये तो अब यह वन ही अच्छा है जहाँ पर मुझे किसी प्रकार का कोई दुख नहीं है। अच्छा बहन! अब मै चलती हूँ। मैं फिर कभी आऊँगी। मैं जब भी तुमसे मिला करूँगी तभी मुझे बहुत सुख मिलेगा। यह कह करँ वह भोली-भाली युवती वहाँ से चली गयी। लेकिन जाते हुए भी वह सीता को अपने स्नेह की सुगन्ध दे गयी। जिसको याद करके सीता जी मन में प्रसन्न होती रहीं और सुख पाती रहीं।

(20) एक दिवस...............भाव दिखाती।

शब्दार्थ—एक दिवस–one day। तंडुल–rice। खेल–game। पीछे–back। मुख–face।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि एक दिन सीता नदी के किनारे की एक बड़ी शिला पर बैठ कर मछलियों को चावल खिला रही थीं तथा अपना मनोरंजन कर रही थीं। जब सीता जी की मुट्ठी से चावल गिरते थे तब पानी में उछल कूद मच जाती थी मछलियाँ चावल लेने के लिए उछलने कूदने लगती थीं। इस उछल कूद से पानी के छींटे उठते थे जनक की पुत्री सीता पानी की इस उछल कूद को बड़ी तल्लीनता के साथ देख रही थीं। उनको देखने से ऐसा लगता था जैसे उनका बच-पन वापस लौट आया हो। वह छोटी सी राजकुमारी है और यह स्थान मिथिला का आँगन है। पानी का यह खेल बहुत देर तक होता रहा। थोड़ी देर के बाद राम सीता के पीछे चुपचाप आकर खड़े हो गये। वह इस तरह से खड़े हुए जिससे उनकी परछाई भी न दिखने पाये। सीता खेल में मगन थी अत: पीछे न देख पायी। जब उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा तो उनको राम की मुस्कराती मूर्ति दिखायी पड़ी। राम को देख कर सीता के मुख पर लालिमा छा गयी। और वह लज्जा से भर गयीं।

(21) राम बिहँस..................अचल है।

शब्दार्थ—बिहँस–laugh। घन–cloud। सन्तोष–satisfaction। अब–now। मीठा–sweet। समीप–near। वन–forest। सरिता–river।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में राम हँस कर बोले जिनको देखने से ऐसा लगता था जैसे बादल अमृत बरसा रहा हो। कि मीनाक्षी ने इन मछलियों से खूब सम्बन्ध जोड़ा है। अब मुझे यह सन्तोष हो गया कि अब तुमको अकेलापन नहीं लगेगा और तुम्हारा मन नहीं ऊबेगा। तुम्हारा यह सुन्दर व्यापार आगे भी तुम्हारा साथ देगा। यह सुन कर सीता के मुख पर लालिमा छा गयी और सीता की पुतली नाच उठी। सीता ने कहा लुकने छिपने का खेल भी बड़ा अनोखा होता है। राम सीता के पास ही बहुत प्रेम से बैठ गये। राजभवन में रहने वाले भी वन में कितना सुख पाते हैं। राम ने कहा कि यहाँ पर चारों ओर हरियाली ही हरियाली

छायी हुई है। पृथ्वी पर नीचे की ओर नदी का कलकल हो रहा है और पीछे की ओर अचल पर्वत खड़ा हुआ है।

(22) हरे भरे..................बलि वह जाता।

शब्दार्थ– पादप–plants। कौन–who। कैसे–how। खेल रहे हैं–playing। दोनों–both। गगन–sky। धरती–earth। कबूतर–pigeon।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि यहां पर न जाने कितने हरे भरे पौधे लगे हुए हैं। जो बादलों रूपी माली के द्वारा सींचे गये हैं। भला इनके नीचे सुख से कौन नहीं बैठना चाहेगा। वह देखो झरना झर-झर की ध्वनि करता हुआ बह रहा है। उसे देखने से ऐसा लगता है जैसे वह अर्घ्य चढ़ाने जा रहा हो। वह मन्दाकिनी माँ की गोदी रूपी अँचल में छिप जाता है उधर देखो वह खरगोश के बच्चे कैसे खेल रहे हैं। और वह दोनों इस प्रेम रूपी प्रहारों को कैसे सहन कर रहे हैं उधर पेड़ों से कबूतरों का झुन्ड आकाश में उड़ता चला जा रहा है। उनको देखने से ऐसा लगता है जैसे पृथ्वी का हरा दुपट्टा आकाश में उड़ा चला जा रहा हो। कबूतर अपने गले को नीचे की ओर झुका करके अपने प्रेम को प्रकट कर रहा है। और प्राणों से प्यारी सुन्दर कपोती पर वह बार-बार बलिहारी जाता है।

(23) चातक चुप..................पड़े विताना।

शब्दार्थ—किन्तु–but। नया–new। चित्र–picture। प्रकृति–nature। चारु–beautiful। धरती–earth। इसीलिये–so। विपिन–forest।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि चातक चुप है लेकिन कोकिला कैसे बोल रही है इस हरियाली से भरे हुए आँगन में कोकिला की बोली जैसे मधुरस घोल रही है। अर्थात इस हरे भरे आँगन में कोकिला का स्वर कितना सुन्दर लग रहा है। यहाँ के प्रत्येक कुंज में नये-न [illegible] हुए हैं औहुर नई झाँकी बीनईहै। ऐसी सुन्दरता को

बार-बार देखने से भी जी नहीं भरता है। इस नदी के घुमाव को देखो कितना बल खाता हुआ बना हुआ है। जिसको देखने के लिये प्रकृति रूपी छटा बार-बार पीछे की ओर मुड़ जाती है। प्रकृति रूपी नायिका ने यहाँ की धरती कितने सुन्दर चित्रों से सजायी हुई है। यहाँ की शोभा बड़ी अनुपम है इसीलिये इस धरती का नाम चित्रकूट पड़ा है। सीता जी कहती है। बड़े ही भाग्य से हम यहाँ पर आ सके हैं। अगर जंगल में ही जीवन बिताना पड़े तो यहाँ पर भी बहुत से सुख मिल जायेंगे।

(24) चित्रकूट में आर्य················परिवेश सजातीं।

शब्दार्थ—समाज–society। फूल–flower। सम्बन्ध–relating। कैसे–how। उपहार–gift। जलाशय–tank।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि जब से श्रीराम चन्द्र जी ने चित्रकूट में अपना निवास स्थान बनाया है तब से कोल-किरातों का समाज उनका सुन्दर दास बन गया है। वह राम को रोज कन्द मूल-फल लाकर दे जाते थे और राम के साथ मधुर सम्बन्ध होने से अपने को सौभायशाली मानते थे। राम सोचते थे कि हम उनके उपकार का बदला कैसे चुकाये ? हम वनवासी हैं अतः हम उनको कौन सा उपहार दें। वह राम लक्ष्मण को वन की शोभा दिखाने के लिये ले जाते थे जहाँ पर प्रकृति के अनोखे खजाने छिपे हुए थे। घने जंगलों के बीच में पवित्र स्वच्छ जल से युक्त तालाब थे जिनमें हरियाली की परछाई दिखायी पड़ रही थी। मछलियाँ जल में खेल रही थीं और उछल-उछल कर खुशी मना रही थीं। वह स्वयं शोभा का केन्द्र बन कर के आसपास के प्रदेशों को भी सुन्दर बना रही थीं।

(25) वायु विकम्पित················वितान तना है।

शब्दार्थ—वायु–air। नृत्य–dance। तट–bank। तरु–tree। जीवन–life। निकट–near। हरा–green।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि वायु के द्वारा कँपती हुई सुन्दर कुमुदिनी रह-रह कर नृत्य करती थी। उसे देखकर किनारे पर

खड़ी हुई बगुलों की मंडली प्रसन्न होती थी। वनवासियों ने वह ब्रह्म कुण्ड भी दिखाया जहाँ से नदी निकलकर कल-कल छल-छल करती हुई, वृक्षों के कुंजों को जीवन देती हुई, कन्या के समान मचलती हुई चली जा रही थी अत्रि मुनि के आश्रम के पास मन्दाकिनी की अपार शोभा फैली हुई थी जिसको देखने से ऐसा लगता था जैसे उस प्रकृति की शोभा को देखने के लिए स्वयं स्वर्ग ही यहाँ पर उतर आया है। लम्बे खड़े पहाड़ों की गरिमा बड़ी ही अदभुत थी। वन की हरियाली और उसके पवित्र सौन्दर्य के सामने तो स्वर्ग का उद्यान भी तुच्छ लगता था। जहाँ पर गंगा नदी के साथ अन्य नदियों का संगम हुआ है। वहीं पर प्रयाग बना है और उसके किनारे पीपल बड़ तथा पाकर जैसे बड़े-बड़े वृक्षों का हरा-भरा तम्बू तना हुआ है।

(26) गिरिमाला में एक..............देख अघाते।

शब्दार्थ—मूल—root। जल–water। पावन–virtue। प्रकृति—nature। वन–forest।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि पहाड़ों की पंक्ति में एक गुफा भीतर तक चली गयी है। जिसके पत्थर के मूल में से घुटनों तक पानी हमेशा बहता रहता है। इसका नाम 'गुप्त गोदावरी' है। यह एक पवित्र तीर्थ कहलाता है। वहाँ पहुँच कर दर्शक के तन-मन दोनों प्रफुल्लित हो जाते हैं। उसी गुफा के अन्दर प्रकृति के द्वारा निर्मित एक कलात्मक शिला है। जो बहुत आश्चर्यजनक और आनन्ददायक है। वह कोल युवक राम लक्ष्मण को वन की सुन्दर शोभा दिखा कर बहुत सुख पाते थे और प्रसन्नता का अनुभव करते थे। राम भी उन कोल-किरातों को खुश देखकर मन ही मन आनन्दित होते थे। कभी-कभी वह राम से आग्रह करके उनको अपनी बस्ती में ले जाते थे। क्षण भर में ही वहाँ पर भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। वह लोग राम की सुन्दर छवि को देख कर तृप्त होते थे। और बहुत सुख का अनुभव करते थे।

(27) कहते कोल..............कोई ऊँचा।

शब्दार्थ—अभिलाषा–wish । तुमने–you । कहाँ–where । रक्त–blood । समुदाय—group । कोई—any ।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कोल-किरात श्रीराम चन्द्र जी से कहते हैं कि हम छोटे और निर्धन प्राणी हैं। हमारी इच्छा है कि हम आपसे कुछ मधुर अमृतमय उपदेश सुनें। इस पर राम कहते हैं कि तुमने अपने मन में व्यर्थ ही इस हीन भाव को पाल रखा है। यह ऊँच-नीच का भाव अस्तित्वहीन है। यह अधिक समय तक रहने वाला नहीं है मानव जाति केवल एक ही है। इसमें कोई दूसरी जाति नहीं है। सभी मानवों में खून मांस, मज्जा तथा आकृति की समानता है। कुछ अज्ञानियों ने मानव को व्यर्थ ही अनेकों जातियों में बाँट दिया है। और अपने स्वार्थ के लिए अलग-अलग समुदाय बना दिये हैं। उन्होंने न जाने कितने लोगों को अछूत की संज्ञा देकर नीच समझ लिया है। लेकिन किसी विशेष कुल में जन्म लेने से ही किसी को क्यों ऊँचा मान लिया जाये ?

(28) इस विभेद से················लाभ बढ़ाता !

शब्दार्थ—मानवता—huminity । दम्भ—proud । पूजा—worship । जीवन—life । जगत—world ।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि इस प्रकार की विभेद की भावना से मानवता की हत्या होती है और लोगों के मन में विद्वेष की भावना स्वतः ही जन्म ले लेती है। अर्थात लोगों के मन में विद्वेष रूपी भावना के बीज उग आते हैं। अपने झूठे दम्भ और स्वार्थ को पूरा करने के लिये इस जीवन रूपी आँगन में विभेद की पूजा करना उचित नहीं है। मनुष्य ने सोने का मूल्य बढ़ाकर स्वयं के मूल्य को घटा दिया है। इस व्यर्थ और अनुपयोगी धातु के प्रति मानव की बढ़ी हुई माया को देख कर काल उस पर हंस रहा है। जितनी कम इच्छायें होती हैं वह उतना ही अधिक सुखी रहता है। शरीर के पोषण के लिए मनुष्य को इस संसार में कितना चाहिए ? लेकिन मनुष्य के मन की दशा बड़ी विचित्र है। जो उसको क्षण-क्षण में तरह-तरह के स्वप्न दिखाती है

मनुष्य को जितना ही लाभ होता है। उसका उतना ही अधिक लालच बढ़ जाता है।

(29) राज भवन वासी तो..............प्रकृति का पलना।

शब्दार्थ—सदा—always। उटत—hut। सीमित—limited। परिवार—family। प्रकृति—nature।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि राजभवन में रहने वाले तो हमेशा दुखी रहते हैं। लेकिन हम तीनों कुटिया में रहने वाले लोग यहाँ पर कितने सुखी है। हमारा परिवार सीमित हो। हमारी इच्छायें सीमित हों तो फिर हम अपने जीवन रूपी सरोवर को क्यों न सुख समृद्धि रूपी धाराओं से भर लें? संसार के बाहरी दिखावे का लाभ मनुष्य नहीं उठा पायेगा वह जितना अधिक प्रकृति के समीप रहेगा वह उतना ही सुखी रहेगा। तुम केवल भूमि के पुत्र ही नहीं हो। बल्कि तुम प्रकृति की दुलारी सन्तान भी हो। सारी जनता को तुमसे सरलता की शिक्षा लेनी चाहिए। यह मेरा सौभाग्य है जो मैं तुम्हारे बीच में यहाँ पर आया हूँ। मैंने ऐसा उत्तम सात्विक सुख कभी नगरों में भी न पाया था। हम जब तक यहाँ रहेंगे, तब तक रोज हमारा तुमसे मिलना होता रहेगा! तुमसे मिल कर मुझे बच्चों जैसा सुख मिलेगा। इसके साथ ही मुझे यह प्रकृति का पालना भी मिला है।

(30) कोल किरातों..............मोहित मन थे।

शब्दार्थ—नित—daily। नये—new। कंज—lotus। थली—place। दिन—day।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि राम रोज कोल-किरातों से मिला करते थे। जिससे उनके हृदय रूपी सरोवर में हमेशा नये-नये कमल खिलते रहते थे। इस प्रकार से चित्रकूट के सुन्दर प्रदेश में उनके दिन बड़े सुख से बीत रहे थे। राम-सीता और लक्ष्मण इन तीनों के शरीर स्वस्थ थे तथा तीनों के मन बहुत प्रसन्न थे।

---

## तृतीय सर्ग

(1) सदा प्रवर्तित......................स्नेह पगे हैं।

शब्दार्थ—तम–dark। समय–time। किन्तु–but। दोनों–both। स्वभाव–habit। जीवन–life।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि काल का चक्र हमेशा चलता रहता है। इसकी गति कभी रुकती नहीं है। अन्धकार हो या प्रकाश हो, दुख या हो सुख हो। सभी अवस्थाओं में इसकी गती समान रहती है। हमारे मन में जब जैसा भाव होता है तब उसी के अनुसार समय हमको घटता-बढ़ता लगता है। सुख में समय हमको भागता हुआ प्रतीत होता है। लेकिन दुख में जैसे वह खिसकता भी नहीं है। लेकिन दुख-सुख दोनों हमको तभी एक समान लगते हैं जब हमारे मन में दोनों के लिए समानता का भाव जाग्रत होता है। जो लोग दुखी न होने का और सुख न होने का स्वभाव अपनाते हैं तथा अपने मन को सदैव संतुलित रखते हैं। वह संसार रूपी भवसागर से तर जाते हैं। यही भगवान शंकर का विषपान है। कि दुख को हँसते-हँसते पी जाना चाहिए। जो संसार में विषमता को झेलना सीख जाता है। वही अमर हो जाता है। हम जब से चित्रकूट में आये हैं तब से दिन को मानों पंख लग गये हैं। अपितु दिन बड़ी जल्दी-जल्दी बीत रहे हैं। जंगल के इस कुशलता पूर्ण जीवन का प्रत्येक क्षण प्रेमपूर्ण बीत रहा है।

(2) मँझली माँ की..............वे ही लुंठित।

शब्दार्थ—भवन—building। क्यों—why। विचारों—thoughts। किन्तु—but। अब—now। राज्य—kingdom।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में सीता जी कहती है कि मँझली माता का हमारे ऊपर बहुत बड़ा उपकार है। जिन्होंने हमको इतना अधिक सुख दिया है। दीवारों से घिरे हुए उस राजभवन में भला हमको कितना सुख मिल सकता था। वनवास का समय केवल चौदह वर्षों के लिए ही क्यों सीमित कर दिया गया है? सच्चा आनन्द और उत्साह तो तभी है जब

वह अपरिमित हो। इन्हीं विचारों में खोयी हुई सीताजी बैठी हुई थीं। सत्य ही है कि जब कोई धारा में बह जाता है तब किनारा उससे छूट जाता है लेकिन दूसरे ही क्षण विचारों के प्रवाह में बहने वाली सीता फिर किनारे पर आकर लग गयी थी उस समय वह आश्चर्य चकित, भ्रमित, शंकित तथा भयभीत प्रतीत हो रही थी। जब सीता ने सामने से आवेश, क्रोध, और जोश से भरे हुए लक्ष्मण को आते हुए देखा। तो वह भयभीत हो गयी और सोचने लगी कि अब कौन सा नया पाठ पढ़ना होगा? वह कुछ सोच भी न पायी थीं कि इतने में ही उनके देवर लक्ष्मण वहाँ पर आ पहुँचे। उस समय वह बहुत क्रोधित थे उनकी आँखों से ऐसे चिनगारियाँ निकल रही थी जैसे किसी ज्वालामुखी के फटने से ज्वालायें निकल रही हों। लक्ष्मण ने कहा अब तक मैंने बहुत कुछ सह लिया है लेकिन अब कुछ भी नहीं सहूँगा और बड़े भाई राम की आज्ञा उल्लंघन करने में भी नहीं डरूँगा। भाभी यह देखो, कीचड़ से कमल नहीं निकला है बल्कि विषधर निकला है। यह तुम्हारे जीवन की शाखा रूपी फूल पर कितना तेज काँटा बन कर आया है। नर्क की नदी वैतरिणी से शुद्ध गंगा जल की आशा करना व्यर्थ है। क्या कभी तेज कांटों वाले वृक्ष से आम की आशा रखी जा सकती है? कुछ भी हो, हमारी तो कुशलता ही है क्यों कि मेरे बाणों की धार कुंठित नहीं हुई है। जो इस समय निष्कंटक राज्य चाहते हैं वे ही अब इस भूमि पर गिरे हुए दिखायी पड़ेंगे। अर्थात निष्कंटक राज्य चाहने वालों का ही सर्वनाश होगा।

(3) अरे सुनूं भी..............अनुज संग आये।

शब्दार्थ—घटना—event। आज—today। क्यों—why। माई—mother। वहाँ—there। समाचार—news। पर्दा—curtain। नहीं—not।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में सीता जी कहती हैं कि अरे मैं भी तो सुनूं कि ऐसी कौन सी अनोखी घटना घट गयी है जिसके कारण आज तुम एकाएक उत्तेजित हो। तो लक्ष्मण कहते हैं कि कोई घटना नहीं घटी

है बल्कि आज शत्रुओं की सेना की घटा हमारे ऊपर छा गयी है । जिसकी जैसी माता होगी उसका पुत्र भी वैसा क्यों न होगा ? सीता कहती हैं मेरी कुछ भी समझ में नहीं आता है कि तुम क्या कह रहे हो ? तुम्हारे मन में जो रहस्य छिपा हुआ है उसको स्पष्ट तो करो । इस पर लक्ष्मण कहते हैं तुम नहीं समझती, तो अब समझ लो कि यहाँ पर भरत की सेना आ रही है वह माता कैकेयी के लोभ का जय जयकार करता हुआ चला आ रहा है । यह सुन कर सीता कहती हैं आप शान्त हों । जिस रघुकुल में सदैव स्नेह और प्रेम की पूजा होती आयी है वहाँ पर युद्ध की चर्चा भला कैसे हो सकती है ? मुझे बताओ कि तुमने यह समाचार कहाँ से पाया है ! इस समाचार ने तो मेरे प्रिय भोले देवर को भ्रम में डाल दिया है । लक्ष्मण कहते हैं मैं भोला ही सही ! लेकिन अब सच्चाई पर पर्दा नहीं पड़ सकता है । यदि हम सावधान नहीं रहेंगे तो ठग हमको ठग लेगा । वनवासी कोल-किरात बड़े शंकित होकर इस समाचार को लाये हैं कि भरत चुनी हुई चतुरंग सेना और छोटे भाई शत्रुघ्न के साथ यहाँ पर आ रहे हैं ।

(4) इसी समय................नहीं कुछ बोले ?

शब्दार्थ—सरिता—river । तट—bank । लख—see । पहले—before । यदि—if । सम—like ।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि इसी समय राम नदी के किनारे से लौट कर आये । वह लक्ष्मण के लाल मुख को देख कर चकित हो गये । राम लक्ष्मण से कुछ पूछें इसके पहले ही लक्ष्मण इस प्रकार से तन कर बोले, जैसे फुँफकारता हुआ शेषनाग अपने फन को डुलाता है । वह कहने लगे कि यदि आज अनजाने में मुझसे कोई अवज्ञा हो जाये तो आप मुझे क्षमा कर दीजियेगा क्योंकि हृदय जिस बात को मान लेता है उसके लिए वही आपद्धर्म बन जाता है । अवध नरेश भरत अपने बल को दिखाने के लिये तथा अपने राज्य को निष्कंटक बनाने के लिए अपनी सेना के साथ चित्रकूट आ रहे हैं । संसार में सब आपके समान

सहज और शील की मूर्ति नहीं है संसार में सभी व्यक्ति विषय-विकारों से मुक्त हों, ऐसा कब संभव हो सकता है ? जब मनुष्यको धन, यौवन, पद और मान मिलता है तब वह अभिमानी बन जाता है। उस समय उसका सारा ज्ञान और विवेक धूल में मिल जाता है। जिससे वह अनुचित कार्य भी कर बैठता है। मैंने यह भी सुना है कि उसके साथ युद्ध की संचालिका बन कर माता कैकेयी भी आयी हैं। जिससे वह मार्ग के कंटकों को दूर करके अपने पुत्र को अक्षय राज्य दे सकें।

भले ही भरत एक साधु प्रकृति के व्यक्ति हैं। लेकिन अन्त में मानव विषय-वासना का प्रेमी हो जाता है। इसीलिए ऐसा लगता है कि माँ का लोभ बेटे में दुगुना होकर जाग्रत हुआ है। यह सुन कर राम ने कहा—लक्ष्मण, शान्त हो जाओ। अब तुमं भरत की निन्दा मत करना। क्योंकि संसार में भरत के समान पवित्र चरित्र वाला कोई दूसरा व्यक्ति नहीं मिल सकता है। इस पर लक्ष्मण कहते हैं क्या कहा ? मैं खामोश रहूँ और अब भी अन्याय सहता रहूँ। अनीति नीति का गला घोंट दे फिर भी मैं चुप रहूँ। पाप पुण्य को पैरों तले रौंदता रहे फिर भी मैं कुछ न कहूँ। धर्म-अधर्म से पराजित होता रहे। यह मैं देखता और सहता रहूँ। सच्चरित्र मनुष्य अंतिम साँसें लेता रहे और अभिमान मस्त होकर डोलता रहे। मनुष्य के हाथ में धनुष बाण हो फिर भी वह कुछ न बोले।

(5) हुआ करे......................क्यों रक्त बहाये ?

शब्दार्थ—रक्त—blood । उद्देश्य—purpose । जीवन—life । विश्वास—believe । चरित्र—charecter । भ्राता—brother । किन्तु—but । क्रोध—angry । अवसर—chence । पशु—animal । क्यों—why ।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में लक्ष्मण कहते हैं कि अच्छे अवसर पर भी कोई चोट मारता रहे और मैं नपुंसक बन कर उसे सहता रहूँ। मेरी नसों में क्षत्रिय का खून उबलता रहे फिर भी मैं मौन रहूं। राम कहते हैं मेरे प्यारे लक्ष्मण ! तुम मौन रहो। तुम इस तरह चंचल मत बनों।

केवल शंका पर आधारित होकर तुम पाप में मत पड़ो। यहाँ आने के लिए भरत के मन में न जाने कौन सा उद्देश्य छिपा हुआ हो। भरत अपने जीवन में कभी भी धैर्य से विमुख हो जाये यह सर्वथा असम्भव है। मुझे विश्वास है कि मेरा स्नेह ही उसको यहाँ पर खींच लाया है। वह अपने सुन्दर चरित्र को दिखाने के लिये ही चित्रकूट में आया है। यह सुन कर लक्ष्मण हँसे और बोले कि आप भरत को सुन्दर चरित्र वाला कहते हैं इसीलिये वे अपने साथ सेना को लाये हैं। और उनको हाथी, घोड़े, रथ, पालकी आदि राग रंग अच्छे लगते हैं। वह हमारे भाई हैं अतः वह पैदल भी तो अपने स्नेह को दिखाने के लिये यहाँ पर आ सकते थे। लेकिन राजा श्रीमान भरत को कैसे अच्छा लगता? कुछ भी हो, आज युद्ध भूमि में भरत से हमारी दो-दो बातें अवश्य होंगी। वे हमारे शत्रु विनाश के साथ-साथ हमारे आघात को भी सहन करेंगे। राजभवन में हमारा क्रोध प्रकट नहीं हो पाया था लेकिन आज उस क्रोध को प्रकट करने का सुन्दर अवसर मिल गया है। यह सुन कर सीता बड़ी दुखी हो गयीं और जिस प्रकार प्रबल आँधी में पीपल के पत्ते डोल उठते हैं उसी प्रकार से सीता जी काँप उठीं बोलीं—देवर यह तुम क्या कह रहे हैं? एक स्थान पर रहने वाले हिंसक पशु भी आपस में नहीं लड़ते हैं। तो फिर मनुष्य ही क्यों आपस में वैर को बढ़ाये! और आपस में ईर्ष्या, द्वेष, कलह आदि को उत्पन्न करे तथा आपस में युद्ध करके वह क्यों रक्त बहाये।

(6) भैया! तुम्हें..................भ्रम को मेटा।

शब्दार्थ—मात्र—only। धनुष—bow। दृग—eye। आँसू—tears। वन—forest। हृदय—heart।

व्याख्या— प्रस्तुत पद्यांश में राम चन्द्र जी कहते हैं कि हे भाई लक्ष्मण! तुम्हें सीता की सौगन्ध है कहीं तुम्हारा स्नेह घायल न हो जाये! और भाइयों की प्रेम रूपी गंगा तीनों भुवनों के सारे पापों को धो डाले लक्ष्मण उस समय इतनी जल्दी में थे कि वह राम की बात को सुन कर भी न सुन सके। क्योंकि उस समय उनका ध्यान युद्ध में लगा

हुआ था और उनका उद्देश्य युद्ध करना था ! लक्ष्मण खड़े हो गये उन्होंने अपनी कम· बाँध ली और अपने धनुष को सँभाल लिया। इसके बाद उन्होंने अ ने बाणों पर बड़ी तीव्र नजर डाली और तूणीर को भली प्रकार से देख लिया। इधर लक्ष्मण युद्ध की तैयारी कर रहे थे इतने में दो किरात सन्देशा लेकर आये कि भरत अपनी आँखों में आँसू भरे हुए नंगे पाँव इधर चले आ रहे हैं। उनके साथ मातायें, सेवकजन, नगरवासी तथा गुरु वशिष्ठ जी भी हैं। सबके मन उदास हैं और शरीर क्षीर्ण हैं। वह ऐसे निस्तेज हो गये हैं जैसे वह अपना सब कुछ जुए में हार गये हों। जब राम ने अपनी दृष्टि उठायी तो कुछ ही दूरी पर दीन भरत को देखा। उनका सिर झुका हुआ था, हाथ जुड़े थे, तथा उनका मन बहुत दुखी था। उनको देखने से ऐसा लगता था जैसे वह कोई करुणा की रेखामात्र हों। उनको देखते ही राम विह्वल हो उठे और अपने तन मन की सुधि को भूल करके इस प्रकार से आगे बढ़े जैसे वन से आने वाली कोई गाय अपने बछड़े के लिए दौड़ती है। भरत राम के चरणों में गिर पड़े और प्रभु ने उनको दोनों हाथों से उठा लिया उन्होंने भरत को अपनी भुजाओं में बाँध कर गले से लगा लिया। उस समय ऐसा लग रहा था जैसे दो बादल एक दूसरे में समा गये हों। उनकी आँखों से आँसू गिर रहे थे। और उन दोनों के हृदय भी करुणा से द्रवित हो गये थे। यह सब देख कर लक्ष्मण चकित से खड़े थे। शत्रुघ्न ने उनको आलिंगन किया। इस प्रकार से उनके मन में जो शंका और भ्रम था वह सब दूर हो गया।

(7) सहज संकुचित……………आक्रान्त लतायें।

शब्दार्थ—जब—when। कोमल—soft। पीठ—back। जन—people। दृग—eye। स्वयं—self। मातायें—mothers।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि जब लक्ष्मण आगे बढ़ कर भरत से मिले तब उन्हें बहुत संकोच हुआ। वह उसी प्रकार से सहम गये जिस प्रकार से पहाड़ के शिखर पर नीचे के भूमितल को देख करके आरोहक सहम जाता है। शत्रुघ्न जब बड़े विनीत भाव से राम से

मिले तब उनकी आँखों से आँसू गिर रहे थे। राम ने स्नेह से गदगद होकर उनको अपनी गोदी में खींच लिया। इसके बाद भरत ने आगे बढ़ कर सीता के चरणों में अपना सिर झुका दिया और अपने आँसुओं से सीता के चरणों को नहला दिया। सीता ने भरत की पीठ पर अपना कोमल हाथ रखा और उनको आशीर्वाद दिया! भरत के छोटे भाई शत्रुघ्न ने भी झुक कर सीता जी के चरण छुए और उनको अपने आँसुओं से धो दिया! और बड़ी भक्ति के साथ सीता जी को प्रणाम किया। यह देख कर सारे लोग भाव विभोर हो गये लेकिन सब खामोश रहे! उनकी आँखों से बहने वाले आँसुओं से उनकी करुण भावना प्रकट हो रही थी। सारे लोग शिलाओं पर खड़े हुए थे और अपनी-अपनी भावनाओं में डूबे हुए थे। ये क्षण इतने शान्त और मौन थे जैसे वह स्वयं से ही ऊब गये हों। भाइयों से मिलने के बाद जब राम ने अपनी दृष्टि घुमायी तो उनको ऋषिवर वशिष्ठ जी आते दिखायी पड़े। उनको देखते ही बड़े विनीत भाव से सिर को झुका कर और हाथ जोड़ कर आगे बढ़े। जब राम ने झुक कर वशिष्ठ जी के चरण छुए तब वशिष्ठ जी खुशी से गदगद हो गये! और आँखों में आँसू भर कर उन वनवासियों को देखते ही रह गये। राम ने कहा यह दास आज आपका बड़ा उपकार मानता है क्योंकि आज तीर्थ स्वयं चल कर मेरे पास आया है। आज मुझे ऐसा लग रहा है जैसे किसी प्यासे आदमी के सामने घर बैठे ही क्षीर सागर लहरा रहा हो! इसके बाद राम ने देखा कि कुछ दूर पर मातायें खड़ी हुई हैं जो बर्फ से आक्रान्त बेलों के समान सफेद वस्त्र पहने हुए बड़ी दीन लग रही थीं।

(8) धाये राम……………धर्म निभाना।

शब्दार्थ—मातायें—mothers। क्यों—why। क्रूर—cruel। विधाता—god। विपिन—forest। अंतिम—last।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि माताओं को देख कर राम दौड़ कर उनके चरणों में गिर पड़े जिससे मातायें एकाएक रो पड़ीं और राम भी बहुत दुखी होकर रोने लगे। उनके आँसुओं की धारा रुकने

का नाम नहीं ले रही थी, वह निरन्तर आँखों से बहती जा रही थी। राम कहते हैं—माता, मुझे कुछ तो बताओ कि यह सब क्या हुआ है और कैसे हुआ है ? रघुकुल के लिए विधाता इतना क्रूर क्यों हो गया है। पिता जी मुझको वन में भेज कर स्वयं क्यों स्वर्गलोक चले गये ? मैं कितना बड़ा अभागा हूँ जो अन्तिम समय में भी उनके दर्शन न कर सका। अब राम वह वात्सल्य और ममता कहाँ से पायेंगे ? किसको मालूम था कि अचानक ऐसा बुरा दिन आ जायेगा। अब मुझको वह पवित्र और पूज्य चरण कहाँ पर मिल सकते हैं जिन पर मैं अपने आँसुओं को बहाऊँ ! मेरा मन बहुत दुखी है अत: मैं किस प्रकार से अपने मन को धीरज दूँ और इस दुख से अपने प्राणों को बचाऊँ। यह देख कर ऋषिवर का हृदय पिघल उठा और उन्होंने कहा—राम, तुम दुखी मत हो। इस संसार में तो जन्म मरण का चक्र चलता ही रहता है। इस पृथ्वी पर आकर दशरथ का जीवन धन्य हो गया है। जिसने तुम्हारे जैसी सुन्दर सद्‌चरित्र और सदगुणों वाली संतान पायी है। वह मन वाणी और कर्म से सदैव सत्य की पूजा करते रहते थे तथा सत्य से बहुत प्रेम करते थे। उन्होंने जो वचन दिया था उसको अपने प्राणों की आहुति देकर भी निभाया ! उन्होंने इस संसार में न्याय, नीति, शासन, प्रबन्ध में अपार यश प्राप्त किया है। उनके बल पौरुष और विक्रम की बराबरी भला कौन कर सकता है ? वह अपने सारे कामों को पूरा करके इस संसार से गये हैं। यहाँ से निश्चित रूप से सबको जाना पड़ता है। अत: अब तुम श्रद्धा सहित उनका श्राद्धा करके अपने धर्म को निभाओ !

(9) गत को विगत..........गरल उतारो !

शब्दार्थ—चिन्ता–worry। सदा–always। भाग्य–luck। कर्तव्य–duty। मृत्यु–death।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि बीते हुए को भूल कर आने वाले की सदैव चिन्ता करनी चाहिए। यही उचित होता है। मनुष्य के भाग्य में जो बदा होता है उसे वही मिलता है। अब तुम धीरज धर के

उसी काम को करो–जो तुम्हारा मुख्य कर्तव्य हो। और याद रखो कि हम तो केवल निमित्त मात्र है संचालन करने वाला तो कोई दूसरा है। हमारी लाचारी हमको यही बताती है कि समय का चक्र निरन्तर घूमता रहता है। जन्म सत्य है, मृत्यु सत्य है और आत्मा चिर-शाश्वत है। मनुष्य को दुख-सुख सब हँस कर स्वीकार करना चाहिए। नहीं तो हर पल उसको भय सताता रहेगा। हम जिसको बदल नहीं सकते हैं उसको तुम स्वीकार कर लो। और हँस कर इस विपत्ति को झेल डालो तथा अपने मन के दुख को भूल जाओ।

(10) पदवन्दन कैकेयी………………सरस विदाई।

शब्दार्थ—कोई–any। रंक–poor। जीवन–life। नयनों–eyes। धरा–earth। भी–also। क्या what।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि माता कैकेयी, सुमित्रा और कौशल्या के चरणों में प्रणाम करके तथा मन में धैर्य धारण करके राम सेवकगण और नगरवासियों से मिलने के लिए आगे बढ़े। वहाँ पर कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं बचा जिसे राम ने आलिंगन न किया हो। इस समय राम ऐसे लगा रहे थे जैसे कोई निर्धन सामने धन सम्पत्ति को देख कर उसे दोनों हाथों से समेट ले। लक्ष्मण ने पहले ऋषि को वन्दन किया फिर माँ के चरणों में झुक गये। कौशल्या ने कहा बेटा! तुम्हारा जीवन सार्थक हो गया है। यह सुन कर सुमित्रा की आँखों में आँसू भर आये! और कैकेयी जमीन में अपनी दृष्टि गड़ाये खड़ी रह गयी। इसके बाद उर्मिला को देख करके लक्ष्मण चौक गये और बोले अरे, क्या यह भी आई है। इस उर्मिला ने तो अयोध्या में ही मुझे विदायी दे दी थी।

(11) वन्दन में उर्मिला………………भाव नियन्ता!

शब्दार्थ·—नयन–eye। सीमित–limited। कथा–story। अभी–yet। शव–dead body। जगत–world। नृप–king। पुनः–again। चिन्ता–worry।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि जब उर्मिला ने लक्ष्मण को वन्दन किया तब उनके नेत्रों से दो चंचल आँसुओं की बूंदे गिर पड़ीं। श्रुतिकीर्ति और मांडवी अपने आँचल में ही रोती हुई वहाँ पर खड़ी रहीं। ऋषि को सामने देख कर तुरन्त सीता उनके चरणों में वन्दन करने के लिए झुक गयी। ऋषि ने आर्शीवाद दिया कि तुम्हारा सौभाग्य अक्षय बना रहे और संसार में तुम्हारा यश सदैव बढ़ता रहे। इसके बाद जब सीता ने तीनों माताओं के चरण छुए तब तीनों मातायें रो पड़ीं। उस समय वहाँ पर कोई भी व्यक्ति ऐसा न था जो करुणा से भाव-विभोर न हो गया है। लेकिन सब लोग चुपचाप खड़े रहे! उनको देखने से ऐसा लगता था जैसे वह स्वयं को ही दंड दे रहे हों। सबकी आँखों में आँसू भरे हुए थे और सबके मन दुखी थे। गुरु वशिष्ठ ने बहुत ही संक्षेप में पिछली कथा को सुनाया! सुमन्त्र से यह जानकर कि राम नहीं लौटे हैं। सारे राजमहल में तहलका मच गया! दशरथ ने तो "राम नहीं लौटे" की रट लगा रखी थी! उनको ऐसा लगता था जैसे आज ही उनकी मृत्यु हो जायेगी। वह कह थे कि यदि राम नहीं लौटे तो मेरा जीवन व्यर्थ है। जिस प्रकार से प्राणों के बिना शरीर शव बन जाता है ठीक उसी प्रकार से राम के बिना जीवित रहना व्यर्थ है। इसके बाद उन्होंने सबको प्रणाम किया और इस संसार से अपना नाता तोड़ लिया। "राम-राम" कहते हुए राजा ने अपना शरीर त्याग दिया। यह देख कर रानियाँ अर्द्धमूर्च्छित सी हो गयीं और उन्होंने अपनी सुध-बुध को खो दिया। दशरथ की मृत्यु से सारी अयोध्या में हाहाकार मच गया और सारे घरों के लोग रोने लगे। भरत जब तक ननिहाल से लौट कर नहीं आये तब तक उनके शव को सम्हाल कर रखा गया और जब भरत आये तब उन्होंने बड़े दुखी मन से उनका क्रिया-कर्म किया। यह दुख पूर्ण कहानी सुनकर राम के नेत्रों में जल भर आया। उनके मन में जीवन की अस्थिरता और क्षण-भंगुरता के विचार घूमते रहे। राम के ऊपर सन्ध्या के समान पितृ शोक की छाँया घिर आयी थी। लक्ष्मण को चिन्ता हो रही थी कि इन

सब का स्वागत सत्कार कैसे होगा ? इतने में सारे कोल-किरात वहाँ पर आ पहुँचे और आगन्तुकों के लिये व्यवस्था करने लगें। जहाँ पर जैसी स्थिति होती है उसी के अनुसार मनुष्य अपने तन-मन को ढाल लेता है। जब मन को संभालना होता है तब शरीर उसका अनुगामी बन जाता है चाहे कितनी विषम परिस्थिति हो। लेकिन उसका संचालक मन ही होता है।

(12) तरु के नीचे ……… …खोये-खोये सोचे।

शब्दार्थ—तरु–tree। नीचे–under। भू–earth। किन्तु–but। रजनी–night। नभ–sky।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि वृक्ष के नीचे, घने कुंजो में तथा पत्थर की शिलाओं के ऊपर उस दिन-रात में सब लोगों का निवास पृथ्वी पर हुआ। वन में कन्द मूल फल की कोई कमी नहीं थी अतः वनवासी उसको बहंगी भर-भर कर लाये। लेकिन आज किसी को भूख नहीं थी क्योंकि सब के मन दुःखी थे। सबकी थकान को दूर करने के लिए शीतल मन्द वायु वहाँ पर आ पहुँची। उस समय वहाँ की प्रकृति वन और रात्रि सब शान्त थे। ऊपर नीले आकाश में जब तक नक्षत्र चमकते रहे, तब तक शान्त पृथ्वी पर मगन होकर गुम-सुम से सोये रहे।

---

## चतुर्थ-सर्ग

(1) तोम तिमिर को …………जिसको भाया।

शब्दार्थ—तिमिर–dark। किरणें–rays। तरु–tree। कलियाँ–buds। प्रकृति–nature। अवसर–chance।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि घने अंधकार को चीर कर जब पूर्व दिशा में उषा की लाली छा जाती है। तब ऐसा लगता है जैसे मणियों और मोतियों से बादलों की हथेली भर जाती है। प्रातःकाल सूर्य की लाल किरणें आशीर्वाद के समान पृथ्वी पर उतर कर अपना प्रकाश फैला देती हैं। जो पत्तों पर पड़े हुए ओस बिन्दुओं में अपना सौन्दर्य भर देती है। उस समय फूल हंसने लगते हैं कलियां खिलने लगती हैं वृक्ष

झूमने लगते हैं। चंचल पक्षियों के समूह उछल-कूद करके मधुर गीत गाने लगते हैं। वन प्रदेश की सुगन्धित वायु आकर तन-मन को प्रसन्न कर देती हैं और प्राण देने वाली प्रकृति मानव के रोम में नया जीवन भर देती है। ऐसी सुख तेने वाली प्रकृति की गोदी भला मनुष्य को क्यों न अच्छी लगे ? वह इसमें घूम-घूमकर इस सुन्दरता को देख कर भला वह क्यों न बलिहारी जाये। भरत के साथ आकर अयोध्या के समाज को अच्छा मौका मिला। वह सब भरत की अनुमति लेकर अपनी इच्छानुसार स्थान पर घूमने के लिये चले गये।

(2) इधर नदी के.......... रही थी मन में।

शब्दार्थ—नदी–river। अश्रु–tears। चारु–beautiful। पावन–virtue। विपिन–forest।

व्याख्या:—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि इधर प्रातःकाल ऋषि का आदेश पाकर नदी के किनारे राम लक्ष्मण ने श्रद्धा सहित श्राद्धा का आयोजन किया और अपने पूज्य पिता जी को पिन्डदान देकर अपना शीश झुकाया। इस समय राम की आँखों से आँसू गिर पड़े और उनका गला भर आया। राम ने कहा गुरुदेव ! पित्र अभाव की पूर्ति अब आप के ही द्वारा होगी। तभी उद्धार होगा। ऋषि राम के कन्धे पर हाथ रख कर आश्वासन देते हुए बोले कि हे प्रिय राम ! तुम्हारे सुन्दर चरित्र ने तो मानव के लिए नये क्षितिज खोले हैं। तुम्हारा पवित्र चरित्र लोगों का उद्धार करने वाला होगा। राम के नाम में ही हमारी संस्कृति का समस्त सौरभ केन्द्रीभूत होगा दोपहर बीतने के बाद नगर वासी घूम कर लौटे। लेकिन उनके तन-मन प्रकृति के सौन्दर्य के जाल में ही उलझे हुए थे। श्राद्धा क्रिया पूरी करने के बाद राम लोगों के बीच घूमने के लिए निकले। कौन कहाँ पर ठहरा हुआ है इसका प्रबन्ध देखने के लिये राम चल पड़े। सारी कुशल व्यवस्था को देख कर राम को बड़ा संतोप मिला। अवस्था के अनुसार सबके लिए समुचित साधन उपलब्ध कर दिये गये थे। झोपड़ी में उनका निवास था खाने के लिए कन्दमूल फल थे तथा पीने के लिए

गंगा का पानी था। सब को राम का स्नेह मिला था जिससे सब का जीवन सफल हो गया था। उनको देखने से ऐसा लगता था जैसे सभी वनवासी जीवन में बड़े खुश हैं। लेकिन सबके मन में एक ही आशंका उठ रही थी।

(3) मानेंगे क्या……… फल पा ले।

शब्दार्थ—प्रश्न–question। कैसे–how। हृदय–heart। चिन्ता–worry। समस्या–problem। संतोष–satisfaction।

व्याख्या:—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है सब अपने मन में यही सोच रहे थे कि क्या राम भरत की बात को मान कर अयोध्या लौट आयेंगे। क्या हम लोगों का भाग्य उदय हो जायेगा और राम हम सब के साथ अयोध्या आयेंगे। सबके मन में यही प्रश्न उठता रहा। लेकिन अभी इस प्रश्न के उत्तर का समय नहीं आया था सबके मन में अन्दर ही अन्दर अनेकों भावनायें उठती रहीं। दो दिन इतनी जल्दी कैसे बीत गये यह किसी को मालूम न हो पाया! उन्हें ऐसा लगता था जैसे वह अभी-अभी चित्रकूट आये हों! लेकिन राम वन में सबकी असुविधा को देख कर बहुत चिन्तित थे। किसी ने ठीक ही कहा था, कि माता का हृदय बच्चे की असुविधाओं को देख कर चिन्तित हो जाता है। लेकिन बच्चे ने कब इसकी चिन्ता की है। यही दशा इस समय राम की थी। क्योंकि वही सब के पालक और राजा थे। लेकिन वह क्या कहें, किससे पूछे? इसके लिए उनके मन में भारी संकोच था। पर इस मन के भाव को छिपाना भी तो सरल नहीं है। मौका पाकर उन्होंने सीता से कहा-मेरे सामने बहुत विकट समस्या है। मैं वनवास की असुविधाओं को देखकर बहुत चिन्तित हूं। लेकिन जब कोई कुछ नहीं कह रहा है तब मैं किसी से कुछ कैसे कहूं? इन दुखों को सहने से तो यही उचित है कि अब सब अयोध्या को लौट जायें। यह सुन कर सीता हँस पड़ती हैं और कहती हैं हम देखते हैं कि यहाँ पर सब बड़े सुखी हैं। तुम्हारे जैसे व्यक्ति जिन्होंने माता जैसा कोमल हृदय पाया है केवल वही दुखी हो रहे हैं। मुझे बड़ा संतोष है कि इतने दिनों के बाद मुझे सब के साथ रहने का मौका मिला है। तीनों माताओं

और बहनों को पाकर मेरा मन रूपी कमल खिल गया है। मेरी बहन उर्मिला यहाँ कुछ दिन अपने पति के साथ रह कर अपने दुःख को भुला ले और मैं अपनी बात कहूँ तो मुझे इन सब की सेवा करके जीवन का अमूल्य पुण्य फल प्राप्त हो रहा है।

(4) सच कहती हूँ …………सेवा करनी।

शब्दार्थ—उदधि—sea । विषय—subject । सदा—always । अन्तर—heart । स्वयं—self । विशेष–special । महिलायें–women ।

व्याख्या: –प्रस्तुत पद्यांश में सीता जी कहती हैं कि सच पूछो तो मैं सब को पाकर अपने आपको भूल गयी हूँ। और स्नेह रूपी समुद्र की लहरों पर नाव के समान झूम रही हूँ। इस पर राम कहते हैं कि तुम सब से मिलने की खुशी में खोयी हुई हो। इसलिये ध्यान रखना कि माताओं बहनों को कोई कष्ट न होने पाये। यो तो सुख-दुःख का विवेचन एक गम्भीर विषय है। इसको केवल वही समझ पाता है जिस पर ईश्वर की कृपा होती है। सुख कहाँ है ? क्या ये धन में है ? या पद और वैभव में है। सुख क्या मर्यादा में है या स्वास्थ्य और सुखद सौन्दर्य में है ? क्या सुख ऐश्वर्य के बीच में है या परिवार के लोगों में है ? या वासना की तृप्ति देने वाले साधनों में है। इन सब में सुख नहीं है। सुख तो केवल मनुष्य के मन में है। हृदय का सच्चा सुख ही प्रत्येक कण-कण में प्रतिबिम्बित होता दिखायी पड़ता हैं। मनुष्य के मन में भले ही कहीं पर दुःख छिपा हुआ हो लेकिन जो मनुष्य ऊपर से हँसता रहता है वह हमेशा हँसता रहता है। जो मनुष्य जीवन की हर परिस्थितियों पर संतुष्ट रहकर जीवित रहता है वही सुख रूपी गहरे सागर के रहस्य को जान लेता है मनुष्य जिससे प्रेम करता है उसी को जब वह सुखी देख लेता है तब उसका मन खुशी से झूम उठता है। सारी महिलायें वनवास के अभ्यास से अपरिचित हैं यहाँ पर सब प्रकार की असुविधायें हैं। इस स्थिति में तुमको यह ध्यान रखना है कि उनको सब प्रकार की सुख-सुविधा मिले। सीता भी स्वयं एक चतुर सुग्रहणी के समान सावधान थीं उन्हें ज्ञात था कि आये हुए व्यक्ति की कब और क्या सेवा करनी चाहिए।

(5) एक दिवस निज ..........कमी आ जाती ।

शब्दार्थ—एक दिवस-one day । वन–forest । नृत्य—dance । नित्य—daily । घर—house । पहाड़—mountain । कठोर—hard । कौन—who ।

व्याख्या:–प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि एक दिन सीता अपनी बड़ी सास के पास बैठ कर कहने लगीं कि मुझे वन में बहुत सुख मिलता है । किरात बालायें यहाँ आकर अपना नृत्य दिखाती हैं मेरा हाथ पकड़ कर आग्रह पूर्वक मुझे भी नाचना सिखाती हैं । ताड़ और खजूर पत्र से तरह-तरह के आभूषण बनाती हैं उन आभूषणों को ये स्वयं पहनती हैं और मुझे भी पहनाती हैं तथा खुशियाँ मनाती हैं । वह विविध रंग के जंगल के फूलों से ऐसे सुन्दर आभूषण बनाती हैं जो देखने में जीवित से लगते हैं । वह सुगन्ध देते हैं स्पर्श सुख देते हैं । ऐसे गहने यहाँ पर रोज ही पहने जाते हैं । ये किराति ने बबूल की कलियों से पायल बना कर पहनती हैं । जो मुझे बहुत अच्छी लगती है । ये बालायें रोज मुझे विभिन्न स्वादों वाले फल लाकर देती हैं । यहाँ के पशु पक्षी रोज खेलते रहते हैं और मछलियाँ भी अपने सुन्दर-सुन्दर खेल दिखाती हैं । अतः हे माँ ! मुझे वनवास में बहुत सुख मिलता है । यह सुन कर कौशल्या ने सीता को अपनी गोद में खींच लिया और उनके मुख को चूम लिया । इस प्रकार से ममतामयी सास ने पुत्रवधू के प्रति अपना वात्सल्य प्रकट किया । वह यह जान गयी कि सीता किसलिये वन के सुखों का वर्णन कर रही है ? वह डरती हैं कि कहीं मैं उससे वापस घर चलने के लिए न कहूँ । वह कहने लगी । यहाँ पर तेरी पत्थर की कठोर शय्या है और तुम मेरी कोमल रानी हो । यहाँ पर भोजन का भी कुछ निश्चित नहीं है । फिर यह पहाड़ का पानी भी तुझे अस्वास्थकर लगता होगा । यहाँ की कठोर ठंडक, तेज गर्मी बादलों का गर्जन और घोर आँधी को मेरी इस दुलारी पुत्र वधू का मन कैसे सहन करता होगा । जिनके लिये राजमहल में विभिन्न प्रकार के सुख-संचित थे उनके लिये यह कैसा दुर्भाग्य है कि उन्हें इस जंगल में रहना पड़ रहा

है। यदि मैं अपने पुत्र और पुत्रवधू के इस दुःख को देखने के लिए जीवित न रहती तो इस विशाल पृथ्वी की पूर्णता में क्या कमी रह जाती ?

(6) मौन रहो माँ..............अनुमति लेकर।

शब्दार्थ—माँ–mother। स्वयं–self। चिन्ता–worry। केवल–only। पथ–way। नित–daily।

व्याख्या:—प्रस्तुत पद्यांश में सीता जी कहती है कि माँ ! अब चुप रहो ऐसा कहकर मुझे रुलाओं नहीं। मुझे ऐसा आशीर्वाद दो जिससे हम वन से लौट कर फिर आपके चरण छुयें और आप भी स्वस्थ रहिए। तुम मुझको सुखी समझ कर अपने मन को दुखी मत करना। तुम हमेशा यही समझना कि मैं वन में बहुत दुखी हूँ। तुम कभी अभाव की चिन्ता करके मेरे दुख से दुखी मत होना। जब मेरे मन में कोई दुश्चिन्ता नहीं है तब अभाव का प्रश्न ही कहाँ है ? मन का सुख ही मनुष्य को सुखी बनाता है। और वह सुख मुझे केवल तुम्हारे स्नेह से ही मिलता है। यहाँ पर मेरे पति राम साथ में हैं तथा मेरे देवर लक्ष्मण की सच्ची निष्ठा है इस प्रकार से मेरा मन सब भाँति सुखी है। अब मुझे किसी भी प्रकार के दुख की चिन्ता नहीं है आज तुमने मेरे मन रूपी आँगन को अपने स्नेह रूपी प्रकाश से प्रकाशित कर दिया है। अब इस रास्ते पर अंधकारपूर्ण दुख के आने पर उसके पाँव काँप उठेंगे ! मैं इन वन फूलों के बीच में सदैव फूल के समान खिली हुई घूमा करती हूँ और रोज पक्षियों के मीठे स्वर में अपने स्वर को मिलाती रहती हूँ ! तुम मुझे केवल इतना ही आशीर्वाद दो और अपने मन को दुखी मत करो। तुमको खुश देख कर मेरा मन उससे दूना खुश हो जायेगा। इतने में ही वहाँ पर किरातिन कन्दमूल फल लेकर आ गयी। अतः सीता माता से अनुमति लेकर उसकी व्यवस्था करने चली गयीं।

(7) अगले दिन......... अंतर खोलो।

शब्दार्थ–अगले दिन—next-day। निकट—near। अपराध—mistake। सदा–always। अंतर–heart।

व्याख्या:—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि दूसरे दिन जब राम सन्ध्या वन्दन करने के लिये नदी के तट पर गये तो देखा कि एक शिला पर माता कैकेयी अपने सिर को झुकाये बैठी हुई हैं। वह जल की धारा को एकटक देख रही थीं। इसलिये वह यह न जान पायीं कि उनके पास राम कब आये ? राम ने कहा माँ ! तुम अकेली यहाँ पर आकर क्यों बैठी हो ? इस जल धारा में तुम इतनी तल्लीन होकर क्या देख रही हो ? यह सुनकर कैकेयी ने कुछ नहीं कहा और अपनी दृष्टि ऊपर की ओर उठायी ! उसने राम को देखा लेकिन वह कुछ न कह सकीं। उसकी आँखें जमीन पर ही झुकी हुई थी। यह देख कर राम कुछ देर यूँ ही खड़े रहे। फिर भयभीत होते हुए बोले माता ! क्या मुझसे कोई अपराध हो गया है ? जिसको मैं समझ नही पाया हूँ। मैं देख रहा हूँ कि जब से तुम यहाँ पर आयी हो। बड़ी खामोश सी रहती हो। तो कैकेयी ने कहा छोटे तो हमेशा ही क्षम्य होते हैं। फिर तुम यह कैसी क्षमा याचना करते हो। मैंने सोचा था कि अब मैं मौन रहा करूँगी क्यों कि मेरा बेटा अब भी बहुत भोला है। राम कहते हैं कि माता ! तुम क्या अब भी मौन रहोगी ! तुम कुछ तो बोलो। तुम्हें अपने इस बेटे की कसम है कि तुम अपने मन की बात उससे बताओ !

(8) ग्रीवा उठा…………नहीं अन्यथा।

शब्दार्थ—ग्रीवा–neck। कथा–story। जगत–world। तिमिर–dark। घटना–event।

व्याख्या:–प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि कैकेयी अपनी गर्दन को ऊपर उठा कर बोलीं–मैं कब तक खामोश रहूँगी। मेरे मन की पीड़ा हृदय को भेदे दे रही है उसे मैं कब तक सहन करती रहूँगी ? तुम बेटा मेरे पास बैठो तो मैं तुमको अपनी कहानी बताऊँ। वह तो (अर्थात् राजा दशरथ) तो चले गये अतः मैं तुमसे ही अपने मन की पीड़ा को कह अपने दुख को कम करूँ। तब राम लम्बी साँस खीच कर कैकेयी के पास इस प्रकार से बैठ गये जैसे वन में किसी जंगली पशु की गर्जना सुनकर

बछड़ा गाय के साथ सट जाता है। कैकेयी ने कहा—बेटा ! तुमतो वास्तव में उत्तम पुरुष हो। तुम्हारे जैसे प्रकाश के पुंज को अंधेरा कभी कैसे छू सकता है। अभी-अभी रघुकुल में जो भयंकर घटना घटी है उस सारी मुसीबत की जड़ मैं स्वयं हूँ। मैंने जो आग लगायी है उसी में मैं स्वयं जल रहीं हूँ। मैंने युगों-युगों तक चलने वाली बदनामी कमायी है। तुम भले ही न कहो। लेकिन मैं कहती हूँ कि यह भारी रोग मैंने ही पाल रखा है। लेकिन यदि मैं अपराधी हूँ तो आधी अपराधिन हूँ। आधा अपराधी तो स्वयं भगवान है जिसने मुझे बनाया है। पता नहीं क्यों उसने मुझे ममता का पाठ पढ़ा कर माँ का रूप दिया है। उसने नारी को अपनी संतान के लिए इतनी अधिक ममता क्यों दी है ? उस ममता में कितनी सामर्थ्य होती है। इस बात को केवल कोई माता ही समझ सकेगी। माँ बनने की अभिलाषा से ही कन्या पत्नी बनती है और फिर अपने पुत्र के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर देती है।

(9) सुत के लिये………………सुकृत दुष्कृत का।

शब्दार्थ—सुत–son। मात्र–only। भाषा–language। सुमन—flower। अभिलाषा–wish। सरिता–river। लहरें–waves। घटनायें–events। नीर–water। जीवन–life। ज्ञान–knowledge।

व्याख्या:—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि पुत्र के लिए माता के पास सर्वस्व त्याग की भावना होती है उसकी केवल यही इच्छा रहती है कि वह स्वयं बीज के समान भले ही मिट जाये लेकिन उसका पुत्र सदैव फूल के समान खिलता रहे। भगवान के द्वारा दी गयी यह पवित्र परम्परा प्रत्येक माता को निभानी होती है। स्वयं खारे आँसू पीकर पुत्र को दूध पिला कर पालना होता है। तुम पूछते हो कि मैं इस नदी के जल में क्या देख रही हो। आओ तुम भी देखो इस पानी की हलचल में कैसा अदभुत तथ्य छिपा हुआ है। सागर में लहरें उठती हैं लेकिन उन लहरों को हम सागर नहीं कहते हैं। इसी प्रकार से जीवन में अनेकों प्रकार की घटनायें घटती रहती है लेकिन कोई घटना जीवन नहीं बन सकती है। कल

जो पानी यहाँ पर था वह आज न जाने कहाँ पर पहुँच गया है। इस नदी का जो नाम कल था वही आज भी है। हे बेटा! इस जीवन रूपी सरिता की भी एक ऐसी ही करुण कहानी है जैसे नदी का पानी बह जाता है वैसे ही जीवन में घटनायें भी घट जाती हैं और उनको भुला दिया जाता है। मनुष्य का भाग्य बड़ा भाग्य शाली होता है जो समय पड़ने पर उसकी बुद्धि को हर लेता है। यह भाग्य मनुष्य की गति को वही प्रेरणा देता है जो उसके नसीब में लिखा होता है। ऐसा लगता है जैसे मनुष्य भाग्य के अनुसार कार्य करने के लिये विवश है। उस समय इस जीवन संग्राम में उसकी बुद्धि और विवेक काम नहीं देते है। मंगलकारी भगवान के इस विधान को भला कौन टाल पाया है। और दुख-सुख से पूर्ण जीवन से मनुष्य दुख को कब बाहर निकाल पाया है। मेरे ऊपर यह दुख आना था इसीलिये मेरे माथे पर यह कलंक का टीका लग गया। पुत्र मोह के कारण उस समय मुझको अच्छे और बुरे कार्य का तनिक भी ज्ञान न रहा।

(10) ऐसी लोभ ..........बना अचंचल।

शब्दार्थ—उर–heart। क्यों–why। जीवन–life। अश्रु–tears। कोई–any। जग–world।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कैकेयी कहती हैं कि मेरे हृदय में पुत्र के कल्याण की ऐसी तीव्र लहर आयी जिसमें मेरी विवेक बुद्धि रूपी नाव उलट गयी और मैं उसी लहर में डूब गयी। जब मैं उस लहर से बाहर आयी तब मैंने देखा कि बहुत भयानक घटना घट चुकी है। जिसमें अब किसी भी प्रकार का परिवर्तन करना सम्भव नहीं था। उसके लिए मैं किसी कुब्जा को क्यों दोष दूं? क्योंकि वह तो मेरा मातृत्व था और आज भी मेरा मातृत्व बोल रहा है यह मैं अपना हृदय खोल कर तुम्हारे सामने कह रही हूँ। मेरा मातृत्व सुरक्षित रहे। राम और भरत मेरे बेटे हैं। मेरे कलंक के काँटे चाहे मुझे पूरे जीवन भर घेरे रहें। पुत्र प्रेम के लिए मुझ पर जो भी कलंक लगेगा उसे मैं हमेशा स्वीकार करूँगी आज तक मैंने माँ का ही जीवन जिया है और अन्त में भी माँ के रूप में ही

मरूँगी। यह सुनकर राम माँ के चरणों में लिपट गये और बिलख-बिलख कर रोने लगे। अपनी बात को कहते-कहते उन्होंने माता के चरणों को आँसुओं से धो दिया! राम ने कहा कोई भी माता अपना मन छोटा न करे। क्योंकि माता से बड़ा कोई दूसरा नहीं है। जिसके आँचल में यह संसार बालक बन कर निश्चितता से सोता है। संसार के कामों को चलाने वाला भले ही कोई दूसरा चालक हो। लेकिन यह मैंने किया है यह मैं कर रहा हूँ यह कहने वाला व्यक्ति और अहंकारी होता है भगवान ही आदमी से सब कुछ कराता है और व्यक्ति के सारे कार्य उसी को अर्पित होते हैं। वही सच्चा कर्ता है। मनुष्य तो सभी भार से मुक्त होता है जब वह अपना जीवन ईश्वर को समर्पित कर देता है। कैकेयी कहती है मन का यही भाव सदा मानव को बल देता है। नाव चलाने वाले को तैराने की और किनारे लगाने की चिन्ता होती है। इसके लिए यात्री व्यर्थ ही चिन्ता करता है। यही सोचकर मैं सारा भार तुम्हारे ऊपर डाल रही हूँ मैं तो हृदय में निश्चिन्त होकर विश्वास लिये बैठी हूँ। भगवान ने जो रच के रखा है इसके अतिरिक्त और कुछ भी न होगा। संसार में जो कुछ भी होगा। वह मनुष्य के लिए हितकारी ही होगा। फिर दोनों की बातें समाप्त हो गयी और काली रात का आँचल सब जगह फैल गया। कैकेयी के हृदय का ज्वार उतर गया और मन का बोझ भी हल्का हो गया जिससे अब उसका जीवन स्थिर हो गया।

(11) एक दिवस............अतिशय सुख पाते।

शब्दार्थ—अच्छा–good। किन्तु–but। तुम्हारी–your। भाग्य–luck। दोनों–both। हम we।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि एक दिन संध्या के समय लक्ष्मण थके हुए एक शिला पर बैठे हुए थे। उस समय वह विचारों में खोये हुए थे। इतने में उधर से सुमित्रा आयी उसने देखा कि पुत्र से मिलने का यह अच्छा मौका है। अभी तो वह काम से खाली है नहीं तो दिन भर काम में ही लगा रहता है। सुमित्रा ने लक्ष्मण से कहा—मैं तो

दिनों से सोच रही थी कि मैं तुमसे कुछ बातें करूँगी कुछ पूंछगी ! अच्छा बताओ तुम्हारा सेवाकार्य तो ठीक तरह से चल रहा है न ? दिन भर तुम्हारे काम में व्यस्त रहने के कारण मैं तुमसे बात नहीं कर पायी ! लेकिन तुमको इस तरह से काम में व्यस्त देख कर मुझे बहुत सुख मिलता है। लक्ष्मण कहते हैं हाँ मा ! यहाँ पर आकर मैं परिश्रम के मधुर स्वाद को जान गया हाँ। मैं बड़े ही भाग्य से प्रकृति की इस सुन्दर गोदी में आया हूँ ! आकाश में जब तारे ही निकले रहते हैं तभी मैं उठता हूँ और जब तक भाभी सीता उठती हैं तब तक मैं जल भर लाता हूँ। इसके बाद हम दोनों मिल कर इस आँगन को साफ करते हैं। इस काम में माँ दोनों को ही वास्तव में बड़ा सुख मिलता है।

(12) नहीं समझता·············सदा जीवन में।

शब्दार्थ—उत्सव—function। सीचूं—watering । फुलवारी—garden। अग्रज–elder brother। गाँव–village। महतारी–mother। सदा–always।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में लक्ष्मण कहते हैं कि जो व्यक्ति काम करने में सुख का अनुभव करता है उसे काम कभी भार के समान नहीं लगता है। ऐसा परिश्रमी मनुष्य पूरे को एक उत्सव के समान बना देता है। जीवन तभी तक होता है जब तब उस में गति होती है। अचेतनता तो जीवन में मृत्यु के समान होती है। यहाँ पर विविध संघर्षों के द्वारा विजय प्राप्त की जा सकती है कण-कण की प्राप्ति के लिये कर्म करना बहुत आवश्यक है। वन में घूमना भी एक आवश्यक कार्य है मेरे साथ मेरे बड़े राम भी घूमते हैं। वन में हम बड़े आनन्द के साथ अनेकों जड़ी बूटियों का परिचय प्राप्त करते हैं। उधर भाभी रसोई बनाती है और मैं फुलवारी सींचता हूँ। तुम यह फुलवारी जो देख रही हो यह भाभी को बहुत प्यारी है। बड़े राम को तो आगन्तुकों से ही समय नहीं मिल पाता है। दिन का तीसरा पहर हम सबका सत्संगति में बीत जाता है। कभी-कभी हम कोल किरातों के गांव में जाते हैं हम उनको जितना सिखाते हैं

उससे अधिक हम वहाँ से सीख कर आते हैं। यदि हम गिरिजनों की थोड़ी भी भाव भव्यता को अपना सकें तो आज के नागरिक कहलाने वाले लोग आसानी से सभ्य बन जायेंगे ! हमारे भाई राम हमको तरह-तरह की कहानियाँ सुनाते हैं जिनको सुन कर मनुष्य की सारी बाधाये दूर हो सकती हैं। यहाँ पर जंगंगली जानवरों का बड़ा भय रहता है इसलिये मैं पहरा देता हूँ। और जब ऐसा नहीं होता है तब मैं इसी शिला पर सुख की नींद सोता हूँ लक्ष्मण को रोक कर सुमित्रा कहती है कुछ मेरी भी तो सुनों ! यह कह कर वह अपने मन की बात को स्पष्ट करती हुई कहती है कि बेटा ! मुझको तुम्हारी उतनी चिन्ता नहीं रहती जितनी वधू उर्मिला की रहती है। मैं दिन रात उसको देख कर परेशान होती रहती हूँ। यह सुन कर लक्ष्मण हँसते हैं और कहते हैं कि मैं इस मातृ हृदय पर बलिहारी जाता हूँ। जिसको बेटे से अधिक बहू प्रिय हो गयी है और जो सास थी वह उसकी माता बन गयी है। बात आगे न बढ़ने पाये इसलिये लक्ष्मण कहते हैं कि अच्छा माँ ! अब मैं चलता हूँ। क्योंकि मुझे वहुत से काम करने हैं। यह कह कर लक्ष्मण वहाँ से चले गये और माता सुमित्रा वहीं पर बैठी रह गयीं। वह अपने मन में यही मना रही थीं कि मेरे बेटे के जीवन का उद्देश्य सदैव उच्च आदर्श ही हो।

(13) बीत गये..........चिन्ता है दूनी।

शब्दार्थ,—समाज–society। विपिन–forest। किन्तु–but। पूछे–ask। समीप–near। परिवार–family। चिन्ता–worry।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कई दिन बीत गये, लेकिन किसी को यह नहीं मालूम हो पाया कि इतनी दूर अयोध्या से यह सारा समाज चित्रकूट में क्यों आया है ? इनका उद्देश्य भ्रात मिलन है वह तो पूरा हो गया है। यह समाज वनवास में कब तक दुख सहता रहेगा ? दूसरे लोग जितने दुखी नहीं थे उससे अधिक दुखी राम थे। लेकिन राम के सामने एक प्रश्न था जिसको वह किससे पूछें ? और कैसे पूछे ? राम इन्हीं विचारों में डूबे हुए अपने मन के भाव को छिपाये हुए तथा संकोच

करते हुए अपने जिज्ञासा भाव को लेकर गुरु वशिष्ठ के पास आये ! वह गुरु के चरणों में प्रणाम करके विनीत भाव से उनके पास बैठ गये । गुरु ने उनको आशीर्वाद दिया । वह बहुत देर तक सोचते रहे फिर बोले-भरत के साथ सारा परिवार यहाँ पर है । और वहाँ अयोध्या सुनी पड़ी हैं । सब लोग यहाँ पर वन के कष्ट सहते हैं इसकी मुझे बहुत चिन्ता हैं ।

(14) मिलन मधुर होता..................मौन को तोड़े ।

शब्दार्थ—मधुर–sweet । कर्तव्य–duty । सामाजिक–social । उचित–correct । हृदय–heart । अब–now । आज–today ।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि मिलन मधुर सुखदायी होता है और वियोग महादुखदायी होता है । यही जीवन का क्रम है । इसे अधिक महत्त्व देना अपने को भ्रम में डालना होता है । जो जिसका कर्तव्य हो उसे पूरा करना चाहिए । उसको कभी भी अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए । जो जिसको मिलना हो । वह उसे बहुत सहज भाव से मिल जाना चाहिए । हम को ये सामाजिक मर्यादायें कितना अधिक जकड़े रहती हैं । उस समय हमारी बुद्धि ही हमको रास्ता दिखाती हैं । कर्तव्य को पूरा करने के लिये ही हमको सब कुछ करना पड़ता है इसके लिए हमारा मन हो चाहे न हो । फिर भी हमको अपना कदम आगे बढ़ाना पड़ता है । अब आप वही काम करें जो उचित हो । यही कहने के लिए मैं आप के पास आया हूँ । हमारे ऊपर आपका मंगलमय आशीर्वाद सदा बना रहे । आप हमें ऐसा ही आदेश दीजिए । तब ऋषि वशिष्ट ने प्रसन्न हो कर कहा–राम तुम्हारा कहना उचित है । राम के हृदय से ऐसी कल्याण कारी वाणी क्यों नहीं प्रवाहित होगी ? भरत के साथ-साथ सारा समाज अपने मन की बात को छिपये हुए है । उन लोगों को यह शंका है कि उन की इच्छा पूरी होगी या नहीं । इसीलिए वह लोग संकोच कर रहे हैं । सबके मन में यह घुटन कब तक बनी रहेगी ? अब तो इसको समाप्त करना है । उनकी इच्छा का जो भी रूप हो । अब उसे उनके सामने रखना है । आज मैं भरत से कहता हूँ कि वह सारे समाज को एकत्र कर लें । और

अपने मौन को त्याग कर सबके सम्मुख अपने हृदय के भाव को प्रकट करें।

(15) अभी-अभी ......... विपदा सारी।

शब्दार्थ—धरा–earth। अम्बर–sky। नीड़ों–nests। तरु–tree। समीर–air। चारु–beautiful। हृदय–heart। स्वीकार—accept।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि अभी-अभी सन्ध्या समाप्त हुई थी और रात्रि का प्रथम प्रहर शुरू हुआ था। पृथ्वी शान्त थी, दिशाएँ शान्त थीं और आकाश भी शान्त था। पक्षी अपने घोसलों में ध्यान मग्न थे। और कोई भी शब्द सुनने के लिए वृक्ष अपने कान लगाये हुए खड़े थे। आकाश अपनी तारों रूपी आंखों से नीचे की ओर देख रहा था। मन्दाकिनी के विस्तृत मैदान में एक बड़ी सभा लगी हुयी थी। जिस में ऋषि के साथ राज परिवार के लोग बैठे हुए थे और उनके पीछे सारी जनता बैठी हुई थी। सब लोग शान्त मौन मूर्ति के समान बैठे हुए थे। लेकिन सब के मन में परिणाम जानने की बड़ी तीव्र इच्छा थी। उस समय पवन भी बहुत शान्त था जिससे पीपल का पत्ता भी नहीं हिल पा रहा था तब सब को सम्बोधित करते हुए गुरू वशिष्ठ ने कहा–हम सब लोग अयोध्या से चित्रकूट आये और राम से मिले। इससे हम सब को बहुत सुख मिला। यहाँ की सुन्दर चित्रों वाली प्रकृति रूपी नायिका ने हम सब के मन को मोह लिया है। हम सब लोग वन के कष्टों को सह रहे हैं इस बात की राम को बहुत चिन्ता हो रही है। राम अपने स्वजनों की परेशानी से बहुत व्याकुल हो रहे हैं। इसके साथ ही उनको अयोध्या के लोगों की याद सता रही है। इसलिये अब यही उचित होगा कि भरत अपने यहाँ आने का उद्देश्य बता दें। जिससे उनकी समस्या को सुलझाने का कोई उचित उपाय निकल आये।

यह सुन कर भरत हाथ जोड़ कर खड़े हो गये। इस समय उनका हृदय बहुत दुखी था। उनका गला रुद्ध हो गया और उनकी आंखें भर आयीं। उन्होंने कहा हमारी प्रार्थना है कि, गुरू वशिष्ठ ही मेरे भावों को उचित शब्दों में अभिव्यक्त करें जिससे हम सब अयोध्या वासियों की इच्छा

पूरी हो सके। तब ऋषि ने कहा–अयोध्या के राजभवन में अचानक जो घटना घट गयी है उससे भरत के मन में एक काँटा सा चुभ रहा है। भाई का वनवास, पिता का मरण तथा माता का आचरण इन सब बातों का विचार जब भरत के मन में आता है तब वह पश्चाताप से गल जाते हैं। भरत बहुत भावुक हैं वह हर बात का कारण स्वयं को ही समझते हैं। यदि स्वप्न की भाँति हर बात को भूल जाते तो कितना अच्छा होता। वह स्वयं राज्य के अधिकारी बनें यह बात उनको स्वीकार नहीं है। भरत चाहते हैं कि राम अयोध्या लौट चलें। जिससे उनकी सारी मुसीबतें दूर हो जायें।

(16) चौंकें राम··· ·········जलन मिटाऊँ।

शब्दार्थ—अनुसार—according। घटनायें—events। सम्बन्ध—relation। पावन–virtue। आज्ञा—order। हृदय—heart। कर्तव्य—duty। वन—forest। सेवा—serve।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि अयोध्या लौटने की बात को सुन कर राम चौंक उठे। और उन्होंने भरत से कहा, क्या ये तुम्हारे भाव हैं? तो फिर विना विश्वास के हमारा शुद्ध चरित्र कैसे बच पायेगा? संसार में तो विधि-विधान के अनुसार घटनायें घटती ही रहती हैं। व्यर्थ में उनसे अपने को जोड़ कर हम क्यों दुख उठायें? मुझे वनवास मिला है या पिता की मृत्यु हुई है। माँ की ममता से अयोध्या में जो घटना घट गयी है। इन सब बातों से भरत का क्या सम्बन्ध है? भरत तो अग्नि के समान पवित्र है। पवित्रता की खान के समान पवित्र अग्नि तो शव को शिव के रूप में परिणति कर देती है। भरत ऐसा क्यों कहते हैं कि उनको राज्य स्वीकार नहीं है। राज्य क्या अधिकारों की माया है? उसमें तो जनता की सेवा करने का महान अवसर समाया हुआ है। राम अयोध्या लौटेंगे तो क्या इससे पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं होगा? ऐसे विचार भरत के मन में क्यों उठे हैं? और भरत का मन इतना भयभीत क्यों है? भैया भरत तुम्हें जो कुछ भी कहना हो वह तुम स्वयं कहो। इस प्रकार

से दुखी होकर भावों में बहना उचित नहीं है। तब भरत अपने हृदय के आवेग को रोक कर बड़े साहस से बोले, (इस समय भरत ने अपने हृदय की भावनाओं को पूर्णरूप से व्यक्त कर दिया) भरत ने कहा अभी जो कुछ भी हमने सुना है वह मैं पहले से ही समझ रहा हूँ। इस समय किस का क्या कर्तव्य है ? यह भी मैंने भली प्रकार से सोच और समझ लिया है। लेकिन मैं क्या करूँ ? मैं कैसे अपने मन को समझाऊँ ? आप वन में मारे-मारे घूमें और मैं राज समाज को सजाऊँ ? यह मैं सहन नहीं कर सका तभी मैं चित्रकूट में आया हूँ। यहाँ आप के वचनों को सुनकर मुझे बहुत संतोष मिला है। इसके साथ ही मुझे आपका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद भी मिला है। मेरा आप से इतना ही अनुरोध है कि भाई लक्ष्मण अयोध्या को लौट जायें और मैं वन में रहूँ। मैं आपके साथ वन में रह कर आपकी कुछ सेवा करूँ। जिससे मैं अपने दुख को मिटा सकूँ।

(17) खड़े हुए शत्रुघ्न ..............राजभवन को।

शब्दार्थ—समय–time। जग–world। राज्य–kingdoom। दृग–eye। सम्मुख–front। विपिन–forest। अन्तिम–last।

व्याख्या–प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि अचानक शत्रुघ्न उठ कर खड़े हो गये जिससे सब की दृष्टि उन्हीं की ओर घूम गयी। कभी न बोलने वाला शत्रुघ्न भी कुछ बोलेगा यह किसी ने कल्पना में भी न सोचा था। शत्रुघ्न ने कहा–कभी-कभी ऐसा समय आ जाता है जब आदमी को कहना ही पड़ता है। वह चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा लगे। मैं कहता हूँ यह सारा राजतंत्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाये जिसने स्वार्थ में अन्धे होकर सारे संसार में पाप के जाल को फैला दिया है। अयोध्या की जनता स्वयं अपने राजा का चुनाव कर लेगी। और वही वहाँ पर राज्य करेगा। हमेशा एक ही राजवंश का शासन बना रहे-यह प्रथा अब नहीं चलेगी ! अयोध्या की जनता स्वयं अपनी आँखों से राजवंश की बुराई को देख चुकी है। उसने देख लिया है कि स्वार्थ के सामने नीति और न्याय भी ढीला हो जाता है। ऐसी अनीति और अन्याय पर टिकी यह राजसी सत्ता समाप्त

हो जाय और उसके स्थान पर प्रजातंत्र ही चले। यह अच्छा हो। इस जाग्रत जगत में अब जनमत की महत्ता ही बढ़ती जा रही है। भाई राम और लक्ष्मण वापिस न लौटें। परन्तु हम चारों ही जंगल में रहें। तथा राज्य, राजवैभव और राजभवन को सदा के लिये अन्तिम प्रणाम कर दें।

(18) हँसे राम……………प्रजा से जो धन।

शब्दार्थ—दोनों—both। विधि—god। अब—now। पथ—way। किन्तु—but। जग—world। गरल—poison। स्वयं—self।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि शत्रुघ्न की बात सुन कर राम हँस पड़े और बोले कि गणपति या राजा में कोई भेद नहीं होता है। यदि मनुष्य का मन दुर्बल होता है तो अधिकार का मद उसे सब जगह पर छलता है। यदि मन संयमी नहीं होता है तो राजा और गणपति दोनों अन्यायी बन जाते हैं। भोली जनता हमेशा यही देखती आयी है। हमारे ऊपर अब जो जिम्मेदारियाँ आ पड़ी हैं उनको हमें पूरा करना है। भगवान ने जिस खेल को बिगाड़ दिया है उसको अब हमें बनाना है। हम कर्तव्यों से अपना मुँह मोड़ ले यह ठीक नहीं है और भावों के आवेश में बह कर हमें अपना मार्ग नहीं छोड़ना नहीं है। लेकिन शंकर के बिना इस संसार में विष पीने वाला और कौन है? जो कदम-कदम पर कठिनाइयों को झेलता हुआ अपने जीवन को व्यतीत कर रहा है वह कठिनाइयों को झेलते हुए भी अपने चेहरे पर परेशानी के भाव को नहीं आने देता है। तथा जो अपनी समस्त वासनाओं को जला कर आनन्दवान रहता है वही मनुष्य संसार का कल्याण करता है उसी को शिव की शिवता कहा जाता है। सफल शासक वही होता है जो पहले स्वयं पर शासन करता है और प्रजा से प्राप्त धन को प्रजा की भलाई के लिए ही खर्च करता है। अर्थात प्रजा के सदुपयोग में धन लगता है।

(19) राजनीति में नीति…………निकट दिया है।

शब्दार्थ—सहायक—helper। समान—like। विशेष—special। आदर—respect। स्वागत—welcome। पूर्ण—full। शासन—rull।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि राजनीति में नीति मुख्य होती है। प्रीति और विश्वास तो उसके सहायक हैं। न्याय की दृष्टि में सब समान होते हैं चाहे वह नायक हों या सेवक हों। दीन और अपाहिज सदैव सेवा के अधिकारी होते हैं अर्थात गरीब और अपंगों की हमेशा सेवा करनी चाहिए। बालक, वृद्ध और स्त्री का सदैव सम्मान होना चाहिए। समाज में जो लोग नीच माने जाते हैं उनके स्वाभिमान को कभी भी ठेस नहीं पहुँचनी चाहिए! गुरुजन और गुणी लोगों का सब जगह स्वागत चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि भरत के सुन्दर शासन में जनता वह सुख पायेगी जो मनुष्य को बहुत ही भाग्य से मिलता है। मेरे लिए जो चौदह वर्ष हैं वह भी जल्दी ही बीत जायेंगे। आज जो दुख के बादल घिरे हुए हैं वह भी जल्दी ही दूर हो जायेंगे। मैं वन में रह कर पिता की आज्ञा का पालन करूँ और तुम अयोध्या में रह कर प्रजा का पालन करो और घर पर माताओं की सेवा करो। भरत कुछ कहें इसके पहले ही ऋषिवर वशिष्ठ जी बोल उठे कि मैं इस निर्लोभ की कल्याणकारी गंगा को देख कर बहुत गदगद हो गया हूँ। राज्य वह चीज है जिसकी प्राप्ति के लिए संसार में क्या-क्या नहीं हो गया है। राज्य को पाने के लिए मनुष्य ने ऐसा कौन सा पाप है जिसको नहीं किया है। राज्य के लिये मानव ने लोभ की सीमा का उल्लंघन किया। और राज्य के लिए ही बड़ी-बड़ी भयंकर खून की नदियाँ बही हैं। वही राज्य इस चित्रकूट में गेंद के समान बना हुआ है। जिसको भरत और राम एक दूसरे के प्रति फेंकने के लिए अपने पास आने दिया है।

(20) लोभ अवध············भरत से आई।

शब्दार्थ—इच्छा—wish। सदा—always। जगत—world। धरती—earth। ध्वनि—sound। किन्तु—but। भाई—brother।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि अयोध्या का लोभ चित्रकूट आकर त्याग बन गया है। ईर्ष्या, द्वेष और क्रोध तीर्थ में आकर प्रेम बन गये हैं। राम! इस संसार में हमेशा तुम्हारी ही इच्छा पूरी हो। भरत

में भ्रात-प्रेम की शुद्ध महानता सदैव इसी प्रकार छलकती रहे ! राम-भरत के भ्रात-प्रेम की झाँकी कितनी सुन्दर है। हे भगवान ! इस सुन्दर झाँकी की आभा प्रत्येक मनुष्य के मन में समा जाये ! यह कह कर ऋषि चुप हो गये और सारी सभा प्रसन्नता से चिल्ला उठी कि राम-भरत से भाई पाकर यह धरती धन्य हो गयी है। सरिता के प्रवाह की कलकल ध्वनि में भी यही ध्वनि समायी हुई थी कि भाई का प्रेम धन्य है और राम-भरत से भाई धन्य हैं। वहाँ की सुखदायक वायु ने चारों ओर घूम-घूम कर अपनी पवित्र सुगन्ध फैलायी और कहने लगा कि राम-भरत से भाई सदैव इस संसार में स्नेह की रक्षा करते रहे। सभा समाप्त हो गयी लेकिन फिर भी चारों ओर यही सुनायी पड़ रहा था कि भाई हो तो इस पृथ्वी पर राम-भरत जैसे भाई हों।

(21) बीत रही थी ............कब जाने।

शब्दार्थ—वन–forest। पवन–air। प्रश्न–question। समस्या–problem। अब—now। चिन्ता—worry। प्रात—morning। रवि—sun। अनुसार–according।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि रात समाप्त हो रही थी। चारों दिशायें शांत थी और सारा वन शान्त था। केवल वायु धीमी गति से सबको सहलाती हुई बह रही थी। अब तक जो प्रश्न विकट समस्या बन कर सबके मन को मथ रहा था। वह निश्चय की पवित्र वेदी पर चढ़ कर सुलझ गया था। अनिश्चय सदैव मनुष्य को उत्तेजित करता और शंका मन में भ्रम उत्पन्न कर देती है चाहे कैसा भी निर्णय हो। लेकिन उससे मन को स्वस्थता और स्थिता मिल जाती है। चित्रकूट में जो निर्णय हुआ था उसका महत्व बहुत ऊँचा था। उस निर्णय के सामने हिमालय का सर्वोच्च शिखर भी नीचा लग रहा था सब लोग बड़े शान्त मन से सो रहे थे। अब किसी को कोई भी चिन्ता नहीं सता रही थी। रात भी सब को रात भर स्नेह से थपथपा कर सुलाती रही। सबेरा होते ही चारों ओर सूर्य का प्रकाश फैल गया। जिससे दिन की माया प्रकट हुई। और

चित्रकूट ने अपनी रंगबिरंगी तस्वीरों से सब जगह रंग जमा लिया। सब लोग अपनी-अपनी पसंद के अनुसार अपना समय बिताने लगे। उनको ऐसा सुख संतोष न जाने कब मिलेगा ?

(22) चारों राज वधू ......... रही दुलारी।

शब्दार्थ—नीचे–under। मुझे—to-me। कपि–monkey। पुरुष–man। पूछ–tail। नारी–woman। सभी—all।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि चारों राजवधू एक घने पेड़ के नीचे आकर बैठ गयीं। और अपने दुख-सुख की बातें करने लगीं! उर्मिला ने बहू की लाज शरम को छोड़ कर बड़े ही सहज भाव से कहा कि मुझे तो यहाँ पर बन्दरों का खेल सबसे अधिक अच्छा लगा। एक बन्दरी वानर की पूछ को पकड़ कर नीचे खींच रही थी और वानर अपने को ऊपर की ओर खींच रहा था। इस खेल में दोनों को बहुत ही अधिक आनन्द आ रहा था। यह सुन श्रुति हँस पड़ी और बोली, लेकिन पुरुष के पूंछ नहीं होती है और यदि पुरुप के पूंछ होती तो क्या नारी उस को पकड़ कर प्रसन्न होती ? श्रुति का यह परिहास सुन कर सब को हँसी आ गयी। उर्मिला इस मधुर संकेत को समझ कर लज्जित हो गयी। तब सीता ने कहा, हमारी उर्मिला तो बचपन से ही बड़ी चंचल है। पिता जी इसको "बन्दरी" कहा करते थे। यह सब की बहुत दुलारी थी।

(23) होकर अति गम्भीर ......... वाणी भोली।

शब्दार्थ—सार—element। आत्मज—son। प्रयत्न—try। घर—house। किन्तु—but। वन—forest। साथ—with।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि मांडवी ने बहुत गम्भीर होकर प्रसंग को मोड़ दिया और कल चित्रकूट में जो निर्णय हुआ था उसकी बात करने लगी। वह कहने लगी कि कल दिन भर जो पंचायत हुई थी उसका यही नतीजा निकला है कि जब पिता ने अपने वचन का पालन किया है तब पुत्र को भी पिता के वचनों का पालन करना चाहिए। यही उचित है। इनका अर्थात भरत का आग्रह तो अब नहीं

माना गया है और बड़े भाई की जीत हो गयी है। जब दादा ही नहीं लौट रहे हैं तब जीजी के लौटने की बात ही नहीं उठती है। मेरा कहना है कि यदि जीजी को अच्छा लगे तो कोशिश करके सब लोग लक्ष्मण को लौटने के लिये मना लेवें। क्योंकि उन पर तो राजा की आज्ञा का भार नहीं है इसलिये वह घर को लौट चलें। और राजकाज में सहायक बन कर सब को सहारा दें। यह सुनकर श्रुति ने कहा कि तुम्हारा विचार तो बहुत अच्छा है लेकिन इसमें एक बहुत बड़ी दुविधा है दादा वन में अकेले रहेंगे तो क्या उनको असुविधा नहीं होगी ? इस पर सीता ने कहा यदि हमको वन में कष्ट होगा तो हम उसको सहन कर लेंगे। देवर यदि घर को लौट जायें तो बहुत ही अच्छा होगा। लेकिन देवर को इसके लिए समझाना बहुत मुश्किल है। मांडवी ने कहा तो इसका एक तरीका मेरे पास है कि वन में उर्मिला भी उनके साथ रहे। इससे जीजी को बहुत सुख मिलेगा। यह सुनकर अचानक उर्मिला बोल उठी कि लेकिन इसमें मुझे बहुत दुख होगा। छोटी बहन उर्मिला की यह बात सुनकर सब चौंक पड़ीं। उसकी बात बहुत भोली थी लेकिन उसकी बात में दृढ़ता थी।

(24) चौदह वर्षों............दिन और बिताये।

शब्दार्थ—चौदह वर्षों—fourteen year। दृग—eyes। किन्तु—but। आँसू—tears। अवसर—chance।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में उर्मिला कहती है कि जब मैंने उनको चौदह वर्षों के लिए विदायी दे दी है तब उनको लौटाने की चर्चा व्यर्थ में ही चलायी जाती है। मुझ को केवल यही दुख है कि मातायें हम को देख कर अपनी आँखों में आँसू भर लेती हैं और हमारी बहनें तथा सखी सहेली हमारे सामने सहमी सी रहती हैं। मुझ को मालूम है कि वियोग में नारी का जीवन सूना हो जाता है और यह भी मालूम है कि विवशता से ही दुख दुगुना हो जाता है। लेकिन जब किसी ऊँचे आदर्श के लिये स्वयं ही दुख को स्वीकार किया जाता है। तब भले ही बाहर वह आँसू बहाने वाला भयंकर लगे लेकिन हृदय के अन्दर वह सुख देने वाला बन जाता

है। यहाँ पर आकर मुझे अपने पति का दर्शन मिल गया है और हमने उनकी चरण-धूलि को अपने सिर पर चढ़ा लिया है। यही मेरे लिए बहुत है। क्यों कि इस की मुझे कोई आशा नहीं थी। यह सब मैंने बड़े ही भाग्य से पाया है। मेरे सामने चाहे जितने भी कष्ट आयें मैं सब को सहन कर लूंगी। लेकिन मेरी इच्छा है कि वे यहाँ पर रह कर भ्रात-प्रेम के पवित्र आदर्श को निभायें। मैं तो प्रतिदिन दयनीय दशा वाले दुखों को सहकर हँसती ही रहूँगी। उनके यश की चाँदनी सब जगह फैलती रहे ? और मैं उसे अपने आँचल में भरती रहूँ। अब मुझको माताओं की सेवा करने का भी बहुत समय मिला करेगा और मुझको सब का स्नेह मिलेगा। जिससे मेरा जीवन रूपी दीपक निरन्तर जलता रहेगा। अब उठो चलो। इस प्रसंग को छोड़ो क्यों कि इसमें कोई तत्व नहीं है। यह कह कर वह इस प्रकार से खड़ी हो गयी जैसे उसके मन में कोई चिन्ता का भार ही नहीं है। उसी समय सीता ने उठ कर उर्मिला को आलिंगन में खींच लिया और प्रेम से पाली हुई लेकिन मुरझायी हुई उस वेल को स्नेह रूपी जल से सींच दिया। चित्रकूट में सब के दिन और रातें बड़े आनन्द से बीत रही थीं। राम-भरत की बातें उनके आनन्द में अमृत घोल रही थी। जिस बात के लिये सब लोग यहाँ पर आये थे उसका निर्णय हो चुका था। फिर यहाँ से जाने का विचार किसी को भी अच्छा नहीं लग रहा था। सब की यही इच्छा थी कि राम के साथ रह कर अधिक से अधिक जीवन का सुख पाये और चित्रकूट की सुन्दर कुटी में रह कर कुछ दिन और बिताये।

## पंचम सर्ग

(1) राम न लौटेंगे..........गिरि मालायें।

शब्दार्थ—जन–people। रम्य--beautiful। यदि–if। प्रकृति–nature। सम्भव–possible। गिरि—mountain।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि यह जानकर राम अयोध्या नहीं लौटेंगे। लोग अब उतने अधिक दुखी नहीं थे। सच्चाई यह है कि वे भ्रात-प्रेम की महत्ता को देख कर बहुत आनंदित हो गये थे। सब

के मन में अब यह विचार उठ रहा था कि चित्रकूट से अयोध्या जाना होगा और इस सुन्दर भूमि को छोड़ देना पड़ेगा । इस बात का सबके मन में बड़ा पेछतावा हो रहा था । सब सोच रहे थे कि यदि अयोध्या यहीं पर आ जाती तो यह समस्या कितनी आसानी से हल हो जाती । अपनी सरयू नदी मंदाकिनी से मिलकर अपना सौभाग्य मानती या चित्रकूट ही सब के साथ अयोध्या चला जाता । जिस से सारे मनुष्यों को सुन्दर प्रकृति की सुन्दर गोदी का सुख घर में ही मिल जाता । लेकिन यह सम्भव नहीं है । अतः हम जितना यहाँ रह सकें रह लें । और ऋषियों मुनियों की सत्संगति का जी भर के लाभ उठा लें । अभी अत्रि मुनि और अनुसूया से मातायें नहीं मिली हैं । और अभी नगरवासियों ने यहाँ की सुन्दर गिरि मालायें भी नहीं देखी हैं ।

(2) वन-विहार के......................लिपट झपट मनमाने ।

शब्दार्थ—अधूरी–incomplete । परिक्रमा–round । पावन–virtue । थली–earth । सदन–house । सीमित–limited ।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि वन-विहार के बिना हमारी-यात्रा अधूरी रह जायेगी । यहाँ पर जब कामगिरि की परिक्रमा पूरी की जाती है तभी सच्चा सुख मिलता है । यह गंगा नदी भी स्वर्ग की गंगा के समान पवित्र और सुन्दर है इसका पानी स्वच्छ शिलाओं के बीच में कलकल करता हुआ बहता है । ऐसे सुन्दर स्थान पर कुछ दिन और बिताने का मौका मिल जाय । यहाँ पर सब को राम का सत्संग और जीवन का फल मिल रहा है । सब लोगों में यही बातें हो रही थीं इनको शत्रुघ्न ने सुन लिया । तो उन्होंने भरत से कहा—कुछ दिन हम लोग और यहाँ पर रुक कर वन की शोभा को क्यों न देख लें ! बार-बार यहाँ पर आना नहीं होता है । इस पर्वत और वन का भ्रमण भी बड़ा सुखदायी है । यहाँ की प्रकृति में जैसी शान्ति मिल रही है । वैसी घर में कहाँ मिल सकती है ? यह सुन कर भरत ने कहा—हे भाई शत्रुघ्न, तुम्हारा प्रस्ताव बड़ा सुखदायक है । इसके लिए पहले हम राम से अनुमति ले लें । फिर

हमारा कार्यक्रम बने। इसी समय अचानक राम वहाँ पर आ पहुँचे। इससे उनको बहुत अच्छा अवसर मिल गया। शत्रुघ्न ने बहुत ही विनीत भाव से राम को अपना प्रस्ताव सुनाया। राम ने कहा जैसी तुम्हारी इच्छा। लेकिन यह काम थोड़े ही दिनों में हो जाना चाहिए क्योंकि वनवास में माताओं को बड़ा कष्ट होता है। इस समय शत्रुघ्न का सुख बड़ा असीम था। क्योंकि उनको अपना मनचाहा मिल गया था। वह तुरन्त बालकों की चंचल गति से सीता के पास जा पहुँचे। और बोले हे भाभी! अब माताओं बहनों को वन का दृश्य दिखाओ। और वन की भोली कोलिन और किरातिनों से भी इनकी मुलाकात कराओ। अत्रि मुनि का आशीर्वाद पाकर ये माताएँ प्रसन्न हो जायेगी। और ये विवाहिता राज वधुंए कुंड के ठंडे पानी में नहा कर शीतल हो जायेंगी। मैं अन्य सब को लेकर पर्वत का शिखर दिखाने जाता हूँ। जिस शिखर के साथ लिपट कर बादल मनमाने खेल खेलते हैं।

(3) चित्रकूट की पावनता ............... इतनी जल्दी जाते।

शब्दार्थ—नयनों–eyes। अदभुत–wonderfull। स्वर्ण अवसर—golden chance। दृश्य–seen। पथ–way। परिचय–introduction। स्वभाव—habit। तट—bank। क्यों–why।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि चित्रकूट की पवित्रता में सबका मन लगा हुआ था। और सबकी आँखों में प्रकृति के सुन्दर दृश्य का अदभुत आकर्षण छा गया था। उस सुन्दर प्रकृति को छोड़ कर जाने का मन किसी का भी नहीं हो रहा था। क्योंकि सब को जो यह स्वर्ण अवसर मिला था उसको छोड़ने की किसी की इच्छा नहीं हो रही थी। सीता माताओं को साथ लेकर इधर-उधर घूमने जाती थीं। वह उनकी भेंट मुनि पत्नी अनुसूया से कराती थीं और उनको वन के सुन्दर दृश्य दिखाती थीं! वह मार्ग में आने वाली बेलों और झाड़ियों के नाम बताती थी तथा जड़ी बूटियों का परिचय देकर उनके गुण-धर्म भी बताती थी। वह वन में रहने वाले विविध पक्षियों के स्वभाव का वर्णन

करती थी और उनकी अदभुत बातें कहती थी। कभी-कभी वह खेल-प्रिय बन्दरों के दाँव पेंच की बातें बड़े आनन्द से कहती थी। सीता की बातों को सुन कर माता कौशल्या बहुत प्रसन्न होती थी और प्रसन्नता भरी वाणी में कहती थी। "मेरी भोली बहूरानी वन में आकर कितनी चतुर हो गयी है।"

लक्ष्मण के साथ शत्रुघ्न वन में घूमने जाते और उनके साथ कठिनाई भरे उतार-चढ़ाव के मार्ग को देखते थे। पर्वत में गिरने वाले झरनों की की झर-झर और कल-कल की ध्वनि को सुन कर वह अपने मन को रोक नहीं पाते थे। और झरते हुए पहाड़ी झरने के नीचे बैठ कर नहा लेते थे। बहुएँ अक्सर मंदाकिनी के तट पर जाकर बैठा करती थीं। और पानी में उछलती कूदती मछलियों को देख कर आनन्द से रोमांचित हो उठती थीं। अयोध्या से आये हुए सभी लोग अपने-अपने ढंग से आनन्द मना रहे थे। इस आनन्द में उनको यह नहीं पता चल रहा था कि इतनी जल्दी दिन कैसे बीत रहे थे।

(4) विनत भरत ने..................पथ दर्शक निश्चय !

शब्दार्थ—अभिलाषा—wish। पथ—way। भ्राता—brother। वृक्ष—tree। लोचन—eye। शीतल—cold। सभा—court।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में भरत ने बड़े ही विनीत भाव से राम से कहा कि अत्रि मुनि बहुत ज्ञानी पुरुष हैं। मेरी इच्छा है कि हम उनके पास चल कर उनकी अमृतमय वाणी को कुछ देर तक सुनें। जब राम-भरत जैसे भाई मार्ग पर चले तो वह मार्ग धन्य हो गया। मार्ग के वृक्ष झूमने लगे और पक्षीवृन्द भी रह-रह कर मधुर गीत गाने लगे। एक ही रूप वाले राम-भरत की आकृति को देखकर सब लोगों की आँखें चकित हो रही थीं। मार्ग में चलने वाले मुसाफिर उन्हें देखकर चकित और भ्रमपूर्ण मन से देखते हुए खड़े रह जाते थे। जब भरत अत्रि मुनि के आश्रम के समीप पहुँचे तब वहाँ पर उन्होंने सुन्दर दृश्य देखा। उसे देख कर उनको ऐसा लगा जैसे प्रकृति ने अपनी सारी सुन्दरता वहीं पर एकत्र कर दी है।

आश्रम के पीछे एक बड़ा पहाड़ आश्रम को छाया देता हुआ है और वनराजी के बीच में शुद्ध जल से भरा हुआ एक कुंड लहरा रहा है। गंगा नदी के किनारे यह आश्रम सबकी थकावट को दूर कर देता है। और भक्तों के भावनापूर्ण मनों में आनन्द भर देता है। जब अत्रि मुनि ने यह सुना कि राम आ रहे हैं तब वह जल्दी से बाहर आये। राम भरत ने उनके चरणों की वन्दना करके मुनि का आशीर्वाद प्राप्त किया। मुनि ने कहा कि मुझको सभा का निर्णय पता लग गया है और तुम्हारा यह निर्णय उच्च आदर्श को प्रस्तुत करने वाला तथा जनता मार्ग दर्शक होगा।

(5) राम तुम्हारा………… बीच घिरा है।

शब्दार्थ—जग–world। सेतु–bridge। नभ–sky। मात्र–only। अब–now। हृदय–heart। सदा–always। जीवन–life।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि हे राम! तुम्हारा चरित्र संसार में धर्म का पुल बनेंगा और भरत का भ्रात-प्रेम आकाश में ध्वज के समान फहराता रहेगा। संसार में केवल धर्म का आचरण ही आदर्श कहलाता है। त्याग रूपी नदी के बिना प्रेम का कमल और कहाँ खिल सकता है? राभ ने कहा, भरत को यहाँ पर आये हुए कई दिन बीत गये हैं। और उनके साथ आये हुए सभी व्यक्ति प्रकृति के मनचाहे सुन्दर दृश्य देख चुके हैं। मैं नहीं चाहता कि मातायें अब वन का कष्ट उठायें और भरत अयोध्या जाकर प्रजा के रुके हुए कामों को पूरा करें। जाने से पहले भरत आपके दर्शन करने के लिये आये हैं। हम दोनों आपके चरणों में प्रणाम करके और आशीर्वाद पाकर धन्य हो गये हैं। भरत चाहते हैं कि वह आपसे कुछ धर्म कर्म की बातें सुनें। जिनको सुन कर मनुष्य अपने कल्याण और लोगों के प्रेम का भागी बनता है। मुनि ने कहा कि भरत का आचरण सदैव धर्म से सीमित है और मानव के आचरण में ही उसके धर्म का प्रतिबिम्ब दिखायी पड़ता है। मनुष्य के मन में जैसे भाव होंगे उसी प्रकार के उसके काम भी होंगे। अच्छे काम ही संसार के लिये धर्माचरण बन जाते हैं। यदि धर्म को आचरण में न

उतारा गया तो वह धर्म न होकर "धर्म का भ्रम" बन जाता है। फिर बाहरी दिखावे के रूप में अधर्म ही पलता रहता है। दूसरों को पीड़ित करने में पाप है और दूसरों का उपकार करने में पुण्य है। समस्त प्राणी मात्र का कल्याण इसी धर्म की सीमा में स्थित है।

(6) अक्षय कोष............मधुरस से सींचेगा।

शब्दार्थ—उर–heart। नर–man। वसुधा–earth। कुटुम्ब–family। केवल–only। दंड–punishment।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि मानव के हृदय में स्नेह का ऐसा शक्तिशाली अक्षय खजाना भरा हुआ है वह यदि सारी पृथ्वी को अपने कुटुम्ब के रूप में समझ कर अपना स्नेह बाँटे। तो भी वह खत्म नहीं हो सकता है। इस प्राणी जगत में मानव ही सर्वोत्तम प्राणी है जिसके हृदय में सदैव सत्य, प्रेम, और करुणा की त्रिवेणी बहती रहती है। मेरे मतानुसार नीतिशास्त्र का यही उपयोगी धर्म है। बुद्धिमान लोगों ने और सन्तों ने भी इसी को उचित कहा है संसार में केवल मानव-धर्म ही मुख्य है। बाकी सब कुछ तो भ्रम है। सबके साथ प्रेम दुलार से व्यवहार करना यही धर्म का काम है। किसी अन्यायी को दंड देना भी धर्म है। क्योंकि यदि बुरे मनुष्यों को दंड नहीं दिया जायेगा तो समाज में अधर्म बढ़ेगा। भरत ने कहा कि गुरुजन का स्नेहपूर्ण आशीर्वाद ही सर्वत्र फलदायी होता है। उनकी कृपा दृष्टि के बिना संसार में सारे कार्य विफल हो जाते हैं। तपस्या से पवित्र और ऋषि-मुनियों के पद चिन्हों वाले इस पवित्र चित्रकूट के स्थान पर आकर प्रत्येक व्यक्ति को अनुपम शान्ति का अनुभव हुआ है। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य मन को मोहित कर लेता है। जो यहाँ पर आ जाता है वह यहाँ से जाने की इच्छा नहीं करता है। चित्रकूट का यह सौन्दर्य भावनाशील व्यक्ति के मन को युगों-युगों तक आकर्षित करता रहेगा और प्यासे कंठवालों को अपने मधुर रस से सदा सीचता रहेगा।

(7) तब मुनि ने.................... सुझाव अति भाया।

शब्दार्थ—शुचि—virtue। रम्य—beautiful। जल—water। किन्तु—but। कुम्भ—pitcher। उपयोग—use। कूप—well।

व्याख्या:—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि तब मुनि ने उनको पवित्र चित्रकूट को अत्यधिक महिमा सुनायी। और यह भी बताया कि गोदावरी यहाँ तक कैसे आ गयी है। मुनि ने उनको चित्रकूट के सुन्दर स्थलों का भी परिचय दिया। और बताया कि मंदाकिनी का जल कितना पाप नाशक है। वहाँ पर बड़ी देर तक अनेकों विषयों से सम्बन्धित चर्चा चलतीं रही। इतने में अनसूया भी पूजा-पाठ करके वहाँ पर आ गयी! राम-भरत ने उनके चरणों में सिर झुका कर वन्दन किया और सती ने उनको आशीर्वाद के साथ प्रसाद भी दिया। भरत ने कहा कि मैं तो एक बहुत बड़ी इच्छा लेकर चित्रकूट आया था लेकिन विधि के विधान ने यहाँ पर मेरे सारे कामों को बदल दिया! मैं राजतिलक के लिए घड़े में तीर्थों का जल लाया था। लेकिन अब उसका क्या उपयोग होगा? यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है। ऋषि ने कहा यहाँ से कुछ दूरी पर एक सुन्दर कुँआ है वहाँ पर घने वृक्षों की छाया भी है जो बहुत सुखदायी शीतल और मनोहर है। मेरा कहना है कि इस तीर्थ जल को उसी कुँए में डाल दिया जाय और भरत के यहाँ आते के उपलक्ष में इसको "भरत कूप" का नाम दे दिया जाये। राम ने प्रसन्न होकर "अच्छा है अच्छा है" कह कर अपना संतोष व्यक्त किया। यह सुझाव शिष्यों को तथा अनसूया को भी बहुत पसंद आया।

(8) मन करता था………………गया है भोगा।

शब्दार्थ—अनुमति—permision। रजनी—night। कुछ—some। अब—now। कहाँ—where। यहाँ—here।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि किसी का आश्रम छोड़ कर कहीं भी जाने का मन नहीं होता था लेकिन भला कभी किसी के मन के संकल्प पूरे हो पाये है। माता के समान अनसूया से मंगलकारी आशीर्वाद लेकर और मुनिवर से अनुमति लेकर और उनको प्रणाम करके राम

अपने निवास की ओर लौट पड़े। जिस प्रकार से रात होने के पहले सन्ध्या घिर आती है। उसी प्रकार से मनुष्य के मन में वियोग होने से पहले दुख की छाया छा जाती है। न चाहते हुए भी वहाँ से जाने का दुख पूर्ण समय आ गया उस समय प्रत्येक मनुष्य के मन की दशा कुछ विचित्र सी हो रही थी। अब फिर राम का वियोग होगा यह बात सबके मन में काँटे की भाँति चुभ रही थी। मिलन के बाद हमेशा ही वियोग का कठिन दुख सहना पड़ता है। चित्रकूट को छोड़ कर जाना मन को धोखा देना होगा। यहाँ रह कर जैसा सुख भोगा है वैसा सुख अब फिर कहाँ मिलेगा ?

(9) सरिता तट पर ··· ······· पार करूँगा ?

शब्दार्थ–सरिता—river। इच्छा—wish। प्रभु—god। अवधि–period। किन्तु–but। कैसे–how। नाव–boat।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि एक बार फिर सब लोग नदी के किनारे एकत्र हुए। उस समय सब मौन थे, सबकी आँखों में आँसू भरे हुए थे और सबके मन परेशान थे। भरत कुछ बोलने के लिए खड़े हुए लेकिन दुख के आवेगों के कारण वह केले के पत्तो की भाँति हिल गये। मुख नीचा किये हुए तथा आँखों में आँसू भर कर भरत ने हाथ जोड़ कर राम से कहा—कि मेरे मन की इच्छा तो पूरी नहीं हुई। लेकिन प्रभु की इच्छा पूरी हो। अब मुझे चातक पक्षी की भाँति बादल की दूरी की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। चातक पक्षी कितना भाग्यवान है जो हर साल बादल से मिलने का सुख पाता है। लेकिन मेरा भाग्य तो चौदह वर्ष के बाद मेरे अनुकूल होगा। मेरी आपसे यही विनती है कि वनवास का समय पूरा होने से पहले ही आप इस व्यक्ति (भरत) की दशा पर विचार कर लेवें। लेकिन मेरे ऊपर अब जो राज्य का कठिन भार आ गया है उसे मैं कैसे उठाऊँगा ? मैं इस अवधि रूपी नदी को बिना किसी नाव के कैसे पार कर सकूँगा ?

(10) मिले काठ की··············शीघ्र चले हम।

शब्दार्थ—काठ–wood । स्वीकार–accept । बदल–change । केवल–only । हृदय–heart । संतोष–satisfaction । कंठ–neck । भूमि–earth । रंक–poor । अब–now ।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में भरत राम से कहते हैं कि यदि मुझे आपकी लकड़ी की खड़ाऊँ ही मिल जाय, तो मुझे उससे कुछ सहारा मिल जायेगा । वे पादुका आपकी प्रतीक बन कर अयोध्या के राज सिंहासन को सुशोभिति करेंगी । भरत का स्नेह देखकर राम की आँखों में आँसू भर आये । उन्होंने भरत के कन्धे पर हाथ रखकर समझाते हुए कहा भैया भरत। धीरज धारण करो जो सिर पर आ जाये उसे स्वीकार करना चाहिए अपने कर्तव्यों के पालन में ही हमारा कल्याण है । जीवन में सुख-दुख का क्रम तो चलता ही रहता है । यदि हम उसको स्वीकार न करे तब भी उसको कोई बदल नहीं सकता है । जिसको हम बदल नहीं सकते हैं उसको हमें भोगना ही पड़ेगा उसे चाहे हम रोकर भोगे, चाहे हँस कर भोगे । लेकिन भोगना अवश्य पड़ेगा । तब फिर हम क्यों न उसको खुशी से स्वीकार करलें । और दुख को भी सुख का रूप मान कर हम क्यों न उसको हृदय में धारण कर लें । यदि तुमको काठ की खड़ाऊँ लेकर ही संतोष होता है तो तुम्हारे लिये कुछ भी अदेय नहीं है । इसे देकर मुझे भी सुख ही होगा । इतना कहते-कहते राम का गला भर आया जिससे वह इसके आगे कुछ भी न कह सके । राम ने भरत को अपने आलिगन बाँध लिया । जिससे चित्रकूट की भूमि के भाग्य जाग उठे । आनन्द से भर कर भरत ने राम की पादुका उठा ली । उस समय वह इतने अधिक प्रसन्न थे जैसे किसी गरीब को अचानक सोने का खजाना मिल गया हो ! गुरु वशिष्ठ ने भरत से कहा कि अब हमको देर नहीं करनी चाहिए क्योंकि मार्ग में हमको बाल्मीकि ऋषि के आश्रम में भी ठहरना है । इसलिये अब हम जल्दी ही चले ।

(11) विदा समय जब......................उदधि उमड़ा था ।

शब्दार्थ—शादेश–order । समाज–society । दृग–eye । दोनों–both । अश्रु–tears । निज–own । धरा–earth ।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि विदाई के समय जब सीता जी ने सबको सिर झुका कर प्रणाम किया तब माताओं तथा ऋषियों से दीर्घकाल तक सौभाग्यवती रहने का आशीर्वाद पाया। चित्रकूट की स्मृति को अपने मन में सहज रूप से संजोकर और अपना सब कुछ यही खोकर वशिष्ठ का आदेश पाकर सब चल पड़े ! राम सबको पहुंचाने के लिये बड़ी दूर तक सबके साथ चले ! वशिष्ठ ने बार-बार उनको रोका लेकिन वह नहीं माने ! राम का यह स्नेह अनुराग देख कर सबकी आँखें भर आयी। बहुत अधिक आग्रह करने पर ही वह स्नेहमूर्ति रुक पाये थे। अन्त में आँसू भरी आँखों से भरत ने राम के चरणों में वन्दन किया और राम ने बार-बार भरत को अपनी भुजाओं में बाँध लिया। कुछ देर तक दोनों भाई मौन रहे फिर दोनों की आँखों से आँसू बहने लगे। तब राम ने अत्यन्त स्नेह भाव दिखा कर भरत को विदा किया ! भरत ने चित्रकूट की धूल को अपने सिर पर चढ़ाया। और उसको प्रणाम करके राम की पादुका लेकर अयोध्या के मार्ग पर चल पड़े जब तक वह दिखायी देते रहे तब तक राम उनको खड़े देखते रहे ! इस प्रकार से चित्रकूट ने भ्रात-प्रेम की अनुपम झाँकी पायी। वह पृथ्वी धन्य हो गयी जहाँ पर राम-भरत के प्रेम का मिलन हुआ था। और जहाँ पर धर्म ने कीर्ति के बहुत ऊँचे किनारे का स्पर्श किया था। जहाँ पर शुद्ध चरित्र के कोमल भावों का मेला लगा था और राजा के साथ प्रजा परिजन और गुरुजनों का स्नेह सागर उमड़ा था।

(12) स्नेहोदधि की ................ होता भू-पर।

शब्दार्थ—तरंगों–waves। अवधि–period। जहाँ–where। धरा–earth–जीवन–life। ध्वजा–flag।

व्याख्या—प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहता है कि स्नेह सागर की चंचल लहरों के शिखरों के ऊपर बहकर और चौदह वर्ष के कठिन वियोग की लम्बी सीमा में आने वाली पीड़ा को भी सह कर जहाँ राम की जागृत कर्तव्य चेतना दृढ़ता के साथ निश्चल बनी रही। और जहाँ पर राज्य-

लक्ष्मी भी किसी के मन को चंचल नहीं बना सकी। उस पवित्र भूमि को हम सबका कोटि-कोटि नमस्कार है। जहाँ पर धर्म की पताका फहराई और भरत का यश के यश राम से भी अधिक उज्जवल बन कर उसकी कीर्ति सब जगह फैल गयी। वह चित्रकूट हमारे लिये धर्म-भूमि है। और मानव मात्र की तीर्थ-भूमि है। वहाँ पर स्वजन का प्रेम किसी के कर्तव्य में बाधक नहीं बना है। उसने सिखाया है कि जीवन तो कर्म-क्षेत्र है जिसमें त्याग स्वार्थ से ऊपर रहता है। हमेशा परोपकार में लगा हुआ समर्पित जीवन ही इस पृथ्वी पर सफल होता है।

---

## कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न—श्री रामेश्वर दयाल दुबे जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए ?

उत्तर—श्री रामेश्वर दयाल दुबे जी का जन्म सन् 1909 ई० में मैनपुरी जिले के हिन्दूपुर नामक गाँव में हुआ था। वह स्वभाव से अत्यन्त मिलनसार, विनम्र, स्पष्टवादी, कर्मठ एवं कर्तव्यनिष्ठ हैं। उनके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक अपरिचित व्यक्ति भी उनको अपना परम आत्मीय अनुभव करने लगता है। छोटे बच्चे उनको बहुत अच्छे लगते हैं। उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं की छाया उनके साहित्य में भी दृष्टिगोचर होती है। सरल जीवन, कार्यरतता और कार्य कुशलता उनके जीवन में ओत-प्रोत है। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए दुबे जी को स्वयं प्रयत्न करना पड़ा। सन् 1933 ई० में उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद वह "साहित्य-रत्न" भी हुए। सन् 1937 ई० में वे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की सेवा में हिन्दी प्रचार प्रसार कार्य में लग गये। यहाँ दुबे जी ने अपने जीवन के दो महान लक्ष्यों की पूर्ति के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया। (1) राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार व प्रसार

(५) देवी सरस्वती की उपसना या साहित्य सृजन कार्य ! वर्धा में दुबे जी की दिन चर्या विशेष साधना मय थी वे दिन भर समिति का कार्य करते थे। और जो काम बच जाता था उसको पूरा करने के लिए शाम को घर ले आते थे। प्रारम्भ में उन्होंने राष्ट्रभाषा अध्यापन मन्दिर में अध्यापन-कार्य किया था इसके वह बाद समिति के सहायक मंत्री बने, फिर शिक्षा मंत्री बने। यहाँ पर उन्होंने चालीस वर्षों तक बड़ी लगन से समिति और राष्ट्रभाषा की सेवा की। वह समिति की प्रतिष्ठा को अपनी प्रतिष्ठा समझते थे। दिन में समय न मिलने के कारण वह रात में बहुत देर तक साहित्य सृजन का कार्य करते थे।

दुबे जी एक सफल लेखक होने के साथ-साथ एक संवेदनशील कवि भी हैं। अब तक उनकी 47 रचनायें प्रकाशित हो चुकी हैं। अनेकों रचनायें अभी अप्रकाशित हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति का परिचय कोणार्क, अगस्त्य, सौमित्र, चित्रकूट जैसी काव्य कृतियों में दिया है। भरत का तपस्वी-जीवन, त्यागशील-भावना, बलिदान वृत्ति, कर्तव्यनिष्ठा, क्षणिक आवेगों पर विजय तथा "श्रीमद् भगवद् गीता" में कहे गये "धर्म अविरुद्ध काम" की भावना एवं सर्वतोमुखी निष्ठा, ये सभी आदर्श उन्होंने अपनी रचनाओं में पात्रों के माध्यम से अत्यन्त मर्मस्पर्शिता के साथ व्यक्त किये हैं। विश्वमानव महात्मा गाँधी जी के व्यक्तित्व एवं उनके प्रभाव उनके गाम्भीर्य, स्पष्टता और सरलता के साथ मर्मस्पर्शिता आदि को वाणी देने में दुबे जी ने अत्यन्त सफलता प्राप्त की है। उनके 'कोणार्क" खण्ड काव्य पर श्री मैथिलीशरण गुप्त जी का नितांत गहरा प्रभाव दृष्टि-गोचर होता है। "कोणार्क" में गुप्त जी के नारी-विषयक संवेदनों का स्पष्ट प्रभाव चित्रित हुआ है। इसके अतिरिक्त संस्कृत-प्रचूर और संस्कृत के साहित्यिक सिद्धान्तों का अध्ययन तथा संस्कृत के अलंकारों के सत्प्रयुक्त प्रयोग भी उनकी साहित्यिक विशिष्टता है। आज कल दुबे जी अपने परिवार के साथ लखनऊ के निराला नगर में रहते हैं और स्वतंत्र साहित्य सृजन करते हैं। उनके काव्य ग्रन्थों का साहित्य-जगत में अच्छा स्वागत

हुआ है और अब भी हो रहा है। दुबे जी का जीवन-वृत्त खुले पृष्ठों वाला एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें एक कर्तव्यपरायण, निष्ठावान एवं उद्यमी व्यक्ति की कहानी है। यह कहानी सदा दूसरों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनी रहेगी।

रचनायें—दुबे जी ने अनेकों प्रकार की रचनायें लिखी है जिनमें से कुछ मुख्य है जो निम्नलिखित है :—

1. खण्ड काव्य—इसके अन्तर्गत दुबे जी ने कोणार्क, सौमित्र, नूपुर, चित्रकूट तथा पंचप्रभा आदि खण्ड काव्य लिखे हैं।

2. काव्य—इसके अन्तर्गत दुबे जी ने निःश्वास, अबोल के वोल, तथा माटी की महक आदि काव्य लिखे हैं।

3. नाटक—इसमें दुबे जी ने अगस्त्य, साची के स्वर तथा ऋतुचक्र आदि नाटक लिखे है।

4. एकांकी—इसमें "सप्तपर्ण" नामक एकांकी लिखा है।

5. कहानी—इसमें दुबे जी ने "बात तो थी, भारत की प्रणय कथाएँ" आदि कहानी लिखी हैं।

6. इसमें दुबे जी ने "महात्मा गाँधी पुरस्कार प्राप्तकर्ता, बड़े अब छोटे थे, तथा भारत के रत्न" आदि जीवनी लिखी है।

7. हास्य-काव्य—इसमें दुबे जी ने "आलूचना, पिकनिक" आदि हास्य काव्य लिखे हैं।

8. गान्धी-साहित्य—इसमें दुबे जी ने "बापू की बातें, जीवन की बूंदे, गाँधी जीवन झलक, गाँधी जीवन दर्शन" आदि साहित्य लिखे हैं।

9. बाल-साहित्य—इसमें दुबे जी ने अभिलाषा, भारत के लाल, क्या सुनी कहानी, चले चलो, मा यह कौन, कुकड़ूँ कूँ, फूल और काँटा, डंडा और बाँसुरी, उत्तर प्रदेश उत्तम प्रदेश, डाल-डाल के पक्षी, धरती के लाल, घूम-घूम कर देखें देश तथा बगला सफेद क्यों आदि। बाल साहित्य लिखे हैं।

10. इसमें दुबे जी ने मधुकरी, तिरूक्कुरल, भ्रमरगीतलु, सुमति

शतक, धम्मपद शतक, तथा वेमना शतक आदि पदमानुवाद लिखे हैं।

11. सम्पादित-रचनायें—इसमें दुबे जी ने गाँधी आश्रम प्रार्थना, रहीम के दोहे, मुहावरे-कहावतें, श्रीराम कथा आदि सम्पादित रचनायें लिखी हैं।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि श्री रामेश्बर दयला दुबे जी हिन्दी के आधुनिक युग के प्रमुख प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार है। हिन्दी साहित्य में इनका महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रश्न—चित्रकूट के कथानक पर संक्षेप में प्रकाश डालिये ?

उत्तर—"चित्रकूट-प्रसंग" एक सांस्कृतिक ग्रन्थ "रामायण" का सर्वोत्तम अंश है। महाकवि ने इस प्रसंग में आदर्श भ्रातप्रेम एवं पारिवारिक सम्बन्धों का समुचित दर्शन कराया है इसीलिये श्री रामेश्वर दयाल दुबे ने इसी प्रसंग को लेकर इस खण्डकाव्य की रचना की है। इसकी कथा-वस्तु निम्न प्रकार से है—

प्रथम-सर्ग—प्रथम सर्ग में कवि ने बताया है कि एक दिन चित्रकूट के निवासियों को यह समाचार मिला कि रघुकुलतिलक राम सीता और लक्ष्मण वनवास के समय को बिताने के लिये यहाँ आ रहे हैं यह सुनते ही वहाँ के सारे लोग उनके स्वागत के लिये इकट्ठे हो गये कुछ लोगों को यह चिन्ता होने लगी कि हम गरीब लोग इतने बड़े लोगों का कैसे यथोचित स्वागत कर सकेगे ? लेकिन कुछ लोगों ने कहा यहाँ तो वह साधारण पुरुष के रूप में आ रहे हैं राजा के रूप में नहीं। राम ने वहाँ पहुंच कर सबसे पहले मुनियों को प्रणाम किया अत्रिऋषि की चरणरज अपने सिर चढ़ाई और उनसे आशीर्वाद पाया। सीता ने अनुसूया को प्रणाम करके उनका स्नेह पाया। राम ने कोल किरातों का भी आलिंगन किया। वह सब राम सीता व लक्ष्मण के सौन्दर्य को देख कर आश्चर्य चकित हो रहे थे ! राम गंगा के किनारे एक सुन्दर स्थान देख कर बैठ गये। कोल किरात उनके लिये दोने भर-भर कर कन्दमूल फल ले आये। वही सब खाकर राम ने पहली रात शिला पर सोकर ही बिता दी।

द्वितीय सर्ग—द्वितीय सर्ग में कवि ने बताया है कि दूसरे दिन राम ने वहाँ पर एक घासफूस की झोपड़ी बना ली। और सीता ने उसके आस-पास एक सुन्दर फुलवारी लगायी। सीता और लक्ष्मण रोज नदी से पानी लाकर उस फुलवारी को सीचते थे और सप्ताह में एक बार अपने आस-पास की जगह की सफाई करते थे। काम के साथ-साथ वह अयोध्या की बातें भी करते थे। राम मुनियों के आश्रम में जाकर उनके साथ विभिन्न प्रकार की ज्ञानचर्चा करते थे। कभी-कभी सीता और लक्ष्मण राम के साथ वन में घूमने जाते थे तो राम उनको वन के पेड़ पौधो का परिचय कराते थे। कभी-कभी कोई किरातिन सीता के पास आकर बैठ जाती थी और मनो-रंजन के लिए अनेकों प्रकार की बातें करती थी। सीता भी उनको राज-भवन की लड़ाई-झगड़ों की बातों को बता कर उनके जीवन को सुखी बनाती थी कभी सीता मछलियों को चावल खिलाती थी और कभी राम से प्रकृति गुणों का वर्णन सुनती थी। कभी-कभी कोल किरात राम को अपनी बस्ती में ले जाते थे और उनसे बातें कहने का आग्रह करते थे! तब राम उनको समझाते थे कि संसार में सभी मानव समान है। कोई भी ऊँच नीच नहीं है। तुम्हें अपने को तुच्छ नहीं समझना चाहिए। इस प्रकार से राम सीता और लक्ष्मण चित्रकूट में अपना समय व्यतीत कर रहे थे।

तृतीय-सर्ग—एक दिन सीता अपने विचारों खोयी हुई बैठी थी कि उन्होंने लक्ष्मण को अपनी ओर आते देखा। उस समय लक्ष्मण क्रोध में भरे हुए थे और कुछ बोलते जा रहे थे। सीता के पूछने पर लक्ष्मण ने बताया कि भरत सेना लेकर आ रहे हैं। वह हमको मार कर अपना राज्य निष्कंटक बनाना चाहते हैं। कोल किरातों ने अभी मुझको यह समाचार दिया है। तभी राम वहाँ पर आ गये तो लक्ष्मण ने उनको भी यह समाचार सुनाया। राम ने उनको शान्त रहने के लिये कह और यह विश्वास दिलाया कि भरत ऐसा कभी नहीं कर सकता है। इसके थोड़ी देर बाद ही भरत वहाँ पर आ पहुंचे उनकी आँखों में आँसू भरे हुए थे

और उनके पैर नंगे थे। आते ही भरत राम के चरणों में गिर पड़े। उनके साथ गुरु वशिष्ठ, तीनों मातायें, तीनों बहुएँ तथा अनेकों नगरवासी भी आये थे। लक्ष्मण और शत्रुघ्न एक दूसरे से गले मिले। भरत ने लक्ष्मण का आलिगन किया। सीता ने भी सबको यथोचित प्रणाम किया। राम लक्ष्मण ने माताओं के चरण स्पर्श किये और आशीर्वाद पाया। माताओं के श्वेत वस्त्रों को देख कर राम को यह मालूम हो गया कि अब उनके पिता इस संसार में नहीं हैं। गुरु वशिष्ठ ने उनको अयोध्या की सारी बातें संक्षेप में सुनायी। और शोक न करने के लिये समझाया। उसी समय कोल किरातों ने सबके खाने पीने और रहने की व्यवस्था कर दी।

चतुर्थ-सर्ग—चतुर्थ सर्ग में कवि ने बताया है कि दूसरे दिन नगर-वासी चित्रकूट घूमने निकले। और राम लक्ष्मण ने गुरु वशिष्ठ के आदेश से पिता का श्राद्ध किया। फिर राम ने सबके निवास की व्यवस्था देखी और सीता को सबका ध्यान रखने का आदेश दिया। सीता ने अपनी सास कौशल्या से वन में सुख आनन्द होने की बात कही तो कौशल्या ने समझा कि मैं कहीं इससे वापस चलने को न कहूँ इसीलिये ये मुझसे वन के सुख का वर्णन कर रही है। दूसरे दिन गंगा के किनारे राम माता कैकेयी से मिले और उनके दुख का कारण पूछा तो कैकेयी ने कहा कि मैं ही तुम्हारे इस दुख का मूल हूँ। मेरे मातृत्व ने ही मुझसे यह सब करवाया है भग-वान ने मुझे माँ बनाया यह उनका दोष है। यह सुन कर राम को संतोष हुआ और उन्होंने कहा कि संसार में जो कुछ भी होता है, वह सब ईश्वर की ही इच्छा से होता है।

एक दिन माता सुमित्रा ने लक्ष्मण को अकेला पाकर उनका कुशल समाचार पूछा। तो लक्ष्मण ने संतोषजनक उत्तर दिया इस पर माता सुमित्रा ने कहा कि मुझे तुम्हारी चिन्ता नहीं है लेकिन बहू उर्मिला की बहुत चिन्ता है इस पर लक्ष्मण ने बात बदल दी और दूसरी-दूसरी बातें करने लगे। वहाँ पर आये हुए सबको कई दिन बीत गये। तब राम ने गुरु से सबके आने कारण पूछा। तब गुरु ने भरत से कह कर सभा एकत्र

की। गुरु ने भरत से अपनी बात कहने के लिये कहा तो भरत ने उन्हीं से अपने भावों को व्यक्त करने के लिये कहा ! तब गुरु ने कहा अयोध्या में जो कुछ भी हुआ है उसको राम भूल जाये और अयोध्या वापस लौट कर राज्य भार संभाल ले। इस पर राम ने कहा कि इसमें तो पिता की आज्ञा का उल्लघन होगा। जिस प्रकार से पिता ने अपने वचनों का पालन किया है उसी प्रकार से हमें भी उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। तभी शत्रुघ्न ने प्रजा में से एक गणपति चुन कर राज्य चलाने की बात कही। परन्तु राम ने उसका विरोध किया। जब राम और भरत दोनों ने राज्य को स्वीकार करने से इनकार किया तब गुरु ने उन दोनों के भ्रात प्रेम की सराहना की। उनके साथ-साथ सारी सभा ने भी उनके भ्रात-प्रेम की प्रशंसा की। दूसरे दिन चारों बहुएँ सीता उर्मिला मांडवी और श्रुतिकीर्ति मिली। और एक दूसरे के सुख-दुख की बातें करने लगी। तीनों ने उर्मिला के प्रति दया का भाव दिखाया। लेकिन उर्मिला ने कहा कि लक्ष्मण यही रह कर अपना आदर्श भ्रात-प्रेम निभाये।

पंचम-सर्ग—पंचम सर्ग में कवि ने बताया है कि सभा का अंतिम निर्णय हो जाने पर भी लोगों का चित्रकूट से वापस लौटने का मन नहीं हो रहा था। उनको अब राम के न लौटने की कोई चिन्ता नहीं थी। क्योंकि राम-भरत के भ्रात-प्रेम के गौरव से वे सब बहुत प्रसन्न थे शत्रुघ्न ने कुछ दिन वहाँ पर और रहने की बात कही तो भरत ने कहा—राम से पूछ कर ही यँह कार्यक्रम बनाया जाये। जब भरत ने राम से अधिक रुकने की बात कही तब राम माताओं के कष्ट की ओर ध्यान दिलाया। फिर सीता से सबको घुमाने के लिए कहा। राम-भरत अत्रि मुनि से मिलने के लिये गये अत्रि मुनि ने उनको आशीर्वाद दिया और धर्म को आचरण में उतारने का उपदेश दिया ! उन्होंने "मानव धर्म" को श्रेष्ठ धर्म बताया ! मुनि अत्रि के कहने पर राजतिलक के लिए लाये गये पवित्र जल को एक कुँए में डाल दिया गया और उस कुँए को "भरतकूप" नाम दिया गया। अन्त में सब लोग फिर नदी के किनारे एकत्र हुए अयोध्या की ओर लौट

पड़े। राम बड़ी दूर तक उनके साथ गये ! भरत राम के प्रतीक रूप में उनकी पादुका साथ ले गये।

प्रश्न—सिद्ध कीजिए कि "चित्रकूट एक सफल खण्डकाव्य है ?"

"या"

काव्यकला की दृष्टि से "चित्रकूट" की युक्तियुक्त समीक्षा कीजिए ?

या

चित्रकूट की रचना शैली को स्पष्ट करते हुए बताइये कि यह खंड-काव्य के लिये कहाँ तक उपयुक्त है ?

उत्तर—"खन्ड" और "काव्य" इन दो शब्दों के मिलने से "खण्ड काव्य" बना है। काव्य का अर्थ कवि का कर्म होता है। हमारे काव्य शास्त्र के अनुसार कवि को प्रजापति या काव्य-संसार का रचयिता कहा गया है। ईश्वर के समान कवि भी अपने काव्य संसार को जिस रूप में चाहे बदल सकता है। कवि की शक्ति का परिचय देते हुए कहा गया है कि—

अपारे काव्य-संसारे कविरेव प्रजापतिः<br>
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते !

इस प्रकार से कवि की शक्ति बड़ी महान मानी गयी है। महाकाव्य में किसी महान व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का चित्रण होता है। जिस काव्य में किसी महापुरुष के जीवन की एक घटना का वर्णन दिया जाय उसे खण्ड काव्य कहा जाता है। महाकाव्य के सभी लक्षण थोड़ी बहुत मात्रा में खण्डकाव्य में भी रहते हैं। इसीलिए किसी ने ठीक कहा है कि—

"खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च।"

खंडकाव्य की रचना महाकाव्य के आधार पर ही होती है। लेकिन उसमें महाकाव्य के लक्षण थोड़ी मात्रा में होते हैं। खंडकाव्य के लक्षण निम्न प्रकार से होते हैं—

1. इसमें किसी एक महान व्यक्ति के जीवन की किसी एक विशे घटना का वर्णन होता है जो अपने आप में पूर्ण होता है।

2. इसकी कथा सर्ग बद्ध हो और इसके सर्गों की संख्या आठ से कम हो ! तथा प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्द हो।

3. कथा का आरम्भ मंगलाचरण से होना चाहिए उसमें नमस्कार, आशीर्वाद या वस्तुनिर्देशकता में से एक गुण अवश्य होना चाहिए।

4. खण्डकाव्य की कथा प्रख्यात, ऐतिहासिक या पौराणिक या लोकप्रसिद्ध होनी चाहिए।

5. कथा का नायक उच्चकुलीन, धीरोदात्त होना चाहिए।

6. इस काव्य में वीर श्रृंगार तथा शान्त रस में से कोई एक रस प्रधान होना चाहिए और रस गौण रूप में होने चाहिए।

7. खण्डकाव्य में यथास्थान प्रकृति वर्णन, नाटकीय संवाद जीवन के विविध दृश्यों का भी चित्रण होना चाहिए।

9. खण्डकाव्य का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों में से एक की प्राप्ति होना चाहिए।

इन उपर्युक्त लक्षणों के आधार पर हम यह कह सकते है कि चित्रकूट एक सफल खण्डकाव्य ही नहीं है बल्कि एक उत्तम कोटि का खण्डकाव्य है। "चित्रकूट" किस प्रकार से एक सफल खण्डकाव्य है यह निम्नलिखित है—

1. चित्रकूट में अयोध्या के राजा और भगवान विष्णु के अवतार श्रीराम के जीवन के एक प्रसंग विशेष का वर्णन है। राम पिता की आज्ञा मान कर वन चले जाते हैं। फिर भरत उनको बुलाने के लिये चित्रकूट में उनसे मिलने जाते हैं राम उनको समझाकर अपनी पादुका देकर लौटा देते हैं।

2. चित्रकूट की कथा पाँच सर्गों में विभक्त है सभी सर्गों में एक ही छन्द का प्रयोग किया गया है। केवल मंगलाचरण रूप "प्रणाम" में ही छन्द की भिन्नता है।

3. कथा का आरम्भ मंगलाचरण से किया गया है। कवि ने प्रणाम को मंगलाचरण का नाम दिया है। यह मंगलाचरण 'वस्तुनिर्देशक' कोटि का है।

इस खण्डकाव्य की कथा प्रख्यात है। कवि ने अपनी रुचि के अनुसार इसमें थोड़ा बहुत परिवर्तन भी किया है।

5. कथा का नायक उच्चकुलीन राजवंश का और भगवान विष्णु का अवतार है। वह धीरोदात्त है और काव्य का फल "आदर्श भ्रात-प्रेम" की प्राप्ति करता है। उसमें धीरता, गंभीरता ओज आदि सभी गुणों का सम्यक समावेश देखा जाता है।

6. इसका प्रधान रस शान्त रस है इसके बीच-बीच में शृंगार, हास्य, करुण, वीर आदि रसों को भी स्थान दिया गया हैं।

7 इस खण्डकाव्य में यथास्थान प्रकृति-वर्णन का भी आयोजन किया गया है। कथा का आरम्भ प्रकृति-वर्णन से ही होता है। तथा बीच में भी अनेकों बार कवि ने प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है। पात्रों के संवादों में भी नाटकीयता का सुन्दर समावेश किया गया है।

8. चित्रकूट की शैली विस्तार पूर्ण है। इसमें कवि प्रत्येक बात को विस्तार पूर्वक कहता है। चतुर्थ-सर्ग में सभा वर्णन बहुत विस्तृत हो गया है। यह कथा-शैली गम्भीर होने के साथ-साथ शब्दालंकारों तथा अर्थालंकारों से सर्वत्र सुसज्जित की गयी है।

9. इस खण्डकाव्य का उद्देश्य पाठकों में "मानव धर्म" को जागृत करना है। इसका आरम्भ घर से होना चाहिए। तथा इसको भ्रात-प्रेम के द्वारा आगे बढ़ाना चाहिए।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि "चित्रकूट" में खण्डकाव्य के समस्त नियमों का पूर्ण रूप से पालन किया गया है। जिससे "चित्रकूट" एक सफल खण्डकाव्य बन गया है।

प्रश्न—"चित्रकूट" के नामकरण की सार्थकता को सिद्ध कीजिए ?

उत्तर—किसी पाश्चात्य विद्वान का कहना है कि नाम में क्या रखा है ? लेकिन मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि नाम कभी भी निरर्थक नहीं होता है। उससे वस्तु के गुण- दोष का थोड़ा बहुत बोध अवश्य हो जाता है आज के युग में नाम की बड़ी महिमा है इसीलिए किसी ने ठीक कहा है

कि—"यथा नाम तथा गुण।" किसी भी पुस्तक या ग्रन्थ का नाम बहुत सोच विचार के साथ रखा जाता है। उस नाम में उस ग्रन्थ की केन्द्रस्थ भावना का समावेश रहता है। नाम को सुन कर पाठक उस ग्रन्थ के बारे में अपना अनुमान लगा लेता है। इसलिये रचना का नामकरण करते समय कवि या लेखक को पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए। प्राचीन भारतीय साहित्य शास्त्रियों के मतानुसार—"काव्य का नामकरण कवि के नाम पर कथावस्तु के आधार पर, नायक या अन्य पात्र के आधार पर हो सकता है ?" लेकिन वर्तमान काल में अधिकतर काव्य ग्रन्थों के नाम कथावस्तु स्थान पर आधारित हैं। साकेत, पंचवटी, कुरुक्षेत्र तथा चित्रकूट आदि ऐसे ही नाम हैं। वर्तमान काल के पुस्तक के नामकरण के निम्न आधार देखे जाते हैं—

(1) प्रमुख घटना (2) प्रमुख पात्र (3) प्रमुख मनोवृत्ति (4) प्रमुख समस्या (5) घटनास्थल का स्थान।

कवि रामेश्वर दयाल दुवे ने 'घटनास्थल के स्थान" को ही आधार रूप में पसन्द किया है। आधुनिक काव्य शास्त्रियों के मतानुसार काव्य ग्रन्थ का नाम "विषय के अनुकूल, निश्चय बोधक, आकर्षक, नया एवं छोटा होना चाहिए।" "चित्रकूट" काव्य की सभी घटनाओं का केन्द्रस्थल यही है राम सीता लक्ष्मण अपना वनवास काल बिताने के लिये यहाँ आकर निवास करते हैं। और अयोध्या से भरत, शत्रुघ्न, मातायें, बहुएँ, गुरु और नगरवासी उनको मना कर वापस लौटाने के लिये आते हैं। और राम को समझाते हैं लेकिन राम उनकी बात को नहीं मानते हैं। राम-भरत का भ्रात-प्रेम देख कर सब प्रसन्नता पूर्वक लौटते हैं। यह सब कुछ "चित्रकूट" में ही घटित होता है। इसलिये काव्य का यह नाम विषय के अनुकूल है। इस नाम में आकर्षकता है क्योंकि पहले भरत को आते हुए देख कर लक्ष्मण क्रोधित हो जाते हैं। लेकिन राम और स्थान के प्रभाव से उनका भावपूर्णरूप से बदल जाता है। यही इसकी आकर्षकता का द्योतक है। आधुनिक काव्य-शास्त्रियों ने काव्य के नामकरण में जिन

विशेषताओं की आवश्यकता बतायी है वह सब विशेषतायें इस नाम में मौजूद हैं। इस "चित्रकूट" नाम की सार्थकता के पक्ष में हम निम्न-लिखित तर्क दे सकते हैं—

(1) इस खण्डकाव्य की सभी घटनाओं का केन्द्रस्थान चित्रकूट है यही राजभवन का सारा परिवार एकत्र होता है और सब परस्पर स्नेह से मिलते हैं यही पर राम ऋषि मुनियोंके साथ ज्ञान की चर्चा करते हैं। और कोल किरातों की बस्ती में जाकर उनको उपदेश देते हैं।

(2) काव्य के नायक राम आरम्भ से अन्त तक चित्रकूट में हो बने रहते है। यहीं पर वह अपनी झोपड़ी बनाते है और सीता उसके आस-पास एक फुलवारी लगाती है। लक्ष्मण झोपड़ी और फुलवारी की रक्षा करते हैं। तीनों ही उस चित्रकूट की भूमि से बहुत स्नेह करते हैं।

(3) चित्रकूट की भूमि में ही वह अदभुत घटना घटती है जिसने राम-भरत को अमर बना दिया है। यहाँ पर भरत राम से राज्यभार सभालने के लिये कहते है और राम भरत से आग्रह करते हैं यह देख कर गुरु वशिष्ठ जी कहते हैं कि—

राज्य कि जिसके लिये जगत में, क्या-क्या नहीं हुआ है,
राज्य कि जिसके लिये रक्त की बही निम्नगा भीगा।
वही राज्य इस चित्रकूट में कन्द्रक बना हुआ है,
मात्र फेकने ने को दोनों ने, आने निकट दिया है॥"

(4) "चित्रकूट" प्रकृतिक दृष्टि से भी बहुत सुन्दर प्रदेश है कवि बार-बार चित्रकूट की प्रकृति का वर्णन करते हैं और इसका नाम चित्रकूट पड़ने कारण बताते हैं जो निम्न है—

"प्रकृति नटी चारु चित्रमय धरती यहाँ सजायी,
"चित्रकूट" की इसीलिये तो संज्ञा इन पायी!"

(5) आधुनिक काल के हिन्दी कवियों में स्थान विशेष के प्रति रुचि देखी जाती है। साकेत, कुरुक्षेत्र, कोणार्क और पंचवटी इसके स्पष्ट उदाहरण है। दुबे जी के प्रथम खण्डकाव्य का नाम भी स्थान विशेष के

आधार कोणार्क रखा गया है। "चित्रकूट" उनकी इसी रुची का परिचायक है।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि "चित्रकूट" काव्य का नामकरण सभी दृष्टियों से उचित हैं। "चित्रकूट" स्थान का ही प्रभाव है कि यहाँ आकर कैकेयी ने अपनी गलती को पहचाना। उसने अपनी मातृत्व आधा दोष को और आधा उसे माता बनाने वाले ईश्वर के सिर डाल दिया और स्वयं बिल्कुल निर्दोष बनी रही। उसने मंथरा को भी दोष से बचा लिया ! इन सब बातों को देखते हुए हम कह सकते हैं कि घटना-स्थल के आधार पर दिया गया यह "चित्रकूट" नाम सार्थक है।

प्रश्न—"चित्रकूट" की कथावस्तु की आलोचना पर संक्षेप में प्रकाश डालिये ?

उत्तर—"चित्रकूट" एक सफल खण्डकाव्य है। इस कथावस्तु को बाल्मीकि रामायण या गोस्वामी तुलसीदास रचित "रामचरित-मानस" महाकाव्य से ली गयी है। इसकी कथावस्तु सरल और गतिशील है। इसमें राम-सीता और लक्ष्मण चित्रकूट में गंगा के किनारे रह कर अपने समय को बिता रहे हैं। एक दिन लक्ष्मण को समाचार मिलता है कि भरत अयोध्या से सेना लेकर आ रहे हैं। तब वह सीता और राम के सामने अपना क्रोध प्रकट करते हैं। लेकिन राम उनको मौन रहने के लिये कहते हैं। भरत आकर पहले राम के चरणों में प्रणाम करते हैं। फिर लक्ष्मण का० आलिंगन करते हैं। राम माताओं, गुरुओं, बहुओं तथा नगरवासियों का यथायोग्य आदर-सत्कार करते हैं। कुछ दिनों तक सब लोग आराम से चित्रकूट में निवास करते हैं। इसी बीच सीता-कौशल्या, राम कैकेयी तथा लक्ष्मण सुमित्रा आदि के मिलन होते हैं। और सब दिल खोल कर एक दूसरे से बातें करते हैं। राम भरत से चित्रकूट आने का कारण पूछते हैं तब भरत सबको एकत्र करते हैं। और राम से वापस लौट चलने का प्रस्ताव रखते हैं। लेकिन राम उनको समझाते हैं कि संसार में सभी घटनायें विधि-विधान के अनुसार घटती हैं। तुम पर अन्य

कोई भी इसका कारण नहीं है। मुझे पिता की आज्ञा का पालन करने दो और तब तक तुम राज्य भार को सँभालो ! भरत राम की बात को मान लेते हैं और उनकी चरण-पादुका लेकर अयोध्या लौट जाते हैं। कवि ने रामायण की इस छोटी घटना को लेकर पाँच सर्ग वाले इस खण्ड-काव्य की रचना की है। इसकी कथा में कवि ने निम्नलिखित मौलिक प्रसंगों का निर्माण किया है—

(1) राम के चित्रकूट पहुंचने पर कोल-किरात तथा ऋषि मुनियों के द्वारा उनका स्वागत !

(2) भरत के आगमन का प्रथम समाचार लक्ष्मण को मिलना और सीता व राम के सामने विरोध प्रकट करना।

(3) राम और कैकेयी का गंगा किनारे मिलना। और कैकेयी द्वारा अपने मातृत्व तथा ईश्वर को दोष देना।

(4) लक्ष्मण-सुमित्रा संवाद तथा सीता का अपनी बहनों से मिलना और विविध प्रकार की बातें करना।

(5) अयोध्यावासियों का वन-भ्रमण।

(6) महामुनि अत्रि का भरत को उपदेश देना।

इन मौलिक प्रसंगों के कारण इसकी कथावस्तु बहुत आकर्षक और प्रभावशाली बन गयी है। चित्रकूट की कथावस्तु में भावनात्मक स्थलों और घटनाओं को अधिक स्थान दिया गया है। भावों को तीव्र बनाने के लिये कवि ने प्रकृति का आश्रय लिया है। चित्रकूट में रस का आयोजन यथोचित रूप में हुआ है। इसका मुख्य रस शान्त रस है। काव्य का आरम्भ और अन्त इसी रस से हुआ है। इसके साथ-साथ शृंगार वीर, हास्य तथा करुण आदि रसों का भी सुन्दर चित्रण किया गया है। इस खण्डकाव्य में राम सीता और लक्ष्मण ये ही तीन प्रधान पात्र में। कवि ने इन तीनों का चरित्र-चित्रण बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से समुचित रूप में किया है। राम धीर गंभीर, विवेकशील, मृदुभाषी और नायक पर के योग्य सर्गगुणों से सम्पन्न हैं। सीता सुयोग्य ग्रहिणी, परिश्रम् शील, सेवा-

भाविनी तथा प्रकृति प्रेमिका है। लक्ष्मण वीर, क्रोधी, आदर्श सेवक तथा स्नेही भ्राता है। इसके अतिरिक्त भरत, शत्रुघ्न, अत्रि, अनुसूया, वशिष्ठ, कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा, उर्मिला, मांडवी, श्रुतिकीर्ति आदि के चरित्रों की भी कुछ न कुछ विशेषतायें कवि ने दर्शायी हैं।

काव्य की भाषा शैली एवं छन्द भी कथावस्तु के अनुकूल बन पड़े हैं। इसकी भाषा तत्सम प्रधान खड़ी बोली है। इसकी भाषा सर्वत्र सरल और प्रवाहशील है। अलंकारों के प्रयोग से भाषा को सजाने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है। शैली भावानुकूल, पात्रानुकूल, तथा प्रसंगानुकूल होने से बहुत सुन्दर बन गयी है। समस्त काव्य में एक ही छन्द का प्रयोग हुआ है। केवल "प्रणाम" में कवि ने अन्य छन्दों का प्रयोग किया है। इस काव्य की सबसे मुख्य विशेषता प्रकृति-चित्रण है। यह प्रकृति-चित्रण विविध रूप में प्रकट हुआ है। यह कही आलम्बन, उद्दीपन रूप में तो कही मानवीकरण और उपदेश के रूप में हैं। जैसे—

**आलम्बन रूप में—**

कामदगिरि के शिखर दूर पर अपनी दृष्टि गड़ाये।
बाट जोहते किसकी है, ये सुध-बुध सकल गँवाये॥

**उद्दीपन-रूप में—**

"देखो यहाँ लताये तरु से कैसी लिपट रही है।
शाखाओं के भुज-बन्धन में कैसी सिमट रही है॥"

**मानवीकरण रूप में—**

"ध्यान मग्न थे खड़ नीड़ों में, तरु थे कान लगाये।
नभ के नयन देखते नीचे, अपनी दृष्टि गड़ाये॥"

इस प्रकार से कवि को जहाँ भी अवसर मिला है वही पर उसने प्रकृति वर्णन के द्वारा अपनी कथावस्तु को सजाया है। इस प्रकार से कवि को "चित्रकूट" काव्य की कथावस्तु में पूर्ण सफलता मिली है। यही इसे कथावस्तु की प्रमुख विशेषतायें हैं।

प्रश्न—चित्रकूट के आधार पर राम का चरित्र-चित्रण कीजिये ?

उत्तर—चित्रकूट एक चरित्र प्रधान खण्डकाव्य है। भगवान विष्णु के अवतार पुण्य प्रसिद्ध श्रीराम इसके नायक है। बाल्मीकि, तुलसी मैथिलीशरण गुप्त आदि ने राम का चरित्र अपने-अपने ढंग से वर्णित किया है ऐसा कहा जाता है कि बाल्मीकि के राम पुरुषोत्तम है तुलसी के राम भगवान हैं गुप्त जी के राम पहले पुरुष है बाद में अवतार हैं। हमारे कवि ने राम का पुरुषोत्तम रूप में ही ग्रहण किया है राम के चरित्र की विशेषतायें निम्नलिलित है—

1. आदर्श-चरित्र—राम का चरित्र उस आदर्श पुरुष का चरित्र है जो अपने विविध सदगुणों के द्वारा ईश्वर की सीमा तक पहुंच सकता है। इसके लिये मनुष्य में अपार सहिष्णुता होनी चाहिये।

2. आज्ञाकारी—राम अपने पिता के आज्ञाकारी पुत्र है। वह पिता की आज्ञा से चौदह वर्ष का वनवास पूरा करने के लिये "चित्रकूट" में आये हैं। उनके मन में माता-पिता के प्रति कोई रोष नहीं है। उनका मन पूर्ण रूप से स्वस्थ है। वह विधि-विधान को स्वीकारते हुए प्रसन्नता से अपना कार्य करते हैं।

3. विनयी और मानवता प्रेमी—राम बड़े विनयी और प्रेमी थे। चौदह वर्षों का वनवास पूरा करके जब वह चित्रकूट में आते हैं तब वहाँ पर ऋषि मुनि तथा कोल-किरात उनके स्वागत के लिए एकत्र हो जाते हैं। जब राम सीता और लक्ष्मण वहाँ पर पहुंचते हैं तब राम आगे बढ़ कर बड़े विनय पूर्वक ऋषि मुनियों को प्रणाम करते हैं। इसकें बाद वह कोल-किरातों का आलिंगन करते हैं। कवि के शब्दों में—

"कोल-किरातों को भी बढ़ कर समुद राम ने भेंटा !"

राम के मन में ऊँच नीच का कोई भेद नहीं था। वह एक सच्चे मानवता प्रेमी व्यक्ति थे। इसी प्रेम के कारण कोल-किरातों ने उनके खाने के लिए कन्द मूल फल लाकर दिये थे।

4. प्रखर ज्ञानी और निरभिमानी—राम एक प्रखर ज्ञानी और निरभिमानी व्यक्ति थे। चित्रकूट में रह कर भी वह अपने समय का सदुपयोग करते थे। वह मुनियों के आश्रमों में चले जाते थे और वहाँ पर अनेकों विषयों पर चर्चा करते थे। कभी-कभी वह सीता और लक्ष्मण को लेकर वन घूमने जाते थे और उनको विविध प्रकार के पेड़-पौधों का परिचय तेते थे और उनके गुण धर्मों का भी वर्णन करते थे। राम को वन के पेड़-पौधों, जड़ी-बुटियों तथा पशु-पक्षियों का बड़ा सूक्ष्म ज्ञान था। लेकिन राम को तनिक भी अभिमान नहीं था वह प्रकृति से अनेकों प्रकार का ज्ञान ग्रहण करते रहते थे।

5. राम एक पत्नी प्रेमी पति भी थे। वन में रहते हुए भी वह अपनी पत्नी सीता के सुख दुख का बहुत ध्यान रखते थे। सीता नदी के किनारे जाकर मछलियों को चावल खिलाया करती थी। राम को उनका यह कार्य बहुत पसन्द था। क्योंकि इससे सीता को अकेलापन नहीं लगता एक दिन जब सीता मछलियों को दाना चुगा रही थी तब राम वहाँ पहुंच गये और बोले—

"मुझे यही सन्तोष अकेलापन अब नहीं खलेगा।
यही मीठा व्यापार तुम्हरा-तुम्हारा आगे खूब चलेगा॥"

भ्रात-प्रेमी व परिवार प्रेमी—राम भ्रात प्रेमी और परिवार प्रेमी सामाजिक व्यक्ति थे। लक्ष्मण द्वारा जब राम को यह मालूम हुआ कि भरत सेना लेकर आ रहे हैं तब भी भरत के प्रति राम का मन शंकित नहीं हुआ। लक्ष्मण के बहुत उत्तेजित होने पर वह कहते हैं कि—

"मेरा ध्रुव विश्वास स्नेह ही उसे खीच है लाया।"

बाद में राम का यही विश्वास सत्य सिद्ध होता है। जब भरत राम से वापस अयोध्या लौटने के लिये कहते हैं तब राम भरत को समझाते हैं और उनके मन से शंका दूर कर देते हैं। भरत के माँगने पर वह अपनी चरण पादुका भी दे देते हैं। राम भरत के इस भ्रात-प्रेम को

देख कर सब लोग बहुत आनन्दित हो जाते हैं। और गुरु वशिष्ठ जी कहते हैं कि—

"भाई हो तो इस भूतल में राम-भरत से भाई !"

भाइयों के साथ-साथ राम अपने परिवार के लोगों से भी बहुत स्नेह करते थे। अयोध्या से आये हुए लोगों का राम बहुत ध्यान रखते थे। पिता की मृत्यु का समाचार पाकर राम बहुत दुखी हो गये थे। उन्होंने श्राद्ध कर्म करके अपने पिता के प्रति अपना कर्तव्य निभाया। तथा माता कैकेयी के दुख को हल्का करने के लिये उनको आश्वासन दिया। सभा का निर्णय हो जाने के बाद शत्रुघ्न को वन में कुछ दिन और रहने की अनुमति दी और वन में घूमने का अवसर दिया। जब सब लोग अयोध्या लौटने लगे तब राम सबको भेजने के लिए काफी दूर तक उनके साथ गये। इस प्रकार से राम अपने परिवार के लोगों से भी बहुत स्नेह रखते थे।

7. आदर्श त्यागी व आदर पाने योग्य—राम एक आदर्श त्यागी और सबका आदर पाने योग्य महान व्यक्ति थे। पिता की आज्ञा से वह चौदह वर्षों के वनवास के लिये अयोध्या को छोड़ आये थे। चित्रकूट में जब भरत उनको वापस बुलाने के लिये आये तब राम ने भरत को समझाते हुए कहा—

"आज्ञा पालूं इधर पिता की, मैं वन में ही रह कर।
पालो प्रजा, करो तुम सेवा, माताओ की घर पर॥"

राम के इस राज्य त्याग से सबके मन में आदर का भाव उत्पन्न हो गया। गुरु वशिष्ठ ने भी उनकी इस त्याग भावना का बहुत आदर किया और उनको एक सच्चा एवं आदर्श भाई बताया !

इस प्रकार से हम देखते है कि राम का सम्पूर्ण चरित्र-चित्रण लोक रक्षक आदर्श मानव का है। उनमें मानवोचित गतिशीलता, भावुकता, संवेदनशीलता और गम्भीरता है। उनका स्नेह केवल लक्ष्मण और सीता के लिये ही नहीं है बल्कि भरत और कैकेयी के लिये भी है। वह ऋषि मुनियों का आदर करते है तथा कोल-किरातों से भी स्नेह भाव रखते हैं।

उनमें मानवोचित श्रृंगार भावना भी है। उनमें कहीं पर भी मानवीय दुर्बलता का दर्शन नहीं होता है। इसीलिए हम राम को पूर्ण पुरुषोत्तम मानते हैं।

प्रश्न—चित्रकूट के आधार पर लक्ष्मण का चरित्र-चित्रण कीजिये ?

उत्तर—राम के चरित्र की भाँति लक्ष्मण का चरित्र भी बहुत महान है। वह राम के छोटे भाई है तथा उर्मिला के पति हैं। राम में उनकी अविचल भक्ति है। वह राम को अपना बड़ा भाई ही नहीं बल्कि पूज्य भी मानते हैं। भ्रात प्रेम वश वह राम के साथ वन चले जाते हैं और चौदह वर्षों तक निरन्तर उनके साथ रहते हैं। राम के बिना स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं है। यही उनके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है। लक्ष्मण के चरित्र की विशेषतायें निम्नलिखित है—

1. अनन्य और सच्चे सेवक—लक्ष्मण राम के अनन्य और सच्चे सेवक थे। वह राम के प्रति अपनी अनन्य भक्ति के कारण ही उनके साथ वन चले गये थे। वन में वह हमेशा भाई-भाभी की सेवा में ही लगे रहते थे। जरूरत पर वह रात भर पहरा देते थे और राम सीता का ध्यान रखते थे। और कहते थे-"हिंसक पशु आतंक हुआ तो मैं हूँ पहरा देता।"

2. परिश्रमी एवं प्रकृति प्रेमी—लक्ष्मण बहुत परिश्रमी और प्रकृति प्रेमी व्यक्ति थे। सीता ने कुटी के पास एक फुलवारी लगायी थी। फुलवारी को सीचने का काम लक्ष्मण करते थे। सीता उनके कार्य में सहयोग देती थी। लक्ष्मण और सीता दोनों मिल कर कुटी की सफाई करते थे और अनेकों प्रकार की बाते करते थे। लक्ष्मण को इस परिश्रम में बड़ा आनन्द आता था। वह अपनी माता सुमित्रा से कहते है कि—

"हाँ माँ, श्रम का स्वाद मधुरतम यही जान हूँ पाया।
बड़े भाग्य से ही निसर्ग की गोदी में हूँ आया॥"

कभी-कभी लक्ष्मण राम के साथ वन घूमने भी जाते थे और राम से अनेकों पेड़ पौधों के बारे में जानकारी प्राप्त करते थे इसके बाद वह स्वयं भी सीता को फूलों के बारे में नयी-नयी बाते बताते थे। उनको

प्राकृतिक वस्तुओं से बहुत प्रेम था एक दिन उन्होंने चम्पा के विषय में सीता से कहा—

"पूत सती सा गन्ध रूप रंग सब मोहक है इसके।
लम्पट भ्रमर नहीं आ पाता पास कभी भी इसके॥"

3. क्षत्रियोचित-तेज—लक्ष्मण में क्षत्रियोचित तेज बहुत काफी मात्रा में है। जब उनको यह मालूम होता है कि भरत सेना लेकर आ रहे है तब वह भरत से लड़ने के लिये तुरन्त तैयार हो जाते है और अपना धनुष बाण भी तैयार कर लेते है और राम से कहते हैं कि—

"सुनते आई साथ कैकेयी युद्ध नियंता बनकर।
अक्षय राज के सके सुत को सारे कंटक हर कर॥"

तब राम ने उनको समझा कर शान्त किया। और उनसे मौन रहने के लिये कहा।

4. हास-परिहास—चित्रकूट के लक्ष्मण समय-समय पर सीता से हास-परिहास भी करते हैं। वन में घूमते हुए राम ने ऊँचे शाल वृक्षों पर चढ़ी हुई बेलों को दिखाया तो सीता ने कहा—

"एक दूसरे से शोभित है दोनों–सीता बोली"

यह सुन कर तुरन्त मजाक करते हुए लक्ष्मण ने कहा—

"भाभी अपनी बात कह रही–की सौमित्र ठिठोली।"

इसी प्रकार से अयोध्या से आये हुए लोगों में उर्मिला को देख कर लक्ष्मण कहते हैं—"क्या यह भी है आई ?" यह कह कर लक्ष्मण उर्मिला के प्रति अपना सदभाव व्यक्त करते हैं।

5. कर्तव्य पालक एवं दृढ़ चरित्र वाले—लक्ष्मण एक कर्तव्य पालक और दृढ़ चरित्र वाले व्यक्ति थे। वह एक बार जिस काम को करने के लिये कह देते थे उससे फिर वह पीछे नहीं हटते थे। जब माता सुमित्रा उनसे उर्मिला की चिन्ता के बारे में कहती है तब लक्ष्मण उस बात को टाल जाते हैं। और हंस कर कहते हैं—

"बनी बहू, बेटे से प्रिय जब, सास बनी, महतारी।"

इस प्रकार से हम देखते है कि लक्ष्मण बहुत तेजस्वी व्यक्ति हैं और अनेक उदात्त गुणों से समवेत हैं। लक्ष्मण का चरित्र बहुत महान है।

प्रश्न—चित्रकूट के आधार पर सीता का चरित्र-चित्रण कीजिये ?

उत्तर— सीता राम की प्रिय पत्नी है। जब राम वनवास हुआ तब वह भी राम के साथ वन चली गयी। वन में वह एक साधारण गृहिणी की भाँति रहती थी। औरत के सारे कार्यों को वह स्वयं करती थी। सीता के चरित्र की विशेषतायें निम्नलिखित हैं—

1. सौन्दर्य शालिनी—सीता बहुत सौन्दर्य शालिनी है। जब वह राम लक्ष्मण के साथ वन जा रही थी तब उनको देख कर कोल-किरात और ऋषि मुनि विचार कर रहे थे कि—

"विधि ने निज हाथों से इसकी मधुमय मूरति आँकी।"

इस प्रकार से सीता बहुत अनुपम सुन्दरी है।

2. प्रकृति प्रेमी—सीता बहुत प्रकृति प्रेमी है वह फूलों के प्रति बहुत मोह-माया रखने वाली है। चित्रकूट में झोपड़ी बनते ही वह उसके आस-पास फुलवारी लगा देती है और रोज उसको नदी के जल से सीचती हैं। कभी-कभी वह राम लक्ष्मण के साथ वन भ्रमण के लिए भी जाती थी और नये-नये पेड़-पौधों, जड़ी बूटियों का ज्ञान प्राप्त करके प्रसन्न होती थी।

3. मानवता प्रेमी—सीता एक मानवता प्रेमी नारी है वह अपने पति राम देवर लक्ष्मण और परिवार के समस्त लोगों के प्रति बहुत प्रेम भाव रखती है। इसके साथ-साथ वह वन में रहने वाले कोल किरातों के प्रति भी वह बहुत स्नेह भाव दर्शाती है। एक बार किरातिन सीता के पास बाते करने लिये आयी तो सीता ने उसे राजभवन के लड़ाई झगड़ों की बात कह कर समझाया कि तुम्हारा यह प्राकृति जीवन ही अच्छा है। सीता को राजभवन का झगड़ा इतना दुखदायी लगता है जैसे—

"जिस आँगन में बना हुआ हो अपनापन ही सपना।<br>उस घर से तो कहीं सुखद है, अग्निकुंड में तपना॥"

सीता को घर की लड़ाई तनिक पसन्द नहीं है जहाँ लक्ष्मण भरत को सेना लेकर आने की बात कहते है और स्वयं को भरत से लड़ाई के लिये बताते है तब सीता कहती है—

"'शान्त पापम्' क्यों कर होगी वहाँ युद्ध की चर्चा ।
जिस रघुकुल में होती आयी, सदा स्नेह की अर्चा ।।"

इस प्रकार से सीता को लड़ाई-झगड़ा नहीं पसन्द है वह चाहती है कि मानव-मानव के साथ प्रेम से रहे ।

4. सुगृहिणी—सीता एक सुगृहिणी नारी है वह घर का और घर के लोगों का पूरा ध्यान रखती है वन में घूमते हुए जब लक्ष्मण को भूख लगती है तब वे बड़े विश्वास के साथ कहते हैं—

"करे क्यों इसकी चिन्ता भारी ।
उसका तो है भार उठाती अन्नपूर्णा नारी ।।"

जब अयोध्यावासी राम से मिलने के लिये चित्रकूट में आते है तब राम उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखने का कार्य सीता को सौंपते है और कहते है कि—

"बोले राम, ध्यान रखना. हो मिलन हर्ष में खोयी ।
माताओं बहनों को होने पाये कष्ट न कोई ।"

सीता बराबर सबकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखती है और सदैव खुश रहती है ।

5. हास-परिहास—सीता समय पड़ने पर हास-परिहास में भी भाग लेती है । एक बार जब वह राम लक्ष्मण के साथ वन में घूम रही थी तब एक स्थान पर वृक्ष से लिपटी हुई बेल को देख कर वह बहुत प्रसन्न हुई । इस पर लक्ष्मण ने परिहास करते हुए कहा कि—"भाभी अपनी बात कह रही ।" यह सुन कर सीता ने भी हँसते हुए उत्तर दिया कि—

"बिछुड़ी जोड़ी ही पाती विषम विरह को लेकर ।"

इसी प्रकार से सीता ने अपनी बहनों के साथ बैठ कर भी हास परिहास में भाग लिया ।

6. सीता एक आदर्श पत्नी है। वह पति के सुख-दुख में साथ रहने में ही अपने जीवन की सफलता मानती है। और सब प्रकार से राम की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखती है। वह माता कौशल्या से कहती है कि—

"जान मुझे तुम सुखी यहाँ पर, मत विषाद अब करना।
बन का वैभव सुखमय मुझको, यही चित्त में धरना ॥"

राम के साथ रहने में ही वह अपने जीवन की सार्थकता मानती है और प्रसन्न होती है।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि सीता भारतीय इतिहास का एक आदर्श नारी पात्र है जो वन में पति की छाया बन कर अपने समस्त धर्मों और कर्तव्यों का पालन करती है।

प्रश्न—चित्रकूट के प्रकृति-चित्रण पर संक्षेप में प्रकाश डालिये।

उत्तर—चित्रकूट एक चरित्र-प्रधान खड-काव्य है इसमें कवि का उद्देश्य भारतीय संस्कृति का गौरव गाना, भ्रात प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करना, शुद्ध मानवीय सम्बन्धों को उपस्थित करना तथा मार्मिक भावनाओं का चित्रण करना है। 'चित्रकूट' में कवि को प्रकृति चित्रण के लिए अधिक अवकाश नहीं मिला है फिर भी कवि ने इसमें प्रकृति चित्रण के अधिकांश प्रचलित रूपों को ग्रहण किया है जो निम्नलिखित हैं :—

(1) प्रकृति का अवलम्बन रूप
(2) प्रकृति का उद्दीपन रूप
(3) प्रकृति का अलंकार रूप
(4) प्रकृति का मानवीकरण रूप
(5) प्रकृति का भावों की पृष्ठभूमि रूप
(6) प्रकृति का बिम्ब ग्रहण रूप

1. प्रकृति का आलम्बन रूप—जब काव्य में प्रकृति का यथातथ्य रूप में स्वतंत्र वर्णन किया जाता है तब यह वर्णन आलम्बन रूप कहा जाता है। इसमें प्रकृति की सत्ता होती है और कवि उसे अपनी भावना

का आधार बनाता है। "चित्रकूट" में ऐसे वर्णन बहुत सुन्दर दिखायी पड़ते है जैसे—

"दायें बायें और सामने फैला विस्तृत प्रांगण।
पार्श्वभूमि में रक्षक जैसे खड़े हुए थे तरुगण॥"

यहाँ पर कवि ने झोपड़ी के आस-पास का वर्णन किया है।

2. प्रकृति का उद्दीपन रूप—जब कवि प्रकृति का मानवीय भावनाओं के अनुकूल चित्रण करता है तब उसे प्रकृति का उद्दीपन रूप कहा जाता है। इसमें प्रकृति साध्य न रह कर साधन बन जाता है। मानवीव भावनाओं के अनुकूल सुखकारी या दुखकारी चित्रित की जाती है। चित्रकूट में राम-सीता लक्ष्मण के आगमन पर आनन्द मना रही है जिसको देखकर कवि कहता है कि—

"सुरिभ बाँटता घूम रहा है अनिल चपल बालक सा।
चातक कीर मयूर शब्दरत, लगता कुछ उत्सव सा॥"

राम के आगमन से प्रकृति में एक उत्सव जैसा आनन्द छा गया है, जिसमें वायु, चातक, तोता और मोर आदि भी प्रसन्नता प्रकट कर रहे हैं।

3. प्रकृति का अलंकार रूप—जब किसी पात्र के शारीरिक गुणों के लिये प्रकृति के विविध उपादानों का चित्रण किया जाता है तब उसे प्रकृति का अलंकार रूप कहा जाता है। यहाँ पर प्रकृति साधन रूप में ही आती है सीता, राम और लक्ष्मण के सौन्दर्य को देख कर दर्शक सोच रहे हैं कि—

"कमल शुंड-सी भुजा मनोहर अरुण कमल को साधे।"
"हरी भरी-सी लता ललित अंचल में शोभा बाँधे।
गौरिक वसना झुकी हुई रख लज्जा गठरी काँधे॥"

यहाँ पर प्रकृति के विविध तत्वों का उपयोग राम-सीता के शारीरिक सौन्दर्य के दर्शन के लिये किया गया है।

4. प्रकृति का मानवीकरण रूप—जब कवि प्रकृति में प्राणों की प्रतिष्ठा करके उसे मानव रूप में संवेदनशील बना देता है तब उसे प्रकृति

का मानवीकरण रूप कहा जाता है। चित्रकूट में प्रकृति का यह रूप अनेकों जगहों पर देखने को मिलता है जैसे—

"ध्यान मग्न थे खग नीड़ों में, तरु थे कान लगाये।
नभ के नमन देखते नीचे अपनी दृष्टि गड़ाये॥"

यहाँ पर पक्षियों का ध्यान मग्न होना, वृक्षों का कान लगा कर सुनना आकाश का दृष्टि गड़ा कर नीचे देखना आदि ये सब प्रकृति के मानवीकरण के सुन्दर उदाहरण है।

5. प्रकृति का भावों की पृष्ठभूमि रूप—कवि जब प्रकृति को मानव की सहचरी के रूप में चित्रित करता है तब उसे प्रकृति का भावों की पृष्ठ भूमि रूप कहा जाता है। यहाँ पर कवि का लक्ष्य प्रकृति को अपने पात्र के भावों के अनुकूल दिखाना होता है। इससे सुन्दर वातावरण का निर्माण होता है। और पाठक को पात्र के भाव समझने में सरलता रहती है। क्रोध में लक्ष्मण प्रकृति को आधार बना कर अपने भाव व्यक्त करते है कि—

"वैतरिणी से गंगाजल की व्यर्थ सदा अभिलाषा।
पूरी क्यों हो तीक्ष्ण कंटकी से रसाल की आशा॥"

6. प्रकृति का बिंब ग्रहण रूप---जहाँ पर कवि प्रकृति के विविध उपादानों का ऐसा चित्रण करता है जिसे मानों पाठक स्वयं दर्शन कर रहा हो। वह प्रकृति का बिम्ब ग्रहण रूप कहलाता है जैसे—

झर-झर, कल-कल का निनाद सुन मन को रोक न पाते।
झरते हुए शैल - झरने के नीचे बैठ नहाते॥

इसमें एक पहाड़ी झरने का बिम्बात्मक चित्र प्रस्तुत है।

वर्तमान हिन्दी कविता में प्रकृति चित्रण के जितने भी रूप प्रचलित है कवि ने "चित्रकूट" में उन सब का प्रयोग किया है। "चित्रकूट" का आरम्भ और अन्त दोनों ही प्रकृति चित्रण से हुए है। इस प्रकार से हम देखते है कि "चित्रकूट" एक प्रकृति चित्रण से परिपूर्ण काव्य है।

प्रश्न—सिद्ध कीजिये कि "चित्रकूट" में आधुनिकता का पर्याप्त निदर्शन हुआ है ?"

उत्तर—"चित्रकूट की रचना आधुनिक काल में हुई है। चित्रकूट की कथा मूलतः रामायण की कथा है। जो अत्यन्त प्राचीन और लोक प्रसिद्ध है। काव्य के राम-सीता और लक्ष्मण त्रेतायुग के होते हुए भी आधुनिक युग के प्रतीत होते हैं। "चित्रकूट" में रामकथा को आधुनिक बनाने के लिये घटनाओं को नया मोड़ नहीं दिया गया है। बल्कि उसकी रचना नये रूप से की गयी है। यह व्याख्या करते समय कवि जाग्रत रहा है जिससे व्याख्या कहीं असम्भव या अकल्पनीय न बन जाय। चित्रकूट के केवल पुरुषोत्तम है जो अपनी पत्नी सीता से हँसी-मजाक भी कर लेते हैं। कोल-किरातों का आलिंगन करते हैं तथा उनके घरों में जाकर उपदेश भी देते है। यहाँ पर राम में ईश्वरता के स्थान पर मानव दिखाने का सफल प्रयास किया गया है। इसीलिए कवि का प्रमुख उद्देश्य आदर्श मानवतावादी विचारों का प्रचार-प्रसार करना है। आज का युग पुनरूत्थान का युग है जिसमें यह कहा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वर का अंश होता है। केवल उसे जाग्रत करके सचेत करने की आवश्यकता होती है। इसीलिए जब कोई वृद्ध राम को "चक्रवर्ती के पुत्र" कह कर स्वयं को उनके स्वागत के लिये असमर्थ बताता है तब उसे उत्तर मिलता है कि—

"स्वागतार्थ चाहिये बहुत कुछ—अरे ! कथन यह किसका ?
स्नेह लपेटा एक सुमन भी अलग भाव है उर का ॥"

प्राचीन काल में राजाओं के स्वागतार्थ जो तड़क-भड़क होती थी वह आज के युग में नहीं है। राम राजा के पुत्र है वह ऋषि मुनियों को प्रमाण करते हैं और आगे बढ़ कर कोल-किरातों का भी आलिंगन करते हैं। तथा उनके घरों में जाकर ऊँच-नीच न मानने का उपदेश देते है। यह आधुनिक हरिजनोद्धार के लक्षण है "चित्रकूट" के राम आधुनिक गाँधीवादी नेता की भाँति कहते हैं कि—

"दी अछूत संज्ञा कितनों को समझा उनको नीचा ।
कुल विशेष में मात्र जन्म से क्यों हो कोई ऊँचा ।।"

राम सर्वमनुष्य समभाव उपदेश देते हैं और उसी प्रकार का आचरण भी करते हैं। चित्रकूट के लक्ष्मण प्रतिदिन सीता के साथ नदी किनारे जाते है। और वहाँ से पानी लाकर पेड़ पौधों को सींचते हैं। मौका मिलने पर अपनी भाभी सीता के साथ हँसी-मजाक भी करते हैं। लक्ष्मण का यह रूप बिल्कुल नया है जो आधुनिक देवर-भाभी जैसा बन गया है। भाभी के प्रति लक्ष्मण का स्नेह व आदर बड़ा अनुपम है। इसी लिए वह अपनी माता सुमित्रा से कहते है कि—

"भाभी उधर रसोई करती, मैं सींचू फुलवारी ।
देख रही यह पुष्प-वाटिका भाभी को अति प्यारी ।।"

राम लक्ष्मण की तरह सीता का चरित्र भी बहुत आधुनिक है। वह एक गृहिणी की भाँति घर का सारा काम भी करती है और पत्नी के रूप में राम को प्रसन्न रखने का धर्म भी निभाती है। झोपड़ी के पास फुलवारी बनाने का काम भी सीता ही करती है वह वहाँ पर राजरानी नहीं है वह एक सामान्य गृहिणी हैं जो कोलिन और किरातिन से बड़े प्रेम से बाते करती है 'चित्रकूट' में आधुनिक युग की विचारधारा के अनुकूल प्रजातंत्र के विचार भी देखने को मिलते हैं। जब भरत और राम दोनों राज्य त्याग की बात करते है तब शत्रुघ्न कहते है कि—

"अवध प्रजा चुन लेगी अपना गणपति, राज्य करेगा ।
राजवंश का ही शासन हो, अब यह नहीं चलेगा ।।"

इस पर राम कहते है कि—

"हँसे राम—गणपति या नृप में भेद कहाँ है ?
मन दुर्बल तो सत्ता का मद छलता नहीं कहाँ है ?"

इसी प्रकार से राम से अकेले में मिल कर कैकेयी का अपना हृदय खोलना मनोवैज्ञानिक और आधुनिक पद्धति है। वन में आकर राज बहुओं का परस्पर हँसी मजाक करना स्वाभाविक प्रतीत होता है जो आधुनिक

स्त्रियों के सर्वथा अनुकूल है जो साहित्यिक दृष्टि से भी चित्रकूट की कथा आधुनिक है जो आधुनिक भाषा, शैली और आधुनिक युग के व्यक्तियों की रुचि के अनुकूल बनायी गयी है। इसमें गांधी युग का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसमें कवि ने मनोवैज्ञानिक स्थिति का भी दर्शन कराया है। 'चित्रकूट' की कैकेयी आज की शिक्षिता माता की भाँति कहती है कि—

"दोष किसी कुब्जा को क्यों दूं, वह था मेरा मांपन।
और आज भी हृदय खोल कर बोल रहा है मांपन ।।"

माता के लिये सन्तान से बढ़ कर कुछ भी नहीं होता है इस लिये कैकेयी का यह कथन सर्वथा उचित है। इस काव्य के अनेक स्थल आधुनिक समस्याओं का ही चित्रण करते हैं। इस प्रकार से हम कह सकते है कि चित्रकूट के पात्र प्राचीन होते हुए भी आधुनिक प्रतीत होते हैं।

प्रश्न—चित्रकूट की भाषा-शैली पर संक्षेप में एक निबन्ध लिखिये।

उत्तर—भाषा-भावों की अभिव्यक्ति का मूल आधार है इसी के द्वारा कवि अपनी व्यक्तिगत भावावनाओं और अनुभूतियों को सर्वजनहृय बनाता चित्रकूट के रचयिता श्री दुबे जी की भाषा खड़ी बोली है। विद्वानों ने खड़ी बोली शब्द के विभिन्न अर्थ बताये है। किसी ने खरी को शुद्ध कहा है किसी ने कर्कश या कठोर बताया है मुख्य रूप से खड़ी बोली के दो रूप है–(1) संस्कृत तत्सम शब्दावाली (2) उर्दू-पर्शियन आदि भाषाओं के शब्दों वाली। श्री रामेश्वर दयाल दुबे जी ने संस्कृत तत्सम शब्दों वाली भाषा को ही ग्रहण किया है। यह खड़ी बोली का अत्यन्त शुद्ध और प्रौढ़ रूप है। यह किसी भी प्रकार के भावों को अभिव्यक्त करने में पूर्ण रूप से समर्थ है। 'चित्रकूट' काव्य की भाषा-शैली की विशेषतायें निम्नलिखित है—

(1) शब्द-चुनाव—चित्रकूट में संस्कृत तत्सम और तदभव शब्दों की प्रचुरता है। कवि ने इसमें सरल शब्दों का ही प्रयोग किया है। संस्कृत के तत्सम शब्दों में प्रणति, श्रान्ति, निशा, समीरण, मेंचक, कच, अवगाहन, अधिवास, शैल-उपल, प्रत्येचा तथा विभा आदि शब्द है। इसमें तदभव

शब्दों का प्रयोग भी बहुलता से हुआ है लेकिन ये सरल और प्रचलित है। जैसे–चरणरज, अगवानी निर्मलता केलिप्रिय तथा घन-माली आदि। इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं पर कवि ने देशज शब्दों का भी प्रयोग किया है जैसे–ओटून-डासन, नीका, ठौर, निपट, झर-झर, कल-कल आदि। इस समस्त काव्य में कहीं पर भी विदेशी शब्दों का प्रयोग देखने को नहीं मिलता हैं।

(2) मुहावरों का प्रचुर-प्रयोग–'चित्रकूट' काव्य में मुहावरे प्रचुर रूप में विद्यमान है। जैसे–शीश उठाना, हाथ समेटना, घर में आग लगाना, आँखें मुँद जाना, आँख का पानी सूखना, कानों में मिसरी घोलना, पानी लगना, जी की जलन मिटाना, मुँह मोड़ना तथा रंग जमाना आदि। इन सभी मुहावरों का प्रयोग कवि ने बड़े ही समुचित ढंग से किया है। जैसे–

1. रह कर साथ करूँ कुछ सेवा, जी की जलन मिटाऊँ।
2. बीत रहे सोते दिन थे, चाँदी की सी रातें।
3. वन-वन मारे फिरे, आप मैं राज समाज सजाऊँ।
4. जो हो, आज भरत से रण में होगी दो-दो बातें।
5. इतने सुनते ही सीता की आँखें थी भर आई।

(3) पात्रानुकूलता–चित्रकूट की भाषा प्रसंगानुकूल विविध पात्रों के स्वभाव, रुचि और योग्यता के अनुकूल है। देश काल की परिस्थिति के अनुसार ही राम, सीता, लक्ष्मण कैकेयी आदि विभिन्न पात्र काव्य मंच पर अवतरित होते हैं। राम के स्वभाव में सर्वत्र गम्भीरता, सीता के स्वभाव में मृदुता और लक्ष्मण में उद्वतता एवं क्रोध और कैकेयी में पश्चाताप की भावना देखने को मिलती है। प्रथम और द्वितीय सर्ग की भाषा में स्थिरता है और तृतीय व चतुर्थ सर्ग की भाषा में व्यग्रता एवं विरह वेदना का आभास है। पात्र की व्यक्तिगत भिन्नता के कारण उनके कथनों में भाषा का अच्छा परिवर्तन देखने को मिलता है जैसे–

**राम का कथन–**

"दुष्कृति को अपना कर मानव पशु से नीचे गिरता।
सत्कृति द्वारा देवों से भी वह ऊपर है चढ़ता॥

**लक्ष्मण का कथन–**

"जो हो, कुशल यही, विशिखों की धार नहीं है कुंठित ।
निष्शंक जो राज्य चाहते, होगे वे ही कुंठित ।।

**सीता का कथन–**

"जिसमें मात्र दोष ही होवे, ऐसा मनुज न होता ।
उसके भीतर ही भीतर कोई गुण, छिपा-छिपा है सोता ।।"

इस प्रकार से हम देखते है कि भाषा व्यक्ति के स्वभाव और गुणों को दर्शान का उत्तम साधन है ।

(4) अलंकार-प्रयोग–चित्रकूट में शव्दालंकार और अर्थालंकार दोनों का ही बहुत प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है । ये सर्वत्र स्वाभाविक बनकर आये हैं । जैसे—

1. चला समूह उमगता वढ़ता हर्ष-हिलोर उदधि-सा । (उपमा)
2. झुके कमल अग्र भाग पर मानों जल कण मोती । (उत्प्रेक्षा)
3. स्नेह समीकरण में हिल-डुलकर जीव सुमन खिलेगा । (रूपक)
4. खेल खेलते जिनसे घन है लिपट झपट मनमाने । (मानवीकरण)
5. सबका स्नेह मिलेगा मुझको, जीवन दीप जलेगा । (श्लेष)
6. झर-झर, कल-कल, का निनाद सुन मन को रोक न पाते ।
(अनुप्रास)

इस प्रकार से काव्य में अनेकों उदाहरण देखने को मिलते हैं जो काव्य को सुन्दर और सशक्त बनाते हैं ।

(5) सूक्तियाँ– सूक्तियाँ अनुभव का निचोड़ होती है इनके प्रयोग से काव्य बहुत आकर्षक और प्रभावशाली बन जाता है । चित्रकूट काव्य में जगह-जगह पर सुन्दर सूक्तियों का प्रयोग हुआ है । जैसे–

1. मौन किन्तु गतिशील रही है सदा काल की धारा ।
2. भारी दुख का बोझ हँसी में अनजाने वह जाता ।
3. जितनी कम इच्छायें जिसकी, सुखी मनुज वह उतना ।
4. दुख-सुख का क्रम तो जीवन में चलता ही रहता है ।

5. जैसा होगा भाव हृदय का वैसे भाव बनेगे।

इस प्रकार से भाषा सर्वत्र व्याकरण सम्मत और प्रवाहिता लिये हुए है जिससे पाठक को कहीं पर भी कोई कठिनाई नहीं प्रतीत होती है।

(6) शैली–चित्रकूट की शैली प्रबन्धात्मक है इसमें कथा-प्रवाह का आदि से अन्त तक विस्तार रहता है। इस शैली की निम्नलिखित विशेषतायें होती है—

(1) प्रवाहमयता–सुसंगठित भाषा होने के कारण "चित्रकूट" की काव्य-शैली प्रवाहमय बन गयी है। कहीं-कहीं पर इसके प्रवाह में तीव्रता होती है और कहीं पर स्थिरता होती है। चतुर्थ सर्ग के प्रवाह में तीव्रता आ गयी है और द्वितीय सर्ग के प्रवाह में मन्थरता आ गयी है।

(2) संवादात्मकता–इसमें संवादों का बहुत महत्व होता है स्वाभाविकता, सजीवता, गतिशीलता तथा रसात्मकता आदि इसके विशेष गुण होते है। संवादों में हास्य और विनोदवृत्ति के समावेश से अधिक रसात्मकता आ जाती है। "चित्रकूट" में सीता-राम संवाद, लक्ष्मण सुमित्रा संवाद आदि अनेक संवादात्मक प्रसंग आये है जिसमें हास्य तथा विनोदवृत्ति का भी समावेश हुआ है जैसे–

**राम**—

"शाल विशाल सुहाते कितने ऊपर हाथ उठाये।
लिपट - लिपट वल्लरियों से शुचि श्रृंगार सजाये।।"

**सीता**—"एक दूसरे से शोभित हैं दोनों–सीता बोली।"

**लक्ष्मण**—"भाभी अपनी बात कह रहीं–सौमित्र ठिठोली।।"

इस प्रकार के अनेकों उदाहरण इस काव्य में देखने को मिलते हैं।

(3) चित्रात्मकता–चित्रकूट में स्थान-स्थान को मिलते हैं। इन चित्रों के कारण सूक्ष्म भावों को समझने में सरलता रहती है।

प्रश्न–चित्रकूट के उद्देश्य पर संक्षेप में प्रकाश डालिये ?

उत्तर—"चित्रकूट में कवि ने पारिवारिक जीवन का ही प्रतिदान किया है। उनके राम भगवान न होकर मानव है जो पूर्ण मानवता के

अवतार है। उनकी पत्नी सीता वन में रह कर भी इतनी खुश है जैसे वह राजमहल में रह रही हो। उनके भाई लक्ष्मण भी वनवासी जीवन से बहुत संतुष्ट हैं। इनके माध्यम से कवि ने बड़े भाई की महत्ता पर प्रकाश डाला है। चित्रकूट काव्य का उद्देश्य निम्नलिखित है–

(1) स्वावलम्बी जीवन—दुबे जी स्वावलम्बी जीवन के प्रखर हिमायती है। 'चित्रकूट' काव्य में राम-सीता-लक्ष्मण राजभवन के सुख भूलकर बड़ी खुशी से वनवासी जीवन को अपना लेते हैं। उनका कहना है कि मनुष्य को जो कुछ भी उपलब्ध हो। उसी में उसको संतोष करना चाहिए और खुश रहना चाहिए। यही स्वावलम्वी जीवन का आधार है। इसीलिये लक्ष्मण कहते हैं कि–

"भाभी श्रम की विपुल महत्ता यहाँ पहुंच कर जानी।
उचित समझ ले, जितनी जल्दी, स्वेद स्वास्थ्य का दानी।।"

इससे उनके जीवन में उत्साह का दर्शन होता है। वन में रह कर सीता बहुत सुखी है इसलिये वह अपनी सास कौशल्या से कहती है कि–

"आर्यपुत्र का साथ और देवर की सच्ची निष्ठा।
मन को कर परिपूर्ण रही, तब दुख की कहाँ प्रतिष्ठा ?"

सीता कोलिन और किरातिनों के साथ भी बहुत सुख से बातें करती हैं और उनको राजभवन के लड़ाई झगड़ों की बातों को बताकर उनको सुखी बताती है। इससे उनको भी बहुत सुख मिलता है। इस प्रकार से सीता बहुत स्वावलम्बन के साथ अपना जीवन व्यतीत करती है।

(2) पारस्परिक सदभाव और विश्वास–कवि ने राम के द्वारा यह जीवनदर्शन प्रस्तुत किया है। जब लक्ष्मण को भरत के सेना सहित आगमन का समाचार मिलता है तब वह आशंकित होकर अपना रोष प्रकट करते हैं। लेकिन इस समाचार से राम और सीता को सन्देह नहीं होता है। क्योंकि भरत के प्रति उनका अटूट विश्वास है। इसलिये वह लक्ष्मण से कहते हैं कि–

"मेरा ध्रुव विश्वास स्नेह ही उसे खींच है लाया।
चारु चरित का चित्र खीचने चित्रकूट है आया।।"

लक्ष्मण राम की बात को बड़ी सरलता से मान लेते हैं। और जब भरत आकर राम कें चरणों को पकड़ लेते हैं तब राम की बात यथार्थ हो जाती है। यहाँ पर परिवार के लोगों में ऐसा विश्वास और सदभाव होता है। वही पर और समाज सुखी रहता है।

(3) परिवार-प्रेम—चित्रकूट में राम का सारा परिवार एकत्र हो जाता है जिससे सबके मन में प्रेम और शौक के भाव लहराते हैं। कैकेयी के कारण राम-सीता लक्ष्मण को वनवास भोगना पड़ रहा है और उसी के कारण पिता दशरथ की मृत्यु हो गयी फिर भी किसी के मम में कैकेयी के प्रति कोई दुर्भाव नहीं है। उसके पुत्र से भी कोई घृणा नहीं करता है। राम भरत को प्राणों से अधिक चाहते है और राज्य संचालन के लिए भरत को ही श्रेष्ठ बताते हैं। वह परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को यथायोग्य वन्दन और आलिंगन करके सम्मान और स्नेह देते हैं। राम स्वयं भी सबकी देख भाल करते हैं और सीता से भी कहते हैं कि—

"बोले राम-ध्यान रखना हो मिलन हर्ष से कोई।
माताओं बहनों को होने पाये कष्ट न कोई।"

इस प्रकार से जितने दिन भी अयोध्यावासी चित्रकूट में रहे। वह सब बड़े सुख और स्नेह से रहे।

(4) कैकेयी का दोष-प्रक्षालन—कैकेयी के दोष-प्रक्षालन के लिये ही कवि ने 'चित्रकूट' की रचना की है। रामायण में कैकेयी को बहुत बदनाम किया गया है। लेकिन यहाँ पर कैकेयी एक माता के रूप में अपना बचाव करती है। वह राम और भरत को समान रूप से देखती है। उसे भरत जैसे पुत्र की माँ होने का बहुत अभिमान है। वह राम के बहुत आग्रह करने पर अपने मन की बात कहती है वह अपना दोष स्वीकार करती हुई कहती है कि—

"घटी घोर घटना रघुकुल में, अभी - अभी जो भारी।
उसका मैं हूँ मूल, सभी पर डाली विपदा सारी॥"

इस बात से कैकेयी का आधा दोष दूर हो जाता है। अपने दोष का प्रक्षालन भी कर लेती है। यह देख कर राम रो पड़ते हैं और कहते हैं कि–

"करे न कोई माँ छोटा मन, माँ से बड़ा न कोई।
जिसके अँचल में यह संसृति शिशु बन कर है सोई॥"

(5) जीवन का आदर्श–चित्रकूट में कवि ने राम के जीवन का जो आदर्श प्रस्तुत किया है वही भारतीय संस्कृति का मूल जीवन दर्शन है। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को परिश्रमी और स्वावलम्बी बनना चाहिए और परिवार के सुख के लिये अपना स्वार्थ त्याग करना चाहिए। राम के जीवन लक्ष्य है कि–त्याग का आदर्श, सर्वत्र सुख शान्ति की स्थापना, स्वार्थ के स्थान पर परामर्थवृत्ति, मानवमात्र की सेवा तथा पृथ्वी को ही अपना कुटुम्ब मानना। "चित्रकूट" में कवि ने इसी उद्देश्य को सिद्ध किया है। "चित्रकूट" का प्रत्येक पात्र अपना कर्तव्य पालन कर रहा है। सभी अयोध्यावासी चाहते है कि राम अयोध्या लौट चले। लेकिन पिता की आज्ञा भंग होने से शील और मर्यादा के भंग होने का भय समझ जाने पर सब शाँति से लौट जाते हैं। मानव जीवन कर्म के लिये है और कर्म के लिये त्याग अनिवार्य है। क्योंकि त्याग के बिना कोई भी काम सफल नहीं हो सकता है। यही भारतीय संस्कृत्ति का मूल दर्शन हैं।

---